



# Anvee Devi Majhi

22 Feb 2026

11:23 AM

Baripada

Model: Web-KundliPhal

Order No: 121521301

Astrology is a science which deals in the effects of planets on living beings. To predict its effects, one has to calculate the position of planets & their strengths. Calculations prepared in this horoscope are very accurate and true apparent longitudes have been used for all the planets. The Ayanamsa adopted is Chitrapaksha Ayanamsa, unless & until other ayanamsa is asked for.

Computer Horoscopes are based mainly on Parasara system. However, there is a fine blend of Tajak system, Gemini system, K.P. system, Horary (Prasna Marg) system & Western system in the astrological calculations. Predictions are based on various ancient texts like Brihat Parasara Hora, Mansagari, Saravali, Jataka Bharanam, Brihat Jatak, Phala Deepika, Jataka Parijat and finally on own experiences to the extent of fructification of astrological rules. However, using astrology we can only indicate the future, it is only Brahma (the creator of universe) who can exactly tell what will happen.

This horoscope is based on Date, Time and Place of birth provided by the native and we do not stand any responsibility for the accuracy of this data. Astrological calculations & predictions are all based on this basic input given by the native.

Predictions given in the horoscope are indicative tendencies and likelihood and not strict guidelines for action by native. User is suggested to treat these predictions & suggestion with due care and caution. The horoscope and the information given in the following pages shall not be made a cause of legal dispute for any actual or consequential loss to the native. No cause of action for any damages or otherwise can therefore be entertained.

ଲିଙ୍ଗ \_\_\_\_\_ : ସ୍ତ୍ରୀଲିଙ୍ଗ  
 ଜନ୍ମ ତିଥି \_\_\_\_\_ : **22/02/2026**  
 ଦିନ \_\_\_\_\_ : ରବିବାର  
 ଜନ୍ମ ସମୟ \_\_\_\_\_ : **11:23:00** ଘଣ୍ଟା  
 ଇଷ୍ଟ \_\_\_\_\_ : **13:03:40** ଦଣ୍ଡ  
 ସ୍ଥାନ \_\_\_\_\_ : **Baripada**  
 ରାଜ୍ୟ \_\_\_\_\_ : **Odisha**  
 ଦେଶ \_\_\_\_\_ : **India**

ଅକ୍ଷାଂଶ \_\_\_\_\_ : **21:52:00** ଉତ୍ତର  
 ରେଖାଂଶ \_\_\_\_\_ : **86:48:00** ପୂର୍ବ  
 ମଧ୍ୟ ରେଖାଂଶ \_\_\_\_\_ : **82:30:00** ପୂର୍ବ  
 ସ୍ଥାନିକ ସଂସ୍କାର \_\_\_\_\_ : **00:17:12** ଘଣ୍ଟା  
 ଗ୍ରୀଷ୍ମ ସଂସ୍କାର \_\_\_\_\_ : **00:00:00** ଘଣ୍ଟା  
 ସ୍ଥାନିୟ ସମୟ \_\_\_\_\_ : **11:40:12** ଘଣ୍ଟା  
 ବେଳାନ୍ତର \_\_\_\_\_ : **-00:13:30** ଘଣ୍ଟା  
 ସାତ୍ତ୍ୱିକ କାଳ \_\_\_\_\_ : **21:48:49** ଘଣ୍ଟା  
 ସୂର୍ଯ୍ୟ ଉଦୟ \_\_\_\_\_ : **06:09:31** ଘଣ୍ଟା  
 ସୂର୍ଯ୍ୟ ଅସ୍ତ \_\_\_\_\_ : **17:43:22** ଘଣ୍ଟା  
 ଦିନମାନ \_\_\_\_\_ : **11:33:50** ଘଣ୍ଟା  
 ସୂର୍ଯ୍ୟଙ୍କ ଛିତି ଆୟନ \_\_\_\_\_ : ଉତ୍ତରାୟନ  
 ସୂର୍ଯ୍ୟଙ୍କ ଛିତି ଗୋଲ \_\_\_\_\_ : ଦକ୍ଷିଣ  
 ରତ୍ନ \_\_\_\_\_ : ବସନ୍ତ  
 ରବିଙ୍କ ଅଂଶ \_\_\_\_\_ : **09:23:23** କୁମ୍ଭ  
 ଲଗ୍ନ ର ଅଂଶ \_\_\_\_\_ : **13:54:53** ବୃଷ

**ଅବକହଡ଼ା ଚକ୍ର**

ଲଗ୍ନ-ଲଗ୍ନାସିପତି \_\_\_\_\_ : ବୃଷ - ଶୁକ୍ର  
 ରାଶି-ସ୍ୱାମୀ \_\_\_\_\_ : ମେଷ - ମଙ୍ଗଳ  
 ନକ୍ଷତ୍ର-ଚରଣ \_\_\_\_\_ : ଅଶ୍ୱିନୀ - 3  
 ନକ୍ଷତ୍ର ସ୍ୱାମୀ \_\_\_\_\_ : କେତୁ  
 ଘୋର \_\_\_\_\_ : ଶୁକ୍ର  
 କରଣ \_\_\_\_\_ : କୌଲବ  
 ଗଣ \_\_\_\_\_ : ଦେବ  
 ଘୋରି \_\_\_\_\_ : ଅଶ୍ୱ  
 ନାଡ଼ୀ \_\_\_\_\_ : ଆଦ୍ୟ  
 ବର୍ଣ୍ଣ \_\_\_\_\_ : କ୍ଷତ୍ରିୟ  
 ବର୍ଣ୍ୟ \_\_\_\_\_ : ଚତୁଷ୍ପଦ  
 ବର୍ଣ \_\_\_\_\_ : ସିଂହ  
 ପୁଞ୍ଜ \_\_\_\_\_ : ପୂର୍ବ  
 ହଂସକ \_\_\_\_\_ : ଅଗ୍ନି  
 ଜନ୍ମ ନାମାକ୍ଷର \_\_\_\_\_ : ଡୋ-ଡୋଖୀ  
 ପାୟ ରାଶି-ନକ୍ଷତ୍ର \_\_\_\_\_ : ଲୌହ - ସ୍ୱର୍ଣ୍ଣ  
 ସୂର୍ଯ୍ୟ ରାଶି ପାଖାତ୍ୟ \_\_\_\_\_ : ମୀନ

## ପଞ୍ଚାଙ୍ଗ

ଜେଜେ ବାପାଙ୍କ ନାମ \_\_\_\_\_ :  
 ପିତାଙ୍କ ନାମ \_\_\_\_\_ :  
 ମାତାଙ୍କ ନାମ \_\_\_\_\_ :  
 ଜାତି \_\_\_\_\_ :  
 ଗୋତ୍ର \_\_\_\_\_ :

| କେଲେଣ୍ଡର     | ବର୍ଷ         | ମାସ      | ତିଥୀ/ପୁରିଣେ |
|--------------|--------------|----------|-------------|
| ରାହୁୟ        | ଶକ : 1947    | ଫାଲ୍‌ଗୁନ | 3           |
| ପଞ୍ଚାବି      | ସମ୍ବତ : 2082 | ଫାଲ୍‌ଗୁନ | 11          |
| ବଙ୍ଗାଳି      | ସନ୍ : 1432   | ଫାଲ୍‌ଗୁନ | 9           |
| ତାମିଲ        | ସମ୍ବତ : 2082 | ମାସି     | 10          |
| କେରଳ         | କୋଲମ : 1201  | କୁମ୍ଭମ୍  | 10          |
| ନେପାଳି       | ସମ୍ବତ : 2082 | ଫାଲ୍‌ଗୁନ | 10          |
| ବୈତ୍ତାଦି     | ସମ୍ବତ : 2082 | ଫାଲ୍‌ଗୁନ | ଶୁକ୍ଳ 5     |
| କାର୍ତ୍ତିକାଦି | ସମ୍ବତ : 2082 | ଫାଲ୍‌ଗୁନ | ଶୁକ୍ଳ 5     |

### ପଞ୍ଚାଙ୍ଗ

ପୁର୍ବୋଦୟ କାଳୀନ ତିଥୀ \_\_\_\_\_ : 5  
 ତିଥୀ ସମାପ୍ତି କାଳ \_\_\_\_\_ : 11:10:08  
 ଜନ୍ମତିଥୀ \_\_\_\_\_ : 6  
 ପୁର୍ବୋଦୟ କାଳୀନ ନକ୍ଷତ୍ର \_\_\_\_\_ : ଅଶ୍ୱିନୀ  
 ନକ୍ଷତ୍ର ସମାପ୍ତି କାଳ \_\_\_\_\_ : 17:54:29 ଘଣ୍ଟା  
 ଜନ୍ମ ଯୋଗ \_\_\_\_\_ : ଅଶ୍ୱିନୀ  
 ପୁର୍ବୋଦୟ କାଳୀନ ଯୋଗ \_\_\_\_\_ : ଶୁକ୍ଳ  
 ଯୋଗ ସମାପ୍ତି କାଳ \_\_\_\_\_ : 13:08:27 ଘଣ୍ଟା  
 ଜନ୍ମ ଯୋଗ \_\_\_\_\_ : ଶୁକ୍ଳ  
 ପୁର୍ବୋଦୟ କାଳୀନ କରଣ \_\_\_\_\_ : ବାଳବ  
 କରଣ ସମାପ୍ତି କାଳ \_\_\_\_\_ : 11:10:08 ଘଣ୍ଟା  
 ଜନ୍ମ କରଣ \_\_\_\_\_ : କୌଲବ  
 ଭୟତ \_\_\_\_\_ : 40:40:04  
 ଭଞ୍ଜୋଗ \_\_\_\_\_ : 56:58:47  
 ଭୋଗ୍ୟ ବଶା କାଳ \_\_\_\_\_ : କେତୁ 2 ବର୍ଷ 0 ମାସ 3 ଦିନ

### ଘାତ ଚକ୍ର

ମାସ \_\_\_\_\_ : କାର୍ତ୍ତିକ  
 ତିଥୀ \_\_\_\_\_ : 1-6-11  
 ଦିନ \_\_\_\_\_ : ରବିବାର  
 ନକ୍ଷତ୍ର \_\_\_\_\_ : ମଘା  
 ଘୋର \_\_\_\_\_ : ବିଷକୁମ୍ଭ  
 କରଣ \_\_\_\_\_ : ବବ  
 ପ୍ରହର \_\_\_\_\_ : 1  
 ବର୍ଗ \_\_\_\_\_ : ମୃଗ  
 ଲଗ୍ନ \_\_\_\_\_ : ମେଷ  
 ସୂର୍ଯ୍ୟ \_\_\_\_\_ : କର୍କଟ  
 ଚନ୍ଦ୍ର \_\_\_\_\_ : ମେଷ  
 ମଙ୍ଗଳ \_\_\_\_\_ : ସିଂହ  
 ବୁଧ \_\_\_\_\_ : ବୃଷ  
 ଗୁରୁ \_\_\_\_\_ : କନ୍ୟା  
 ଶୁକ୍ର \_\_\_\_\_ : ତୁଳା  
 ଶନି \_\_\_\_\_ : ମିଥୁନ  
 ରାହୁ \_\_\_\_\_ : ବିଛା



# ଲଗ୍ନ ଜୁଷ୍ଟିଫିକାସନ୍ ଦିନ

ଲଗ୍ନ ଲଗ୍ନ

|    |   |      |    |
|----|---|------|----|
| ଶ  | ବ | ଲଗ୍ନ | ରା |
| ଭା | ସ |      |    |
| ମ  |   |      | କେ |
|    |   |      |    |

ଲଗ୍ନ ଲଗ୍ନ

|      |   |   |    |
|------|---|---|----|
| ଲଗ୍ନ | ବ | ଶ | ଭା |
| ଭା   |   | ସ | କେ |
| କେ   |   |   | ମ  |
|      |   |   |    |

ବିଂଶୋତ୍ତରୀ  
କେତୁ 2ବର୍ଷ 0ମାସ 3ଦିନ  
କେତୁ

22/02/2026

26/02/2141

|         |            |
|---------|------------|
| କେତୁ    | 26/02/2028 |
| ଶୁକ୍ର   | 26/02/2048 |
| ସୂର୍ଯ୍ୟ | 25/02/2054 |
| ଚନ୍ଦ୍ର  | 26/02/2064 |
| ମଙ୍ଗଳ   | 26/02/2071 |
| ରାହୁ    | 25/02/2089 |
| ଗୁରୁ    | 26/02/2105 |
| ଶନି     | 27/02/2124 |
| ବୁଧ     | 26/02/2141 |

ଘୋଷିନୀ

ଭ୍ରାମରୀ 1ବର୍ଷ 1ମାସ 23ଦିନ

ଭ୍ରାମରୀ

22/02/2026

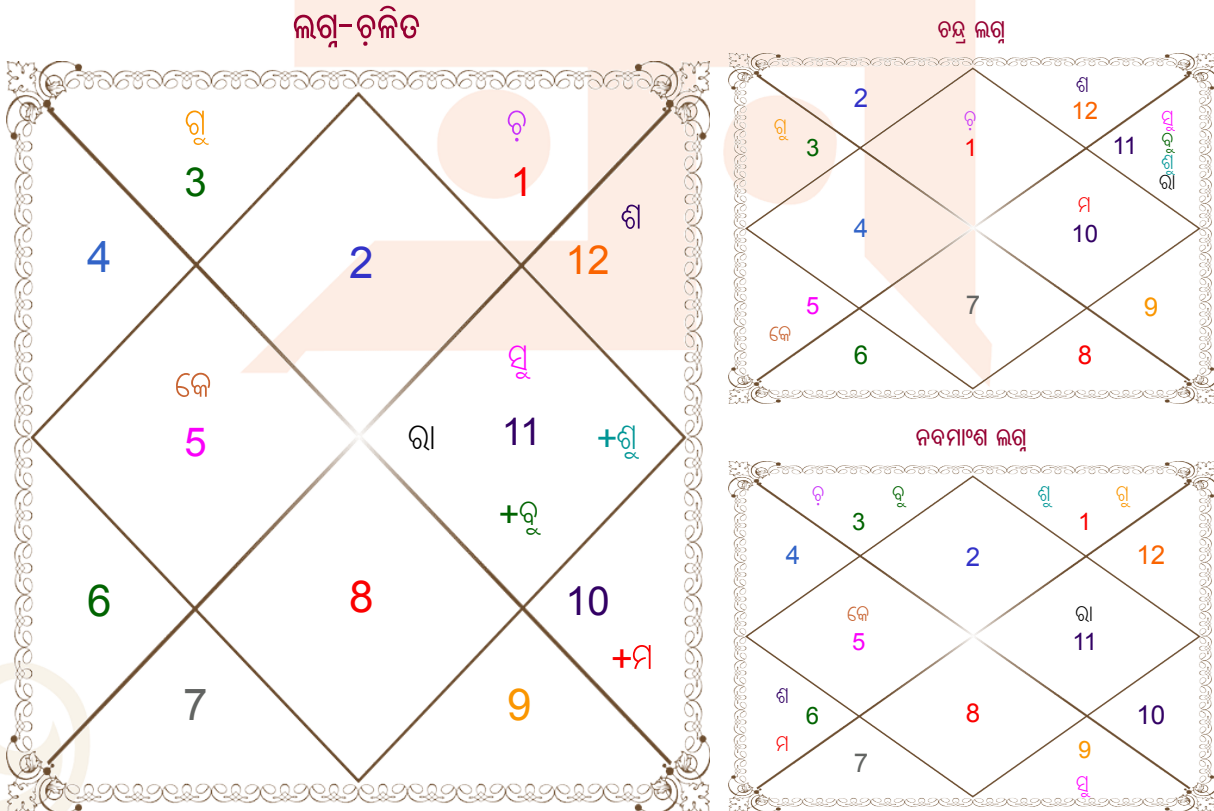
17/04/2027

|         |            |
|---------|------------|
|         | 00/00/0000 |
|         | 00/00/0000 |
|         | 00/00/0000 |
|         | 22/02/2026 |
| ସଞ୍ଜା   | 17/08/2026 |
| ମଙ୍ଗଳ   | 26/09/2026 |
| ପିଙ୍ଗଳା | 17/12/2026 |
| ଧାନ୍ୟା  | 17/04/2027 |

## ଗ୍ରହ ସଙ୍କତ୍ୟା ତାହାର କ୍ଷିତି

| ଗ୍ରହ    | ବ | ଅ | ରାଶି  | ଅଂଶ      | ଗତି       | ନକ୍ଷତ୍ର     | ପଦ | ମଗ. | ରା      | ନ       | ଅଂଶ    | କ୍ଷିତି     |
|---------|---|---|-------|----------|-----------|-------------|----|-----|---------|---------|--------|------------|
| ଲଗ୍ନ    |   |   | ବୃଷ   | 13:54:53 | 365:17:22 | ରୋହିଣୀ      | 2  | 4   | ଶୁକ୍ର   | ଚନ୍ଦ୍ର  | ଗୁରୁ   | ---        |
| ସୂର୍ଯ୍ୟ |   |   | କୁମ୍ଭ | 09:23:23 | 01:00:27  | ଶତଭିଷା      | 1  | 24  | ଶନି     | ରାହୁ    | ଗୁରୁ   | ଶତ୍ରୁ ରାଶି |
| ଚନ୍ଦ୍ର  |   |   | ମେଷ   | 09:30:23 | 14:03:48  | ଅଶ୍ୱିନୀ     | 3  | 1   | ମଙ୍ଗଳ   | କେତୁ    | ଶନି    | ସମ ରାଶି    |
| ମଙ୍ଗଳ   | ଅ |   | ମକର   | 29:11:51 | 00:47:16  | ଧନିଷ୍ଠା     | 2  | 23  | ଶନି     | ମଙ୍ଗଳ   | ଶନି    | ଉଚ୍ଚ ରାଶି  |
| ବୁଧ     |   |   | କୁମ୍ଭ | 27:00:55 | 00:38:48  | ପୁ.ରାହୁପଦ   | 3  | 25  | ଶନି     | ଗୁରୁ    | ଶୁକ୍ର  | ସମ ରାଶି    |
| ଗୁରୁ    | ବ |   | ମିଥୁନ | 21:19:42 | 00:03:17  | ପୂର୍ଣ୍ଣବସୁ  | 1  | 7   | ବୁଧ     | ଗୁରୁ    | ଗୁରୁ   | ଶତ୍ରୁ ରାଶି |
| ଶୁକ୍ର   |   |   | କୁମ୍ଭ | 20:33:37 | 01:14:58  | ପୁ.ରାହୁପଦ   | 1  | 25  | ଶନି     | ଗୁରୁ    | ଗୁରୁ   | ମିତ୍ର ରାଶି |
| ଶନି     |   |   | ମୀନ   | 06:42:22 | 00:06:56  | ଉ.ରାହୁପଦ    | 2  | 26  | ଗୁରୁ    | ଶନି     | ବୁଧ    | ସମ ରାଶି    |
| ରାହୁ    |   |   | କୁମ୍ଭ | 14:44:54 | 00:00:36  | ଶତଭିଷା      | 3  | 24  | ଶନି     | ରାହୁ    | କେତୁ   | ମିତ୍ର ରାଶି |
| କେତୁ    |   |   | ସିଂହ  | 14:44:54 | 00:00:36  | ପୁ.ମଙ୍ଗଳୁନୀ | 1  | 11  | ସୂର୍ଯ୍ୟ | ଶୁକ୍ର   | ଶୁକ୍ର  | ଶତ୍ରୁ ରାଶି |
| ପୁରେ.   |   |   | ବୃଷ   | 03:22:52 | 00:00:57  | କୃତ୍ତିକା    | 3  | 3   | ଶୁକ୍ର   | ସୂର୍ଯ୍ୟ | ଶନି    | ---        |
| ନେପ.    |   |   | ମୀନ   | 06:34:53 | 00:02:04  | ଉ.ରାହୁପଦ    | 1  | 26  | ଗୁରୁ    | ଶନି     | ବୁଧ    | ---        |
| ପୁଟୋ    |   |   | ମକର   | 10:07:14 | 00:01:43  | ଶ୍ରବଣା      | 1  | 22  | ଶନି     | ଚନ୍ଦ୍ର  | ଚନ୍ଦ୍ର | ---        |
| ଦଶମ     |   |   | କୁମ୍ଭ | 00:41:57 | --        | ଧନିଷ୍ଠା     | -- | 23  | ଶନି     | ମଙ୍ଗଳ   | ବୁଧ    | --         |

ବ - ବକ୍ରୀ ସ - କ୍ଷିର  
 ଅ - ଅକ୍ଷ ପୁ - ପୂର୍ଣ୍ଣ ଅକ୍ଷ  
 ରାହୁ : ସଙ୍କ  
 ବିପ୍ରସ ଅୟନାଂଶ : 24:13:27



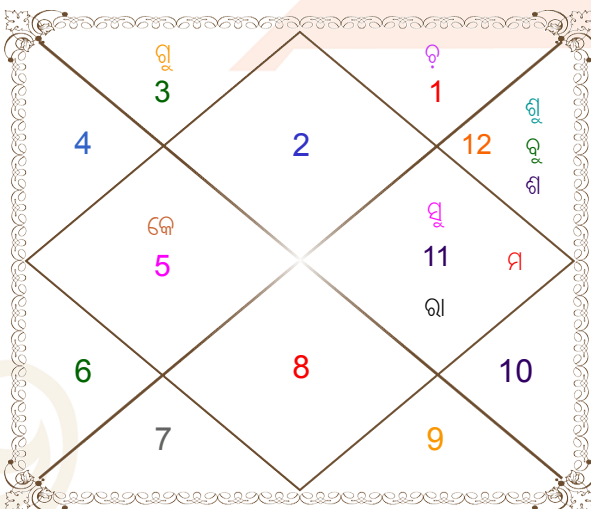
## ଚଳିତ ତଥା ନିରୟଣ ଭାବ ଚଳିତ

| ଚଳିତ ଅଂଶ |                |                |     | ନିରୟଣ ଭାବ ଚଳିତ |          |  |  |
|----------|----------------|----------------|-----|----------------|----------|--|--|
| ଭାବ      | ଭାବ ସନ୍ଧି      | ଭାବ ମଧ୍ୟ       | ଭାବ | ରାଶି           | ଅଂଶ      |  |  |
| 1        | ମେଷ 26:42:43   | ବୃଷ 13:54:53   | 1   | ବୃଷ            | 13:54:53 |  |  |
| 2        | ବୃଷ 26:42:43   | ମିଥୁନ 09:30:34 | 2   | ମିଥୁନ          | 09:19:47 |  |  |
| 3        | ମିଥୁନ 22:18:25 | କର୍କଟ 05:06:16 | 3   | କର୍କଟ          | 03:46:34 |  |  |
| 4        | କର୍କଟ 17:54:06 | ସିଂହ 00:41:57  | 4   | ସିଂହ           | 00:41:57 |  |  |
| 5        | ସିଂହ 17:54:06  | କନ୍ୟା 05:06:16 | 5   | କନ୍ୟା          | 02:32:44 |  |  |
| 6        | କନ୍ୟା 22:18:25 | ତୁଳା 09:30:34  | 6   | ତୁଳା           | 08:34:32 |  |  |
| 7        | ତୁଳା 26:42:43  | ବିଛା 13:54:53  | 7   | ବିଛା           | 13:54:53 |  |  |
| 8        | ବିଛା 26:42:43  | ଧନୁ 09:30:34   | 8   | ଧନୁ            | 09:19:47 |  |  |
| 9        | ଧନୁ 22:18:25   | ମକର 05:06:16   | 9   | ମକର            | 03:46:34 |  |  |
| 10       | ମକର 17:54:06   | କୁମ୍ଭ 00:41:57 | 10  | କୁମ୍ଭ          | 00:41:57 |  |  |
| 11       | କୁମ୍ଭ 17:54:06 | ମୀନ 05:06:16   | 11  | ମୀନ            | 02:32:44 |  |  |
| 12       | ମୀନ 22:18:25   | ମେଷ 09:30:34   | 12  | ମେଷ            | 08:34:32 |  |  |

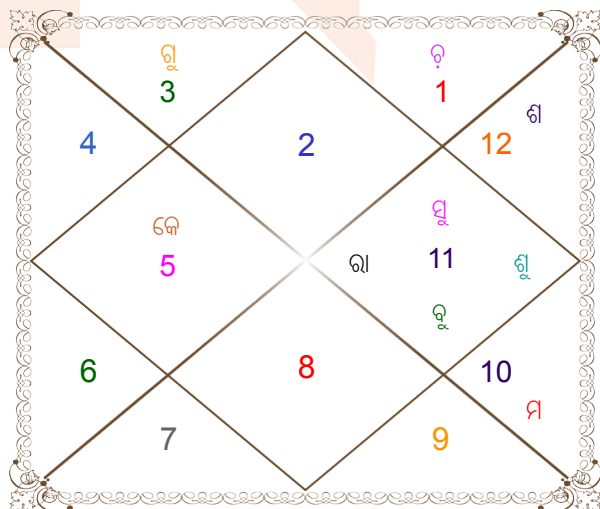
### ତାରା ଚକ୍ର

| ଜନ୍ମ    | ସଦ           | ବିପଦ        | କ୍ଷେମ  | ପ୍ରତ୍ୟାରି | ସାଧକ    | ବନ୍ଧ       | ମିତ୍ର     | ଅତିମିତ୍ର |
|---------|--------------|-------------|--------|-----------|---------|------------|-----------|----------|
| ଅଶ୍ୱିନୀ | ଭରଣୀ         | କୃତ୍ତିକା    | ରୋହିଣୀ | ମୃଗଶିରା   | ଆର୍ଦ୍ରା | ପୁନର୍ବସୁ   | ପୁଷ୍ୟ     | ଅଶ୍ଳେଷା  |
| ମଘା     | ପୁ.ଫାଲ୍‌ଗୁନୀ | ଉ.ଫାଲ୍‌ଗୁନୀ | ହସ୍ତ   | ଚିତ୍ରା    | ସ୍ୱାତି  | ବିଶାଖା     | ଅନୁରାଧା   | ଜ୍ୟେଷ୍ଠା |
| ମୂଳା    | ପୂର୍ବାଷାଢ଼ା  | ଉତ୍ତରାଷାଢ଼ା | ଶ୍ରବଣା | ଧନିଷ୍ଠା   | ଶତଭିଷା  | ପୁ.ଭାଦ୍ରପଦ | ଉ.ଭାଦ୍ରପଦ | ରେବତୀ    |

### ଚଳିତ ଲଗ୍ନ



### ଭାବ ଲଗ୍ନ



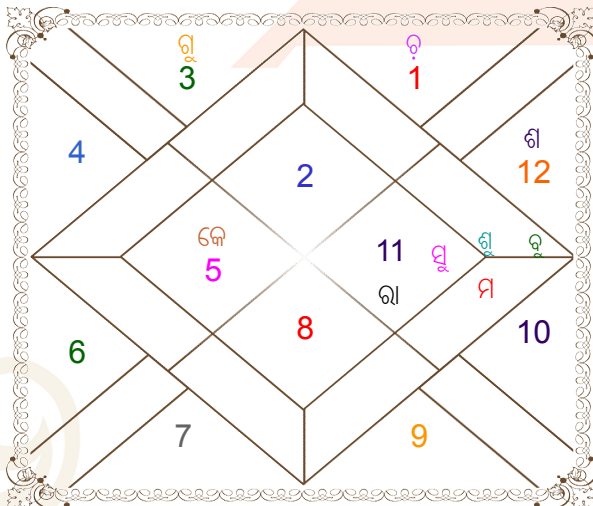
## କାରକ ଅବସ୍ଥା ରଶ୍ମି

| ଗ୍ରହ       | ----- କାରକ ----- |        |        | ----- ଅବସ୍ଥା ----- |            |              | ରଶ୍ମି | ଗ୍ରହ ବଳ |
|------------|------------------|--------|--------|--------------------|------------|--------------|-------|---------|
|            | ଚର               | କ୍ଷିର  | ବାଳାଦି | ଦୀପ୍ତାଦି           | ଶୟନାଦ      |              |       |         |
| ସୂର୍ଯ୍ୟ    | ଜ୍ଞାତି           | ପିତୃ   | କୁମାର  | ଖଳ                 | ପ୍ରକାଶ     | 6.63         | 73 %  |         |
| ଚନ୍ଦ୍ର     | ପୁତ୍ର            | ମାତୃ   | କୁମାର  | ଶାନ୍ତ              | ନୃତ୍ୟଲିଖ୍ୟ | 9.39         | 18 %  |         |
| ମଙ୍ଗଳ      | ଆତ୍ମା            | ଭ୍ରାତୃ | ବାଳ    | ବିକଳ               | ଶୟନ        | 0.00         | 17 %  |         |
| ବୁଧ        | ଆମାତ୍ୟ           | ଜ୍ଞାତି | ମୃତ    | ନିପୀଡ଼ିତ           | ପ୍ରକାଶ     | 0.60         | 49 %  |         |
| ଗୁରୁ       | ଭ୍ରାତୃ           | ଧନ     | ବୃଦ୍ଧ  | ଖଳ                 | ଭୋଜନ       | 2.59         | 47 %  |         |
| ଶୁକ୍ର      | ମାତୃ             | କଳତ୍ର  | ବୃଦ୍ଧ  | ମୁଦିତ              | ନୃତ୍ୟଲିଖ୍ୟ | 8.51         | 65 %  |         |
| ଶନି        | କଳତ୍ର            | ଆୟୁ    | ବୃଦ୍ଧ  | ନିପୀଡ଼ିତ           | ନୃତ୍ୟଲିଖ୍ୟ | 1.44         | 57 %  |         |
| ରାହୁ       | ---              | ଜ୍ଞାନ  | ଯୁବା   | ମୁଦିତ              | ପ୍ରକାଶ     | 0.00         | 18 %  |         |
| କେତୁ       | ---              | ମୋକ୍ଷ  | ଯୁବା   | ଖଳ                 | ସଭା        | 0.00         | 18 %  |         |
| <b>ମୋଟ</b> |                  |        |        |                    |            | <b>29.16</b> |       |         |

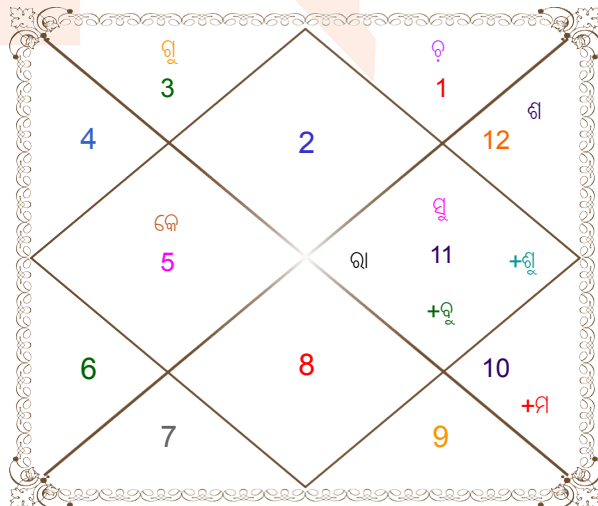
### ତାରା ବୃକ୍ତ

| ଜନ୍ମ    | ସଦ          | ବିପଦ        | କ୍ଷେମ  | ପ୍ରତ୍ୟର୍ଥ | ସାଧକ    | ବନ୍ଧ       | ମିତ୍ର     | ଅତିମିତ୍ର |
|---------|-------------|-------------|--------|-----------|---------|------------|-----------|----------|
| ଅଶ୍ୱିନୀ | ଭରଣୀ        | କୃତ୍ତିକା    | ରୋହିଣୀ | ମୃଗଶିରା   | ଆର୍ଦ୍ରା | ପୁର୍ବଫଲ୍ଗୁ | ପୁଷ୍ୟ     | ଅଶ୍ଳେଷା  |
| ମଘା     | ପୁ.ଫାଲ୍ଗୁନୀ | ଉ.ଫାଲ୍ଗୁନୀ  | ହସ୍ତ   | ଚିତ୍ରା    | ସ୍ୱାତି  | ବିଶାଖା     | ଅନୁରାଧା   | ଜ୍ୟେଷ୍ଠା |
| ମୂଳା    | ପୂର୍ବାଷାଢ଼ା | ଉତ୍ତରାଷାଢ଼ା | ଶ୍ରବଣା | ଧନିଷ୍ଠା   | ଶତଭିଷା  | ପୁ.ଭାଦ୍ରପଦ | ଉ.ଭାଦ୍ରପଦ | ରେବତୀ    |

### ବୃକ୍ତି ଲଗ୍ନ



### ଲଗ୍ନ-ବୃକ୍ତି



## ବିଂଶୋତ୍ତରୀ ଦଶା

**ଭୋଗ୍ୟ ଦଶା କାଳ : କେତୁ 2 ବର୍ଷ 0 ମାସ 3 ଦିନ**

| କେତୁ 7 ବର୍ଷ       |            | ଶୁକ୍ର 20 ବର୍ଷ     |            | ସୂର୍ଯ୍ୟ 6 ବର୍ଷ    |            | ଚନ୍ଦ୍ର 10 ବର୍ଷ    |            | ମଙ୍ଗଳ 7 ବର୍ଷ      |            |
|-------------------|------------|-------------------|------------|-------------------|------------|-------------------|------------|-------------------|------------|
| <b>22/02/2026</b> |            | <b>26/02/2028</b> |            | <b>26/02/2048</b> |            | <b>25/02/2054</b> |            | <b>26/02/2064</b> |            |
| <b>26/02/2028</b> |            | <b>26/02/2048</b> |            | <b>25/02/2054</b> |            | <b>26/02/2064</b> |            | <b>26/02/2071</b> |            |
|                   | 00/00/0000 | ଶୁକ୍ର             | 27/06/2031 | ସୂର୍ଯ୍ୟ           | 14/06/2048 | ଚନ୍ଦ୍ର            | 27/12/2054 | ମଙ୍ଗଳ             | 24/07/2064 |
|                   | 00/00/0000 | ସୂର୍ଯ୍ୟ           | 27/06/2032 | ଚନ୍ଦ୍ର            | 14/12/2048 | ମଙ୍ଗଳ             | 28/07/2055 | ରାହୁ              | 11/08/2065 |
|                   | 00/00/0000 | ଚନ୍ଦ୍ର            | 25/02/2034 | ମଙ୍ଗଳ             | 21/04/2049 | ରାହୁ              | 26/01/2057 | ଗୁରୁ              | 18/07/2066 |
|                   | 00/00/0000 | ମଙ୍ଗଳ             | 27/04/2035 | ରାହୁ              | 16/03/2050 | ଗୁରୁ              | 28/05/2058 | ଶନି               | 27/08/2067 |
|                   | 00/00/0000 | ରାହୁ              | 27/04/2038 | ଗୁରୁ              | 02/01/2051 | ଶନି               | 27/12/2059 | ବୁଧ               | 23/08/2068 |
|                   | 00/00/0000 | ଗୁରୁ              | 26/12/2040 | ଶନି               | 15/12/2051 | ବୁଧ               | 27/05/2061 | କେତୁ              | 20/01/2069 |
|                   | 22/02/2026 | ଶନି               | 26/02/2044 | ବୁଧ               | 20/10/2052 | କେତୁ              | 26/12/2061 | ଶୁକ୍ର             | 22/03/2070 |
| ଶନି               | 01/03/2027 | ବୁଧ               | 27/12/2046 | କେତୁ              | 25/02/2053 | ଶୁକ୍ର             | 27/08/2063 | ସୂର୍ଯ୍ୟ           | 28/07/2070 |
| ବୁଧ               | 26/02/2028 | କେତୁ              | 26/02/2048 | ଶୁକ୍ର             | 25/02/2054 | ସୂର୍ଯ୍ୟ           | 26/02/2064 | ଚନ୍ଦ୍ର            | 26/02/2071 |

| ରାହୁ 18 ବର୍ଷ      |            | ଗୁରୁ 16 ବର୍ଷ      |            | ଶନି 19 ବର୍ଷ       |            | ବୁଧ 17 ବର୍ଷ       |            | କେତୁ 7 ବର୍ଷ       |            |
|-------------------|------------|-------------------|------------|-------------------|------------|-------------------|------------|-------------------|------------|
| <b>26/02/2071</b> |            | <b>25/02/2089</b> |            | <b>26/02/2105</b> |            | <b>27/02/2124</b> |            | <b>26/02/2141</b> |            |
| <b>25/02/2089</b> |            | <b>26/02/2105</b> |            | <b>27/02/2124</b> |            | <b>26/02/2141</b> |            | <b>00/00/0000</b> |            |
| ରାହୁ              | 08/11/2073 | ଗୁରୁ              | 15/04/2091 | ଶନି               | 01/03/2108 | ବୁଧ               | 25/07/2126 | କେତୁ              | 25/07/2141 |
| ଗୁରୁ              | 02/04/2076 | ଶନି               | 27/10/2093 | ବୁଧ               | 09/11/2110 | କେତୁ              | 23/07/2127 | ଶୁକ୍ର             | 24/09/2142 |
| ଶନି               | 07/02/2079 | ବୁଧ               | 01/02/2096 | କେତୁ              | 19/12/2111 | ଶୁକ୍ର             | 23/05/2130 | ସୂର୍ଯ୍ୟ           | 30/01/2143 |
| ବୁଧ               | 27/08/2081 | କେତୁ              | 07/01/2097 | ଶୁକ୍ର             | 17/02/2115 | ସୂର୍ଯ୍ୟ           | 29/03/2131 | ଚନ୍ଦ୍ର            | 31/08/2143 |
| କେତୁ              | 14/09/2082 | ଶୁକ୍ର             | 08/09/2099 | ସୂର୍ଯ୍ୟ           | 30/01/2116 | ଚନ୍ଦ୍ର            | 27/08/2132 | ମଙ୍ଗଳ             | 27/01/2144 |
| ଶୁକ୍ର             | 14/09/2085 | ସୂର୍ଯ୍ୟ           | 28/06/2100 | ଚନ୍ଦ୍ର            | 31/08/2117 | ମଙ୍ଗଳ             | 25/08/2133 | ରାହୁ              | 14/02/2145 |
| ସୂର୍ଯ୍ୟ           | 09/08/2086 | ଚନ୍ଦ୍ର            | 28/10/2101 | ମଙ୍ଗଳ             | 10/10/2118 | ରାହୁ              | 13/03/2136 | ଗୁରୁ              | 21/01/2146 |
| ଚନ୍ଦ୍ର            | 08/02/2088 | ମଙ୍ଗଳ             | 03/10/2102 | ରାହୁ              | 16/08/2121 | ଗୁରୁ              | 19/06/2138 | ଶନି               | 23/02/2146 |
| ମଙ୍ଗଳ             | 25/02/2089 | ରାହୁ              | 26/02/2105 | ଗୁରୁ              | 27/02/2124 | ଶନି               | 26/02/2141 |                   | 00/00/0000 |

- ❖ ଉପରୋକ୍ତ ଦଶା ଚନ୍ଦ୍ରମା ର ଅଂଶ ଉପରେ ଦିଆ ଯାଇଛି । ଭୟାବ ଉଭୋଗ ର ଅନୁସାରେ ଦଶା କେତୁ ୨ ବର୍ଷ ୦ ମାସ ୧ ଦିନ ହେଉଛି ।
- ❖ ଉପରୋକ୍ତ ତିଆ ଦଶାର ସମାପ୍ତ ହେବାର ସମୟ ଦର୍ଶାଉଛି । ବିଶୋଭରା ଦଶା ପୁରା ୧୨୦ ବର୍ଷର ଆୟୁ ନିର୍ଣ୍ଣୟ ଦିଆ ଯାଇଛି ।

## ବିଂଶୋତ୍ତରୀ ଦଶା - ପ୍ରତ୍ୟକ୍ଷର

| କେତୁ - ଶନି        |            | କେତୁ - ବୁଧ        |            | ଶୁକ୍ର - ଶୁକ୍ର     |            | ଶୁକ୍ର - ସୂର୍ଯ୍ୟ   |            | ଶୁକ୍ର - ଚନ୍ଦ୍ର    |            |
|-------------------|------------|-------------------|------------|-------------------|------------|-------------------|------------|-------------------|------------|
| <b>22/02/2026</b> |            | <b>01/03/2027</b> |            | <b>26/02/2028</b> |            | <b>27/06/2031</b> |            | <b>27/06/2032</b> |            |
| <b>01/03/2027</b> |            | <b>26/02/2028</b> |            | <b>27/06/2031</b> |            | <b>27/06/2032</b> |            | <b>25/02/2034</b> |            |
| ଶନି               | 25/03/2026 | ବୁଧ               | 21/04/2027 | ଶୁକ୍ର             | 16/09/2028 | ସୂର୍ଯ୍ୟ           | 16/07/2031 | ଚନ୍ଦ୍ର            | 16/08/2032 |
| ବୁଧ               | 21/05/2026 | କେତୁ              | 12/05/2027 | ସୂର୍ଯ୍ୟ           | 16/11/2028 | ଚନ୍ଦ୍ର            | 15/08/2031 | ମଙ୍ଗଳ             | 21/09/2032 |
| କେତୁ              | 14/06/2026 | ଶୁକ୍ର             | 11/07/2027 | ଚନ୍ଦ୍ର            | 25/02/2029 | ମଙ୍ଗଳ             | 05/09/2031 | ରାହୁ              | 21/12/2032 |
| ଶୁକ୍ର             | 20/08/2026 | ସୂର୍ଯ୍ୟ           | 30/07/2027 | ମଙ୍ଗଳ             | 07/05/2029 | ରାହୁ              | 30/10/2031 | ଶୁଭୁ              | 12/03/2033 |
| ସୂର୍ଯ୍ୟ           | 10/09/2026 | ଚନ୍ଦ୍ର            | 29/08/2027 | ରାହୁ              | 06/11/2029 | ଶୁଭୁ              | 18/12/2031 | ଶନି               | 17/06/2033 |
| ଚନ୍ଦ୍ର            | 13/10/2026 | ମଙ୍ଗଳ             | 19/09/2027 | ଶୁଭୁ              | 17/04/2030 | ଶନି               | 14/02/2032 | ବୁଧ               | 11/09/2033 |
| ମଙ୍ଗଳ             | 06/11/2026 | ରାହୁ              | 12/11/2027 | ଶନି               | 27/10/2030 | ବୁଧ               | 05/04/2032 | କେତୁ              | 16/10/2033 |
| ରାହୁ              | 06/01/2027 | ଶୁଭୁ              | 30/12/2027 | ବୁଧ               | 17/04/2031 | କେତୁ              | 27/04/2032 | ଶୁକ୍ର             | 26/01/2034 |
| ଶୁଭୁ              | 01/03/2027 | ଶନି               | 26/02/2028 | କେତୁ              | 27/06/2031 | ଶୁକ୍ର             | 27/06/2032 | ସୂର୍ଯ୍ୟ           | 25/02/2034 |

| ଶୁକ୍ର - ମଙ୍ଗଳ     |            | ଶୁକ୍ର - ରାହୁ      |            | ଶୁକ୍ର - ଶୁଭୁ      |            | ଶୁକ୍ର - ଶନି       |            | ଶୁକ୍ର - ବୁଧ       |            |
|-------------------|------------|-------------------|------------|-------------------|------------|-------------------|------------|-------------------|------------|
| <b>25/02/2034</b> |            | <b>27/04/2035</b> |            | <b>27/04/2038</b> |            | <b>26/12/2040</b> |            | <b>26/02/2044</b> |            |
| <b>27/04/2035</b> |            | <b>27/04/2038</b> |            | <b>26/12/2040</b> |            | <b>26/02/2044</b> |            | <b>27/12/2046</b> |            |
| ମଙ୍ଗଳ             | 22/03/2034 | ରାହୁ              | 09/10/2035 | ଶୁଭୁ              | 04/09/2038 | ଶନି               | 27/06/2041 | ବୁଧ               | 21/07/2044 |
| ରାହୁ              | 25/05/2034 | ଶୁଭୁ              | 03/03/2036 | ଶନି               | 05/02/2039 | ବୁଧ               | 08/12/2041 | କେତୁ              | 20/09/2044 |
| ଶୁଭୁ              | 21/07/2034 | ଶନି               | 23/08/2036 | ବୁଧ               | 23/06/2039 | କେତୁ              | 14/02/2042 | ଶୁକ୍ର             | 11/03/2045 |
| ଶନି               | 26/09/2034 | ବୁଧ               | 26/01/2037 | କେତୁ              | 19/08/2039 | ଶୁକ୍ର             | 25/08/2042 | ସୂର୍ଯ୍ୟ           | 02/05/2045 |
| ବୁଧ               | 26/11/2034 | କେତୁ              | 31/03/2037 | ଶୁକ୍ର             | 28/01/2040 | ସୂର୍ଯ୍ୟ           | 22/10/2042 | ଚନ୍ଦ୍ର            | 27/07/2045 |
| କେତୁ              | 21/12/2034 | ଶୁକ୍ର             | 29/09/2037 | ସୂର୍ଯ୍ୟ           | 17/03/2040 | ଚନ୍ଦ୍ର            | 27/01/2043 | ମଙ୍ଗଳ             | 26/09/2045 |
| ଶୁକ୍ର             | 02/03/2035 | ସୂର୍ଯ୍ୟ           | 23/11/2037 | ଚନ୍ଦ୍ର            | 06/06/2040 | ମଙ୍ଗଳ             | 04/04/2043 | ରାହୁ              | 28/02/2046 |
| ସୂର୍ଯ୍ୟ           | 23/03/2035 | ଚନ୍ଦ୍ର            | 22/02/2038 | ମଙ୍ଗଳ             | 02/08/2040 | ରାହୁ              | 25/09/2043 | ଶୁଭୁ              | 16/07/2046 |
| ଚନ୍ଦ୍ର            | 27/04/2035 | ମଙ୍ଗଳ             | 27/04/2038 | ରାହୁ              | 26/12/2040 | ଶୁଭୁ              | 26/02/2044 | ଶନି               | 27/12/2046 |

| ଶୁକ୍ର - କେତୁ      |            | ସୂର୍ଯ୍ୟ - ସୂର୍ଯ୍ୟ |            | ସୂର୍ଯ୍ୟ - ଚନ୍ଦ୍ର  |            | ସୂର୍ଯ୍ୟ - ମଙ୍ଗଳ   |            | ସୂର୍ଯ୍ୟ - ରାହୁ    |            |
|-------------------|------------|-------------------|------------|-------------------|------------|-------------------|------------|-------------------|------------|
| <b>27/12/2046</b> |            | <b>26/02/2048</b> |            | <b>14/06/2048</b> |            | <b>14/12/2048</b> |            | <b>21/04/2049</b> |            |
| <b>26/02/2048</b> |            | <b>14/06/2048</b> |            | <b>14/12/2048</b> |            | <b>21/04/2049</b> |            | <b>16/03/2050</b> |            |
| କେତୁ              | 21/01/2047 | ସୂର୍ଯ୍ୟ           | 02/03/2048 | ଚନ୍ଦ୍ର            | 30/06/2048 | ମଙ୍ଗଳ             | 21/12/2048 | ରାହୁ              | 09/06/2049 |
| ଶୁକ୍ର             | 02/04/2047 | ଚନ୍ଦ୍ର            | 11/03/2048 | ମଙ୍ଗଳ             | 10/07/2048 | ରାହୁ              | 10/01/2049 | ଶୁଭୁ              | 23/07/2049 |
| ସୂର୍ଯ୍ୟ           | 23/04/2047 | ମଙ୍ଗଳ             | 18/03/2048 | ରାହୁ              | 07/08/2048 | ଶୁଭୁ              | 27/01/2049 | ଶନି               | 13/09/2049 |
| ଚନ୍ଦ୍ର            | 28/05/2047 | ରାହୁ              | 03/04/2048 | ଶୁଭୁ              | 31/08/2048 | ଶନି               | 16/02/2049 | ବୁଧ               | 30/10/2049 |
| ମଙ୍ଗଳ             | 22/06/2047 | ଶୁଭୁ              | 18/04/2048 | ଶନି               | 29/09/2048 | ବୁଧ               | 06/03/2049 | କେତୁ              | 18/11/2049 |
| ରାହୁ              | 25/08/2047 | ଶନି               | 05/05/2048 | ବୁଧ               | 25/10/2048 | କେତୁ              | 14/03/2049 | ଶୁକ୍ର             | 12/01/2050 |
| ଶୁଭୁ              | 21/10/2047 | ବୁଧ               | 21/05/2048 | କେତୁ              | 04/11/2048 | ଶୁକ୍ର             | 04/04/2049 | ସୂର୍ଯ୍ୟ           | 28/01/2050 |
| ଶନି               | 27/12/2047 | କେତୁ              | 27/05/2048 | ଶୁକ୍ର             | 05/12/2048 | ସୂର୍ଯ୍ୟ           | 10/04/2049 | ଚନ୍ଦ୍ର            | 24/02/2050 |
| ବୁଧ               | 26/02/2048 | ଶୁକ୍ର             | 14/06/2048 | ସୂର୍ଯ୍ୟ           | 14/12/2048 | ଚନ୍ଦ୍ର            | 21/04/2049 | ମଙ୍ଗଳ             | 16/03/2050 |

## ବିଂଶୋତ୍ତରୀ ଦଶା - ପ୍ରତ୍ୟକ୍ଷର

| ସୂର୍ଯ୍ୟ - ଗୁରୁ    |            | ସୂର୍ଯ୍ୟ - ଶନି     |            | ସୂର୍ଯ୍ୟ - ବୁଧ     |            | ସୂର୍ଯ୍ୟ - କେତୁ    |            | ସୂର୍ଯ୍ୟ - ଶୁକ୍ର   |            |
|-------------------|------------|-------------------|------------|-------------------|------------|-------------------|------------|-------------------|------------|
| <b>16/03/2050</b> |            | <b>02/01/2051</b> |            | <b>15/12/2051</b> |            | <b>20/10/2052</b> |            | <b>25/02/2053</b> |            |
| <b>02/01/2051</b> |            | <b>15/12/2051</b> |            | <b>20/10/2052</b> |            | <b>25/02/2053</b> |            | <b>25/02/2054</b> |            |
| ଗୁରୁ              | 24/04/2050 | ଶନି               | 26/02/2051 | ବୁଧ               | 28/01/2052 | କେତୁ              | 28/10/2052 | ଶୁକ୍ର             | 27/04/2053 |
| ଶନି               | 09/06/2050 | ବୁଧ               | 16/04/2051 | କେତୁ              | 15/02/2052 | ଶୁକ୍ର             | 18/11/2052 | ସୂର୍ଯ୍ୟ           | 15/05/2053 |
| ବୁଧ               | 20/07/2050 | କେତୁ              | 06/05/2051 | ଶୁକ୍ର             | 07/04/2052 | ସୂର୍ଯ୍ୟ           | 24/11/2052 | ଚନ୍ଦ୍ର            | 15/06/2053 |
| କେତୁ              | 06/08/2050 | ଶୁକ୍ର             | 03/07/2051 | ସୂର୍ଯ୍ୟ           | 22/04/2052 | ଚନ୍ଦ୍ର            | 05/12/2052 | ମଙ୍ଗଳ             | 06/07/2053 |
| ଶୁକ୍ର             | 24/09/2050 | ସୂର୍ଯ୍ୟ           | 20/07/2051 | ଚନ୍ଦ୍ର            | 18/05/2052 | ମଙ୍ଗଳ             | 13/12/2052 | ରାହୁ              | 30/08/2053 |
| ସୂର୍ଯ୍ୟ           | 09/10/2050 | ଚନ୍ଦ୍ର            | 18/08/2051 | ମଙ୍ଗଳ             | 05/06/2052 | ରାହୁ              | 01/01/2053 | ଗୁରୁ              | 17/10/2053 |
| ଚନ୍ଦ୍ର            | 02/11/2050 | ମଙ୍ଗଳ             | 07/09/2051 | ରାହୁ              | 22/07/2052 | ଗୁରୁ              | 18/01/2053 | ଶନି               | 14/12/2053 |
| ମଙ୍ଗଳ             | 19/11/2050 | ରାହୁ              | 30/10/2051 | ଗୁରୁ              | 01/09/2052 | ଶନି               | 07/02/2053 | ବୁଧ               | 04/02/2054 |
| ରାହୁ              | 02/01/2051 | ଗୁରୁ              | 15/12/2051 | ଶନି               | 20/10/2052 | ବୁଧ               | 25/02/2053 | କେତୁ              | 25/02/2054 |

| ଚନ୍ଦ୍ର - ଚନ୍ଦ୍ର   |            | ଚନ୍ଦ୍ର - ମଙ୍ଗଳ    |            | ଚନ୍ଦ୍ର - ରାହୁ     |            | ଚନ୍ଦ୍ର - ଗୁରୁ     |            | ଚନ୍ଦ୍ର - ଶନି      |            |
|-------------------|------------|-------------------|------------|-------------------|------------|-------------------|------------|-------------------|------------|
| <b>25/02/2054</b> |            | <b>27/12/2054</b> |            | <b>28/07/2055</b> |            | <b>26/01/2057</b> |            | <b>28/05/2058</b> |            |
| <b>27/12/2054</b> |            | <b>28/07/2055</b> |            | <b>26/01/2057</b> |            | <b>28/05/2058</b> |            | <b>27/12/2059</b> |            |
| ଚନ୍ଦ୍ର            | 23/03/2054 | ମଙ୍ଗଳ             | 08/01/2055 | ରାହୁ              | 18/10/2055 | ଗୁରୁ              | 01/04/2057 | ଶନି               | 27/08/2058 |
| ମଙ୍ଗଳ             | 09/04/2054 | ରାହୁ              | 09/02/2055 | ଗୁରୁ              | 30/12/2055 | ଶନି               | 17/06/2057 | ବୁଧ               | 17/11/2058 |
| ରାହୁ              | 25/05/2054 | ଗୁରୁ              | 10/03/2055 | ଶନି               | 26/03/2056 | ବୁଧ               | 25/08/2057 | କେତୁ              | 21/12/2058 |
| ଗୁରୁ              | 05/07/2054 | ଶନି               | 12/04/2055 | ବୁଧ               | 11/06/2056 | କେତୁ              | 22/09/2057 | ଶୁକ୍ର             | 27/03/2059 |
| ଶନି               | 22/08/2054 | ବୁଧ               | 12/05/2055 | କେତୁ              | 13/07/2056 | ଶୁକ୍ର             | 12/12/2057 | ସୂର୍ଯ୍ୟ           | 25/04/2059 |
| ବୁଧ               | 04/10/2054 | କେତୁ              | 25/05/2055 | ଶୁକ୍ର             | 13/10/2056 | ସୂର୍ଯ୍ୟ           | 06/01/2058 | ଚନ୍ଦ୍ର            | 12/06/2059 |
| କେତୁ              | 22/10/2054 | ଶୁକ୍ର             | 29/06/2055 | ସୂର୍ଯ୍ୟ           | 09/11/2056 | ଚନ୍ଦ୍ର            | 15/02/2058 | ମଙ୍ଗଳ             | 16/07/2059 |
| ଶୁକ୍ର             | 11/12/2054 | ସୂର୍ଯ୍ୟ           | 10/07/2055 | ଚନ୍ଦ୍ର            | 25/12/2056 | ମଙ୍ଗଳ             | 16/03/2058 | ରାହୁ              | 11/10/2059 |
| ସୂର୍ଯ୍ୟ           | 27/12/2054 | ଚନ୍ଦ୍ର            | 28/07/2055 | ମଙ୍ଗଳ             | 26/01/2057 | ରାହୁ              | 28/05/2058 | ଗୁରୁ              | 27/12/2059 |

| ଚନ୍ଦ୍ର - ବୁଧ      |            | ଚନ୍ଦ୍ର - କେତୁ     |            | ଚନ୍ଦ୍ର - ଶୁକ୍ର    |            | ଚନ୍ଦ୍ର - ସୂର୍ଯ୍ୟ  |            | ମଙ୍ଗଳ - ମଙ୍ଗଳ     |            |
|-------------------|------------|-------------------|------------|-------------------|------------|-------------------|------------|-------------------|------------|
| <b>27/12/2059</b> |            | <b>27/05/2061</b> |            | <b>26/12/2061</b> |            | <b>27/08/2063</b> |            | <b>26/02/2064</b> |            |
| <b>27/05/2061</b> |            | <b>26/12/2061</b> |            | <b>27/08/2063</b> |            | <b>26/02/2064</b> |            | <b>24/07/2064</b> |            |
| ବୁଧ               | 09/03/2060 | କେତୁ              | 09/06/2061 | ଶୁକ୍ର             | 07/04/2062 | ସୂର୍ଯ୍ୟ           | 05/09/2063 | ମଙ୍ଗଳ             | 06/03/2064 |
| କେତୁ              | 08/04/2060 | ଶୁକ୍ର             | 14/07/2061 | ସୂର୍ଯ୍ୟ           | 07/05/2062 | ଚନ୍ଦ୍ର            | 21/09/2063 | ରାହୁ              | 28/03/2064 |
| ଶୁକ୍ର             | 04/07/2060 | ସୂର୍ଯ୍ୟ           | 25/07/2061 | ଚନ୍ଦ୍ର            | 27/06/2062 | ମଙ୍ଗଳ             | 01/10/2063 | ଗୁରୁ              | 17/04/2064 |
| ସୂର୍ଯ୍ୟ           | 30/07/2060 | ଚନ୍ଦ୍ର            | 12/08/2061 | ମଙ୍ଗଳ             | 02/08/2062 | ରାହୁ              | 29/10/2063 | ଶନି               | 10/05/2064 |
| ଚନ୍ଦ୍ର            | 11/09/2060 | ମଙ୍ଗଳ             | 24/08/2061 | ରାହୁ              | 01/11/2062 | ଗୁରୁ              | 22/11/2063 | ବୁଧ               | 01/06/2064 |
| ମଙ୍ଗଳ             | 11/10/2060 | ରାହୁ              | 25/09/2061 | ଗୁରୁ              | 21/01/2063 | ଶନି               | 21/12/2063 | କେତୁ              | 09/06/2064 |
| ରାହୁ              | 27/12/2060 | ଗୁରୁ              | 24/10/2061 | ଶନି               | 27/04/2063 | ବୁଧ               | 16/01/2064 | ଶୁକ୍ର             | 04/07/2064 |
| ଗୁରୁ              | 06/03/2061 | ଶନି               | 26/11/2061 | ବୁଧ               | 23/07/2063 | କେତୁ              | 26/01/2064 | ସୂର୍ଯ୍ୟ           | 12/07/2064 |
| ଶନି               | 27/05/2061 | ବୁଧ               | 26/12/2061 | କେତୁ              | 27/08/2063 | ଶୁକ୍ର             | 26/02/2064 | ଚନ୍ଦ୍ର            | 24/07/2064 |

## ଶୁଭାଶୁଭ ଜ୍ଞାନ

ଶୁଭା-ଶୁଭ ଜ୍ଞାନ ଆପଣଙ୍କୁ ଆପଣଙ୍କର ମିତ୍ର ଏବଂ ଶତ୍ରୁ ବର୍ଗ ଆଦି ସୂଚିତ କରାଇଥାଏ । ମୂଲ୍ୟାଙ୍କ, ଭାଗ୍ୟାଙ୍କ ଏବଂ ମିତ୍ରାଙ୍କ ରୁ ମିତ୍ରତା ଏବଂ ସାଥେ ସାଥେ ଶୁଭ ଦିନ ଏବଂ ଶୁଭ ବର୍ଷ ଗୁଡ଼ିକ କିପରି ଭାବେ ଉନ୍ନତି ପଥରେ ସହାୟକ ହେବ । ଅର୍ଥାତ ଶୁଭ ଗ୍ରହ ଗୁଡ଼ିକର ଦଶା ଆପଣଙ୍କୁ ସୌଭାଗ୍ୟ ପ୍ରଦାନ କରିବ । ଏହି ପ୍ରକାର ମିତ୍ର ଲଗ୍ନ ଲାଭଦାୟକ ଏବଂ ମିତ୍ର ରାଶି ସହିତ ଘନିଷ୍ଟତା ହୋଇ ଥାଏ ।

ଫଳଦାୟକ ରତ୍ନ, ଧାତୁ ଇତ୍ୟାଦି ପରିଧାନ କରିଲେ ଶାରୀରିକ ଏବଂ ମାନସିକ କ୍ଷିରତା ବଜାୟ ରହିବ । ସୌଭାଗ୍ୟରେ ମଧ୍ୟ ଉନ୍ନତି ପରିଲକ୍ଷିତ ହେବ । ଆପଣ ଶୁଭ ସମୟରେ କୌଣସି କାର୍ଯ୍ୟ ପ୍ରାରମ୍ଭ କଲେ ମନମୁତାବକ ଫଳ ପାଇପାରିବେ । ଇଚ୍ଛା ଦେବତାଙ୍କୁ ଧ୍ୟାନ ଏବଂ ଜପ କରିଲେ ମାନସିକ ଶାନ୍ତି ତଥା କାର୍ଯ୍ୟରେ ସଫଳତା ମିଳିବ । ଶୁଭ ପଦାର୍ଥ, ଅର୍ଥ, ଶୁଭ ଦ୍ରବ୍ୟାଦି ଦାନ ତଥା ବ୍ୟପାର ଶୁଭ ଦିଗରେ ଆରମ୍ଭ କଲେ ବ୍ୟାପାର ଆଦି କ୍ଷେତ୍ରରେ ମନୋବାଞ୍ଚିତ ଲାଭ ହେବ । ଏହି ପ୍ରକାର ଶୁଭାଶୁଭ ଜ୍ଞାନ ଦୈନନ୍ଦିନ ଜୀବନରେ ଶୁଭ ଫଳ ପ୍ରଦାନରେ ସହାୟକ ହେବ ।

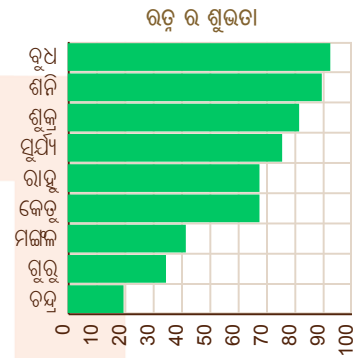
|              |                          |
|--------------|--------------------------|
| ମୂଲ୍ୟାଙ୍କ    | 4                        |
| ଭାଗ୍ୟାଙ୍କ    | 7                        |
| ମିତ୍ର ଅଙ୍କ   | 1, 4, 6, 7               |
| ଶତ୍ରୁ ଅଙ୍କ   | 3, 8                     |
| ଶୁଭ ବର୍ଷ     | 22,31,40,49,58           |
| ଶୁଭ ଦିନ      | ଶନି, ବୁଧ, ଶୁକ୍ର          |
| ଶୁଭ ଗ୍ରହ     | ଶନି, ବୁଧ, ଶୁକ୍ର          |
| ମିତ୍ର ରାଶି   | କର୍କଟ, ଧନୁ               |
| ମିତ୍ର ଲଗ୍ନ   | ସିଂହ, ମକର, ମୀନ           |
| ଅନୁକୂଳ ଦେବତା | ହନୁମାନ                   |
| ଶୁଭ ରତ୍ନ     | ହୀରା                     |
| ଶୁଭ ଉପରତ୍ନ   | ଜରକିନ, ସୁନହରା ହକିକ       |
| ଭାଗ୍ୟ ରତ୍ନ   | ନୀଳା                     |
| ଶୁଭ ଧାତୁ     | ରଜତ                      |
| ଶୁଭ ରଙ୍ଗ     | ରୂପା                     |
| ଶୁଭ ଦିଗ      | ଦକ୍ଷିଣ ପୂର୍ବ             |
| ଶୁଭ ସମୟ      | ସୂର୍ଯ୍ୟୋଦୟ               |
| ଦାନ ପଦାର୍ଥ   | ମିଶିରି, ଦହି, ଶ୍ଵେତ ଚନ୍ଦନ |
| ଅନ୍ନଦାନ      | ଚାଉଳ                     |
| ଦ୍ରବ୍ୟଦାନ    | କ୍ଷୀର                    |

## ରତ୍ନ ଚୟନ

ରତ୍ନ ଜୀବନ ରେ ଶୁଭତା ର ବୃଦ୍ଧି ପାଇଁ ଧାରଣ କରା ଯାଇ ଥାଏ । ବୈଜ୍ଞାନିକ ରୂପ ରେ, ରତ୍ନ ନିଜ ଗ୍ରହ ର ରାଶି କୁ ପୂର୍ଣ୍ଣ ମାତ୍ରା ରେ ମାନବ ଶରୀର ରେ ପ୍ରବାହିତ କରି ଗ୍ରହ ପ୍ରଭାବ ର ବୃଦ୍ଧି କରି ଥାଏ । ଏଥି ପାଇଁ ରତ୍ନ କେବଳ ଶୁଭ ଗ୍ରହ ର ହିଁ ଧାରଣ କରା ଯାଇ ଥାଏ । ଯଦି ଗ୍ରହ ଲଗ୍ନ, ତ୍ରିକୋଣ ଅଥବା କେନ୍ଦ୍ର ରେ ସ୍ଥାପିତ ହୋଇ ଥାଏ ଅଥବା ସ୍ୱାମୀ ହୋଇ ଥାଏ, ତାହା ହେଲେ ଗ୍ରହ ଶୁଭ ମାନା ଯାଇ ଥାଏ । ଯଦି ଗ୍ରହ ତ୍ରିକ ଭାବ ସହ ସମ୍ବନ୍ଧିତ ହୋଇ ଥାଏ, ତାହା ହେଲେ ଅଶୁଭ ମାନା ଯାଇ ଥାଏ । ମିତ୍ର ଜ୍ୱରୁ ଅଥବା ଦୃଷ୍ଟି ମଧ୍ୟ ଏହାର ଶୁଭତା ବଢ଼େଇ ଥାଏ । ବାଧକ ଭାବ ର ସ୍ୱାମିତ୍ୱ ଶୁଭତା କମ କରି ଦେଇ ଥାଏ । ଚନ୍ଦ୍ର ଲଗ୍ନ ରେ ଏକାଦଶ, ଛିର ରେ ନବମ ଅଥବା ଦ୍ୱିପଦ୍ଧାବ ରେ ସପ୍ତମ ଭାବ ର ବାଧକ ସଞ୍ଜା ଥାଏ । ଉପରୋକ୍ତ ତଥ୍ୟ ରତ୍ନ ଚୟନ ହେତୁ ଗ୍ରହ ର ଶୁଭତା ଦର୍ଶାଇ ଥାଏ ।

ତଳେ ଜନ୍ମ କୁଣ୍ଡଳୀ ରେ ଗ୍ରହ ର ଶୁଭତା କୁ ସାରଣୀ ଏବଂ ଗ୍ରାଫ ରେ ଦର୍ଶିତ କରା ଯାଇ ଅଛି । ଏହାର ସାଥେ ସାଥେ କେଉଁ ଗ୍ରହ କେଉଁ କ୍ଷେତ୍ର ରେ କାର୍ଯ୍ୟ ସିଦ୍ଧ କରିବ ତାହା ଦିଆ ଯାଇ ଅଛି । ବିଭିନ୍ନ ଦଶା ରେ ବିଭିନ୍ନ ରତ୍ନ ର ଶୁଭତା ମଧ୍ୟ ତଳେ ତାଲିକା ରେ ଦିଆ ଯାଇ ଅଛି । ଯେଉଁ ଗ୍ରହ କୁ ୭୫ ପ୍ରତିଶତ ଶୁଭତା ପ୍ରାପ୍ତ କରି ଥାଏ, ତାହାର ରତ୍ନ ଆମକୁ ସର୍ବଦା ବିନା ଦଶା ବିଚାର ରେ ଧାରଣ କରିବା ଦରକାର । ଯେଉଁ ରତ୍ନ ୫୦-୭୫ ପ୍ରତିଶତ ଶୁଭତା ପ୍ରାପ୍ତ କରି ଥାଏ, ତାଙ୍କୁ କାର୍ଯ୍ୟ କ୍ଷେତ୍ର ଅନୁସାରେ କିମ୍ବା ଅନୁକୂଳ ଦଶା ରେ ଧାରଣ କରିବା ଦରକାର । ଯେଉଁ ରତ୍ନ କେବଳ ୨୫-୫୦ ପ୍ରତିଶତ ଶୁଭତା ପ୍ରାପ୍ତ କରି ଥାଏ, ସେହି ରତ୍ନ କେବଳ ନିଜର କିମ୍ବା ତାଙ୍କର ମିତ୍ର ଦଶା ରେ ଧାରଣ କରିବା ଦରକାର । ଅନ୍ତତଃ ଯାହାକୁ ୨୫ ପ୍ରତିଶତ ରୁ ଭା କମ ଶୁଭତା ପ୍ରାପ୍ତ ହୋଇ ଥାଏ, ସେହି ଗ୍ରହ ନିଜ ପାଇଁ ଅଶୁଭ ହିଁ ବୁଝା ଯିବ ଏବଂ ସେହି ରତ୍ନ କୁ ପିନ୍ଧିବା ଦରକାର ନାହିଁ ।

| ରତ୍ନ      | ଗ୍ରହ    | ଶୁଭତା | କ୍ଷେତ୍ର   |
|-----------|---------|-------|---|
| ପଦ୍ମା     | ବୁଧ     | 92%   | ବ୍ୟବସାୟ ରୁ ଉନ୍ନତି, ଧନ, ସନ୍ତାନ ପୁତ୍ର                   |
| ନୀଳା      | ଶନି     | 89%   | ଧନ ଅର୍ଜନ, ଭାଗ୍ୟ ଉଦୟ, ବ୍ୟବସାୟ ରୁ ଉନ୍ନତି                |
| ହୀରା      | ଶୁକ୍ର   | 81%   | ବ୍ୟବସାୟ ରୁ ଉନ୍ନତି, ସ୍ୱାସ୍ଥ୍ୟ, ଶତ୍ରୁ ଏବଂ ରୋଗ ରୁ ମୁକ୍ତି |
| ମାଣିକ୍ୟ   | ସୂର୍ଯ୍ୟ | 75%   | ବ୍ୟବସାୟ ରୁ ଉନ୍ନତି, ପୁତ୍ର                              |
| ମରକତ      | ରାହୁ    | 67%   | ବ୍ୟବସାୟ ରୁ ଉନ୍ନତି, ଧନ ଅର୍ଜନ                           |
| ବୈଦୂର୍ଯ୍ୟ | କେତୁ    | 67%   | ପୁତ୍ର, ବ୍ୟବସାୟ ରୁ ଉନ୍ନତି                              |
| ପୋହଳା     | ମଙ୍ଗଳ   | 41%   | ନେତୃ ଭାଗ୍ୟ, ବ୍ୟୟ, ଦାମତ୍ୟ କଷ୍ଟ                         |
| ପୁଖରାଜ    | ଗୁରୁ    | 34%   | ଧନ ହାନି, ଦୁର୍ଦ୍ଦଶା, ହାନି                              |
| ମୋଟୀ      | ଚନ୍ଦ୍ର  | 19%   | ବ୍ୟୟ, ପରାକ୍ରମ ହାନି                                    |



### ଦଶାନ୍ତସାର ରତ୍ନ ବିଚାର

| ଦଶା     | ସମାପ୍ତି    | ମାଣିକ୍ୟ | ମୋଟୀ | ପୋହଳା | ପଦ୍ମା | ପୁଖରାଜ | ହୀରା | ନୀଳା | ମରକତ | ବୈଦୂର୍ଯ୍ୟ |
|---------|------------|---------|------|-------|-------|--------|------|------|------|-----------|
| କେତୁ    | 26/02/2028 | 62%     | 0%   | 52%   | 92%   | 34%    | 88%  | 77%  | 55%  | 80%       |
| ଶୁକ୍ର   | 26/02/2048 | 62%     | 0%   | 41%   | 98%   | 34%    | 94%  | 95%  | 73%  | 73%       |
| ସୂର୍ଯ୍ୟ | 25/02/2054 | 88%     | 31%  | 52%   | 92%   | 47%    | 69%  | 77%  | 55%  | 55%       |
| ଚନ୍ଦ୍ର  | 26/02/2064 | 81%     | 44%  | 41%   | 98%   | 34%    | 81%  | 89%  | 55%  | 55%       |
| ମଙ୍ଗଳ   | 26/02/2071 | 81%     | 31%  | 58%   | 80%   | 47%    | 81%  | 89%  | 55%  | 73%       |
| ରାହୁ    | 25/02/2089 | 62%     | 0%   | 16%   | 92%   | 34%    | 88%  | 95%  | 80%  | 55%       |
| ଗୁରୁ    | 26/02/2105 | 81%     | 31%  | 52%   | 80%   | 55%    | 69%  | 89%  | 67%  | 67%       |
| ଶନି     | 27/02/2124 | 62%     | 0%   | 16%   | 98%   | 34%    | 88%  | 100% | 73%  | 55%       |
| ବୁଧ     | 26/02/2141 | 81%     | 0%   | 41%   | 100%  | 34%    | 88%  | 89%  | 67%  | 67%       |

## Detailed Analysis of Gems

ଋତୁ/ରାଶି/ରାଜ୍ୟ/ରାଜ୍ୟର ଉପାଦାନ ଉପାଦାନ ଉପାଦାନ  
ଦେବତା/ଦେବତା ଉପାଦାନ ଉପାଦାନ ଉପାଦାନ

Medicine, Gems and Mantras are effective in overcoming the diseases caused by planets and stars. If the time is favorable the expected results are obtained otherwise all these remedial measures turn useless.

A Gem enhances the physical charm of the wearer and increases the power and reduces the malefic influence of planet with its mysterious powers. The flow of radiations emitted by planets in our body gets enhanced with the power of gems. Therefore, those planets which are auspicious in horoscope but lack strength can be strengthened by wearing gems. But contrary to this the gems of inauspicious planets multiply the malefic effects of such inauspicious planets. This is the reason because of which astrologers advise complete relinquishing of the gems of inauspicious planets in horoscope.

A planet is considered favorable when posited in Lagna, Trikona or Kendra or has the lordship of these houses. This is inauspicious if connected to Trik Bhava. The conjunction and aspect of friendly planets also enhances its auspiciousness. The lordship of a Badhak Bhava reduces its beneficence. In movable Lagnas 11th, in stationary Lagnas 9th and in dual Lagnas the 7th house is termed as Badhak Bhava. The placement of planets in their enemy sign or sign of debilitation also decreases their auspiciousness.

For any horoscope the gem of Lagna lord is known as life stone by wearing which the wearer gets good results like attainment of good health, development of personality and enhancement of reputation. The gem of 9th house lord is termed as lucky stone by wearing which the development of destiny can be expected along with enhancement of status. Similarly the gem of Yoga Karaka planet is Karaka gem and has enough potential to give financial gains and progress in the task undertaken along

with all round development.

For the gratification of various desires one might need to wear more than one gem. The detailed information about which gem would yield what type of results in your horoscope has been given below. In addition to that the method of wearing has also been given along with the names of the other gems that can be worn with it. You can attain maximum success in life with right selection of gems.

A clear gem with clear cutting can absorb more radiations therefore the gems of good quality only are capable of giving completely beneficial result. The weight of the gem should be in proportion to the weakness of the planet and body weight. If the planet is very weak then the weight of gem should be heavier. Except diamond all the gems should be touching the skin. Gems worn in fingers in specific metal prove most beneficial.

If because of some reason one needs to remove the gem then it should be placed in a safe place after washing it with Gangajal on the day of it. If gem gets misplaced or stolen away then it is an indication of the removal of the malefic influence of the planet. Similarly if the gem loses its charm then again it also indicates the same. If the gem cracks then it means that the planet for which it is worn is very effective and in this situation this specific planet should be propitiated and the gem should be replaced by a new one.

For attaining the auspiciousness of inauspicious planets in the horoscope the remedial measures like wearing of Rudraksha, Mantra chanting, donation of its Karaka article, Jal Visarjan and fasting etc. can be recommended. If because of some reason you are incapable to wear the required gem then wear the Rudrakshas or semiprecious stones as substitute for this gem or else increase the strength of the planet by Mantra chanting, donation or fasting. The desired benefits are obtained by wearing the gem of auspicious planet and by Jal Visarjan and donation of the article or grain of inauspicious planets.

## Your Horoscope and Gems

For you wearing Emerald, Blue-Sapphire, Diamond or Ruby gem is highly auspicious. By wearing it you can expect all round development with financial gains along with progress on professional front.

For you Blue-Sapphire gem is your lucky stone, which would enhance your destiny. You would be able to accomplish your pending tasks and earn gains from journeys. Your mental tensions would get eradicated. You would also be able to earn reputation and financial gains along with progress on professional front.

For you Diamond gem is your life stone by wearing which your health shall be excellent. It shall enhance your confidence and reputation along with progress on professional front.

For you Emerald or Ruby gem is your Karaka Ratna. By wearing which you can expect growth on professional front. You would earn financial gains, wealth and property along with inflow of new energy in your life.

Therefore, you must wear above-mentioned gems throughout life. By wearing all these gems, the beneficence of all planets with all types of comforts can be expected. All above-mentioned gems can be worn without considering and analyzing any Dasha and transit as all of them are very highly auspicious.

For you Gomed or Cat's eye are auspicious but these gems are capable of yielding auspicious and inauspicious results as per Dasha. Therefore, if you wear these in the Dasha of its ruling planet or friendly planet then they would generate beneficial results. It would be better not to wear these gems in the Dasha of an enemy planet. During that time the remedies should be done by wearing Rudraksha, chanting Mantra or donating articles of Dasha Lord.

Coral or Yellow-Sapphire are highly negative gems for you therefore it would be better not to wear. If you wish to wear

then you must check the auspiciousness of these gems. You should wear them in case you experience the good results otherwise remove immediately. By wearing these gems you might suffer from mental tensions, loss of health and financial troubles.

Wearing Pearl gem might bring in lot of troubles for you. You should not wear it at all because there is not any probability of getting its auspicious results in any Dasha and transit. By wearing it, you might suffer from troubles in matters related to social life, health and finance.

The detailed information about the impact of various gems along with the method of wearing is given below-

### **Emerald**

In your horoscope the planet Mercury placed in 10th house is auspicious for you so by wearing its gem you would become fond of justice and a good policy maker. It shall enhance your spiritual discrimination, positive qualities, and truthfulness. This gem would enhance your patience and humility. This gem would also give you the ability to talk according to situation. The impact of this gem shall also make you famous and practical. After wearing this gem you would be able to get a new vehicle. The auspiciousness of this gem would make you a rich land lord too. You would earn gains and success from business.

For your Taurus ascendant Mercury is the lord of 2nd and 5th house so by wearing its gem Emerald you would be able to get success and recognition from your business. Family related tensions shall get eliminated. This gem can help you get good results from children, education, intelligence and society. Your prosperity and chances of success in competitive examinations shall also increase. You would also be successful in political activities.

Wear Emerald studded in a gold ring in little finger on Wednesday morning after having bath. Do the purification of gem by washing it with Panchamrita and showing incense and lamp to it. After wearing recite "Om Boong Budhaay Namah"

Mantra at least 108 times. After this, donate green dal, musk (kastoori), bronze and green cloth. The weight of this gem should be 3 to 6 carats.

You can also wear emerald in locket, rosary and bracelet or in other hand. If you are incapable of wearing Emerald then you can wear green tourmaline, zade, green agate, peridot or four faced Rudraksha.

### **Blue-Sapphire**

The planet Saturn placed in 11th house of your horoscope is auspicious for you so by wearing its gem blue sapphire you shall not remain a greedy person. You would be happier and satisfied. after wearing this gem you won't become victim of any chronic illness. Further, it shall increase your comfort from vehicles. You might also earn power, authority, honor, happiness and financial gains from government. It shall enhance all types of happiness and your saving potential and in addition to that the obstacles and delay in begetting children would also get eliminated.

For your Taurus ascendant Saturn is 10th lord and 9th lord. It is auspicious for you so by wearing its gem Blue sapphire there would be quick growth in your destiny and professional life. This gem shall bring happiness for your parents. This gem shall give you quick solution for your landed property, house and building etc. By wearing this gem your tasks related to employment shall get solved easily. This gem can be equally beneficial in overcoming the difficulties from your area of gains. You would be able to earn gains from abroad.

Wear blue sapphire studded in a mixed metal ring on Saturday morning in middle finger after having bath. Do the purification of gem by washing it with Panchamrita and showing incense and lamp to it. After wearing recite "Om Shang Shaneshcharaay Namah" Mantra at least 108 times. After this, donate black daal, Black Til (sesame), oil, iron and black cloth. The weight of this gem should be 3 to 6 carats.

Avoid wearing Ruby, Coral and Yellow Sapphire along

with blue sapphire. If you find wearing these gems very necessary then in that case wear them in locket, rosary, bracelet or in other hand. If you are incapable of wearing blue sapphire then you can wear Turquoise, Amethyst, Neeli or six faced Rudraksha.

### **Diamond**

The planet Venus placed in 10th house of your horoscope is auspicious for you so by wearing its gem diamond you would remain cool, calm and composed. You would stay away arguments. You would be morally strong after wearing it. You would be religious and kind hearted. With the impact of it you would be highly interested in charity. You would also become an eloquent speaker. You won't be having shortage of funds. You would also gain a good post of responsibility. You would be taking lot of interest in singing, dancing, cinema and other fine arts.

For your Taurus ascendant Venus is the lord of 1st and 6th house. It is auspicious for you so by wearing its gem diamond you would be able to increase your immunity, health and personality. You would get rid of health troubles, enemies and debts etc. You would have control over your enemies. Your confidence and working efficiency shall also get enhanced. You would be successful in competitive examination, earning material comforts and enjoying happy married life.

Wear diamond studded in a gold ring on Friday morning in ring finger after having bath. Do the purification of gem by washing it with Panchamrita and showing incense and lamp to it. After wearing recite "Om Shoong Shukraay Namah" Mantra at least 108 times. After this, donate rice, Ghee, silver and white cloth. The weight of this gem should be more than 1 carat. One can wear it in small pieces too.

Avoid wearing Ruby, Coral and Yellow Sapphire along with Diamond. If you find wearing these gems very necessary then in that case wear them in locket, rosary, bracelet or in other hand. If you are incapable of wearing diamond then you can wear opal, American diamond, crystal or six faced Rudraksha.

## Ruby

In your horoscope the planet Sun placed in 10th house is auspicious for you so by wearing its gem Ruby you would become wise, erudite and famous. Your confidence shall be increasing amazingly. The impact of Ruby would prove auspicious in the consolidation of your financial position. You shall become more authoritative person. You shall be able to get government job. There shall be extensive support and cooperation coming to from seniors in your job. You would succeed in attaining higher success in your area of work. The auspiciousness of this gem would enhance your leadership qualities.

For your Taurus ascendant the planet Sun is the lord of 4th house so by wearing its gem Ruby there shall be an increase in your comfort from property, house, landed property, parental property, mother and also vehicle. This gem shall also enhance your educational knowledge. This gem would also enhance your process of thought, power of determination, ability to accomplish tasks and working efficiency. This gem would give you educational, mental, physical, spiritual and intellectual strength.

Wear Ruby studded in gold ring in ring on Sunday morning after having bath. Do the purification of gem by washing it with Panchamrita and showing incense and lamp to it. After wearing recite "Om Ghriini Suryay Namah" Mantra at least 108 times. After this, donate jaggery, wheat, sandal and red cloth. The weight of this gem should be 4 to 8 carats.

Avoid wearing blue sapphire and Gomed along with Ruby. If you find wearing these gems very necessary then in that case wear them in locket or in other hand. If you are incapable of wearing Ruby then you can wear red tourmaline, pink agate, garnet or one faced Rudraksha.

## Gomed

The planet Rahu placed in 10th house of your horoscope is auspicious for you so by wearing its gem hessonite you shall become successful and respectable in your professional

life. You would be generous, philanthropic, honorable, famous and a bold person. You would succeed in winning over your enemies. In legal matters too you shall be successful. It shall become regularity and stability in your area of work.

Rahu is in Aquarius and its lord h\_p is in 11th house. Therefore by wearing Gomed you would be able to consolidate your source of income. It shall make you a winner of debates, humorous, and fill you with self-pride. You would be enjoying the comfort of vehicle after wearing it. Your destiny shall become favorable by going abroad. The impact of this gem can make you ambitious. This gem might make you successful business person and you would earn recognition and gains from government. You would be equipped with grain, clothes, ornaments, money, cattle and vehicle with the impact of this gem.

Wear blue hessonite (Gomed) studded in a mixed metal ring on Saturday during sun set time in middle finger after having bath. Do the purification of gem by washing it with Panchamrita and showing incense and lamp to it. After wearing recite "Om Raang Rahvey Namah" Mantra at least 108 times. After this, donate black daal, Black Til (sesame), oil, blanket and blue cloth. The weight of this gem should be 4 to 10 carats.

Avoid wearing Ruby, Coral and Pearl along with Hessonite. If you find wearing these gems very necessary then in that case wear them in locket, rosary, bracelet or in other hand. If you are incapable of wearing hessonite then you can wear its substitute gems or eight faced Rudraksha.

### **Cat's eye**

The planet Ketu placed in 4th house of your horoscope is auspicious for you so by wearing its gem cat's eye you shall be happy in matters related to property. You shall be able to carry your all responsibilities successfully and the only problem is slight indication of difference of opinion with mother. Your enthusiasm shall be amazing. You would earn money from abroad. There shall be an increase in your parental property. You would earn

money from abroad. The financial position shall get consolidated.

Ketu is in Leo and its lord jÊdàÔ is in 10th house. Therefore by wearing Cat's eye you would be able to rise professionally with your cleverness. This gem shall give you higher status, honor and power in the area of your work. You would become very practical in your behavior after wearing it. The auspiciousness of this gem shall make you wise, prosperous and happy. You shall get tremendous support of father. This gem shall protect you from getting into unnecessary arguments. This gem shall reduce your work load. There would be stability and security in your professional life. By wearing this gem you shall be getting the support and cooperation of subordinates. You would become hard working and lover of justice. You would also be getting opportunities to enjoy the association of excellent people.

Wear blue cat's eye studded in a silver ring on Thursday during sun set time in ring finger after having bath. Do the purification of gem by washing it with Panchamrita and showing incense and lamp to it. After wearing recite "Om KengKetwey Namah" Mantra at least 108 times. After this, donate seven grains, coconut, and smoky cloth. The weight of this gem should be 8 to 10 carats.

You can also wear it in locket, rosary, and bracelet or in other hand. If you are incapable of wearing cat's eye then you can wear its substitute gems or nine faced Rudraksha. Ruby and Hessonite should not be worn along with cat's eye.

### **Coral**

The planet Mars placed in 9th house of your horoscope is incapable of yielding all auspicious results so by wearing its gem coral your relation with your father and younger sibling might get affected. You might face few legal complications too. The long journeys won't be beneficial. If you wear this gem then avoid selling the gold from your house. You might become arrogant and eventually your reputation shall get affected. Your courage and influence might get reduced substantially. Your father might

have to face some adverse circumstances.

For your Taurus ascendant Mars is the lord of 2nd and 12th house. Mars is inauspicious for you so by wearing its gem coral your physical weakness and blood related elements might trouble you. It might bring losses from from outer connections and faraway places. It would create problems in matters related to mother, property and house etc. This shall be highly negative for marital bliss and profession. Your expenses might turn uncontrollable after wearing it.

### **Yellow-Sapphire**

The planet Jupiter placed in the second house of your horoscope is incapable of yielding all auspicious results so by wearing its gem yellow sapphire you might face financial problems & wrong calculation of your taxes. The government taxes might test your patience. Progress in industrial development cannot be expected. It can cause the loss of wealth and reputation in work related to gold, silver, bank, religious institution, government job, industrial units, legal work, educational institute and temple etc. You shall have to put in lot of efforts in the accumulation of wealth. You might not remain very humble in your behavior. You shall be cautious about your reputation.

For your Taurus ascendant Jupiter is the lord of 8th and 11th house. It is inauspicious for you so by wearing its gem yellow sapphire there won't be improvement in your inflow of money through your hard work. It cannot enhance your longevity and protect you from difficulties of life. This gem is not auspicious for your education and issue comfort. Similarly, it can also not overcome the difficulties from the inflow of money. This gem can bring misfortunes and difficulties for you.

### **Pearl**

The planet Moon placed in 10th house is incapable of generating all auspicious results therefore by wearing its gem pearl. You might have to face few health related troubles. This gem won't prove auspicious for your finance as well as health. It would give you mental tensions. You would be facing difficulties

in creative works. Similarly it would be difficult to generate gains from artistic fields. The gem pearl would turn you excessively sensitive. By wearing this gem your mental health might also get affected. The financial condition of your father might deteriorate. You won't get benefited from the wealth and happiness attain from your father. In addition to that you would worry about your children. The gem pearl might increase your unnecessary expenses.

For your Taurus ascendant Moon is lord of 3rd house. Moon is not auspicious for you so by wearing its gem pearl you won't be able to increase your influence. You would not be getting any significant improvement in your intelligence, education and issue comfort. You would not be getting the cooperation of your siblings and this gem shall not keep you contented. It would not develop your destiny and you would not be getting cooperation and support of people in following religious path.

### **Gem Recommendation as Per Dasha**

**ÒLÊ**

**(22/02/2026 - 26/02/2028)**

In the Dasha of ÒLÊ it would be excellent to wear Emerald, Diamond, Cat's eye or Blue-Sapphire. You must wear the above-mentioned gems for obtaining the complete results of Dasha.

Ruby, Gomed or Coral are auspicious gems. For obtaining best results in this Dasha the best gem out of the given should be selected as per its signification.

Yellow-Sapphire is inauspicious gem for you and Pearl is forbidden gem for you. It is better not to use inauspicious and forbidden gems as they cause lot of losses without giving any gain.

**hÊLõ**  
(26/02/2028 - 26/02/2048)

In the Dasha of hÊLõ it would be excellent to wear Emerald, Blue-Sapphire or Diamond. You must wear the above-mentioned gems for obtaining the complete results of Dasha.

Gomed, Cat's eye or Ruby are auspicious gems. For obtaining best results in this Dasha the best gem out of the given should be selected as per its signification.

Coral or Yellow-Sapphire are inauspicious gems for you. and Pearl is forbidden gem for you. It is better not to use inauspicious and forbidden gems as they cause lot of losses without giving any gain.

**jÊdàÔ**  
(26/02/2048 - 25/02/2054)

In the Dasha of jÊdàÔ it would be excellent to wear Emerald, Ruby or Blue-Sapphire. You must wear the above-mentioned gems for obtaining the complete results of Dasha.

Diamond, Gomed, Cat's eye or Coral are auspicious gems. For obtaining best results in this Dasha the best gem out of the given should be selected as per its signification.

Yellow-Sapphire or Pearl are inauspicious gems for you. It is better not to use inauspicious and forbidden gems as they cause lot of losses without giving any gain.

**Qtõ**  
(25/02/2054 - 26/02/2064)

In the Dasha of Qtõ it would be excellent to wear Emerald, Blue-Sapphire, Ruby or Diamond. You must wear the above-mentioned gems for obtaining the complete results of Dasha.

Gomed or Cat's eye are auspicious gems. For obtaining best results in this Dasha the best gem out of the given should be selected as per its signification.

Pearl, Coral or Yellow-Sapphire are inauspicious gems for

you. It is better not to use inauspicious and forbidden gems as they cause lot of losses without giving any gain.

**c=f**  
(26/02/2064 - 26/02/2071)

In the Dasha of c=f it would be excellent to wear Blue-Sapphire, Ruby, Diamond or Emerald. You must wear the above-mentioned gems for obtaining the complete results of Dasha.

Cat's eye, Coral or Gomed are auspicious gems. For obtaining best results in this Dasha the best gem out of the given should be selected as per its signification.

Yellow-Sapphire or Pearl are inauspicious gems for you. It is better not to use inauspicious and forbidden gems as they cause lot of losses without giving any gain.

**eĐkÊ**  
(26/02/2071 - 25/02/2089)

In the Dasha of eĐkÊ it would be excellent to wear Blue-Sapphire, Emerald, Diamond or Gomed. You must wear the above-mentioned gems for obtaining the complete results of Dasha.

Ruby or Cat's eye are auspicious gems. For obtaining best results in this Dasha the best gem out of the given should be selected as per its signification.

Yellow-Sapphire is inauspicious gem for you and Coral or Pearl are forbidden gems for you. It is better not to use inauspicious and forbidden gems as they cause lot of losses without giving any gain.

**NÊeÊ**  
(25/02/2089 - 26/02/2105)

In the Dasha of NÊeÊ it would be excellent to wear Blue-Sapphire, Ruby or Emerald. You must wear the above-mentioned gems for obtaining the complete results of Dasha.

Diamond, Gomed, Cat's eye, Yellow-Sapphire or Coral are auspicious gems. For obtaining best results in this Dasha the

best gem out of the given should be selected as per its signification.

Pearl is inauspicious gem for you It is better not to use inauspicious and forbidden gems as they cause lot of losses without giving any gain.

**h\_p**  
**(26/02/2105 - 27/02/2124)**

In the Dasha of h\_p it would be excellent to wear Blue-Sapphire, Emerald or Diamond. You must wear the above-mentioned gems for obtaining the complete results of Dasha.

Gomed, Ruby or Cat's eye are auspicious gems. For obtaining best results in this Dasha the best gem out of the given should be selected as per its signification.

Yellow-Sapphire is inauspicious gem for you and Coral or Pearl are forbidden gems for you. It is better not to use inauspicious and forbidden gems as they cause lot of losses without giving any gain.

**a^**  
**(27/02/2124 - 26/02/2141)**

In the Dasha of a^ it would be excellent to wear Emerald, Blue-Sapphire, Diamond or Ruby. You must wear the above-mentioned gems for obtaining the complete results of Dasha.

Gomed or Cat's eye are auspicious gems. For obtaining best results in this Dasha the best gem out of the given should be selected as per its signification.

Coral or Yellow-Sapphire are inauspicious gems for you. and Pearl is forbidden gem for you. It is better not to use inauspicious and forbidden gems as they cause lot of losses without giving any gain.

# bDNÔ e[ð

ଆପକା ଶୁଭ ରତ୍ନ - ଟରକ୍ୱାଇଜ

ଆପକା ଜନ୍ମ ବୃଷ ରାଶି କେ ଲଗ୍ନ ମେ ଦୁଆ ହେ । ଜିସକା ସ୍ତ୍ରୀମୀ ଗ୍ରହ ଶୁକ୍ର ହୋତା ହେ । ଟରକ୍ୱାଇଜ ରତ୍ନ ଶନି ଗ୍ରହ କେ ଲିୟେ ଧାରଣ କିୟା ଜାତା ହେ ଓର ଶନି ବୃଷ ରାଶି କେ ଲଗ୍ନ କେ ଜାତକୋ କେ ଲିୟେ ଭାଗ୍ୟ ରତ୍ନ ହୋତା ହେ । କ୍ୟୋଙ୍କି ଶନି କୀ ମକର ରାଶି ବୃଷ ଲଗ୍ନ ସେ ନବମ ଭାବ ମେ ଛିତ ହୋତୀ ହେ । କିସୀ ଭୀ ଜାତକ କେ ଲିୟେ ଭାଗ୍ୟ କା ପ୍ରବଲ ହୋନା ସବସେ ଅଧିକ ମହତ୍ୱପୂର୍ଣ ହୋତା ହେ କ୍ୟୋଙ୍କି କିସୀ ଭୀ କିୟେ ଗୟେ ପ୍ରୟସ ଯୁ କାର୍ଯ୍ୟ କେ ପରିଶାମ ମେ ଭାଗ୍ୟ ଉପ୍ପେରକ କା କାର୍ଯ୍ୟ କରତା ହେ, ଯହ୍ନ ଠୀକ ଉସୀ ପ୍ରକାର କାର୍ଯ୍ୟ କରତା ହେ ଜେସେ କିସୀ ରାସାୟନିକ କ୍ରିୟା ମେ ଉପ୍ପେରକ କା କାର୍ଯ୍ୟ ହୋତା ହେ ।

ଅତଃ ବୃଷ ରାଶି କେ ଲଗ୍ନ ବାଲେ ଜାତକୋ କୋ ଟରକ୍ୱାଇଜ ରତ୍ନ ଧାରଣ କରକେ ଶନି କୋ ବଲ୍‌ବାନ ବନାନା, ପୁଜା, ଅନୁଷ୍ଠାନ, ମନ୍ତ୍ର ପୁଜା ଆଦି କରନା ଶ୍ରେଷ୍ଠ ମାନା ଜାତା ହେ । ଇସ ରତ୍ନ କୋ ଯଦି ଅଙ୍ଗୁଠୀ ମେ ଧାରଣ କିୟା ଜାତେ ତୋ ଜାତକ କୋ ସଭା ଲାଭ ମିଲେକେ ଅର୍ଥାତ ଜାତକ ସୁଖୀ, ପ୍ରସନ୍ନଚିତ, ସୁସ୍ଥ ଜୀବନ ବ୍ୟତୀତ କରତେ ଦୁଃଖ ଆନନ୍ଦପୂର୍ଣ ଜୀବନ ବ୍ୟତୀତ କରତା ହେ ତଥା ଜାତକ କେ ଭାଗ୍ୟ କୋ ବୃଦ୍ଧିକାତା ହେ । ବୈସେ ଭୀ ଶନି ସେବକ କା ପ୍ରତିନିଧି ଗ୍ରହ ହେ ଅର୍ଥାତ ଯଦି ଜାତକ ସରକାରୀ ଯୁ ପ୍ରାଇବେଟ ନୌକରୀ ମେ ହେ ତୋ ନୌକରୀ ମେ ପ୍ରମୋଶନ ବ ଆୟ ବୃଦ୍ଧି କେ ସାଥ-ସାଥ ଅଧିକାର ଭୀ ପ୍ରଦାନ କରତା ହେ । ସାଥ ହୀ ଅନ୍ୟ କର୍ମଚାରୀଗଣୋ କା ସହଯୋଗ ଭୀ ପ୍ରାପ୍ତ ହୋତା ହେ ।

ଇସ ରତ୍ନ କୋ ଧାରଣ କରନେ ସେ ଜାତକ କୋ ସେବକୋ କା ସହଯୋଗ ତଥା ଅଧୀନସ୍ଥ କର୍ମଚାରୀୟୋ କୀ ଶୁଭକାମନାଏଂ ଭୀ ପ୍ରାପ୍ତ ହୋତୀ ହେ । ଜିସକୋ ଜୋଡ଼ୋ କେ ରୋଗ ହୋ ଯୁ ଲାଲ୍‌ଲାଜ ରୋଗୀ ହୋ ତୋ ଉନକୋ ଭୀ ଇସ ରତ୍ନ କୋ ଧାରଣ କରନେ ସେ ଲାଭ ପ୍ରାପ୍ତ ହୋତା ହେ ତଥା ଲାଲ୍‌ଲାଜ ରୋଗୋ ସେ ମୁକ୍ତି ଦିଲାତା ହେ ।

ଟରକ୍ୱାଇଜ କୋ ଅଙ୍ଗୁଠୀ ବନାକର ସୀଧେ ହାଥ କୀ ମଧ୍ୟମା ଅଙ୍ଗୁଳୀ ମେ ଧାରଣ କିୟା ଜାତା ହେ । କ୍ୟୋଙ୍କି ମଧ୍ୟମା ଅଙ୍ଗୁଳୀ ହସ୍ତରେଖା ଶାସ୍ତ୍ର ମେ ଶନି କୀ ଅଙ୍ଗୁଳୀ ମାନୀ ଜାତୀ ହେ । ଟରକ୍ୱାଇଜ ଶନି ଗ୍ରହ କା ରତ୍ନ ହେ, ଅତଃ ଇସକେ ବାର ସ୍ତ୍ରୀମୀ ଅର୍ଥାତ ଶନିବାର କୋ ହୀ ଧାରଣ କିୟା ଜାତା ହେ । ଇସକୋ ଧାରଣ କରନେ କା ଉପଯୁକ୍ତ ସମୟ ସାୟୁକ୍ତାଲ ଶନି କୀ ହୋରା ମେ ଧାରଣ କରନା ଶ୍ରେଷ୍ଠ ହୋତା ହେ । ଶନିବାର କେ ଦିନ ସୂର୍ଯ୍ୟସ୍ଥ କେ ସମୟ ଶନି କୀ ହୋରା ମେ ଧାରଣ କରନା ସର୍ବଶ୍ରେଷ୍ଠ ମାନା ଗୟା ହେ । ଟରକ୍ୱାଇଜ କୋ ଯଦି ଶନିବାର କେ ସାଥ-ସାଥ ଶନି କେ ନକ୍ଷତ୍ର ଅର୍ଥାତ୍ ପୁଷ୍ୟ, ଅନୁରାଧା ଓର ଭାଦ୍ରପଦ ମେ ଧାରଣ କିୟା ଜାତେ ତୋ ବହୁ ଓର ଭୀ ଉତ୍ତମ ହୋତା ହେ ।

ଟରକ୍ୱାଇଜ କୋ ଧାରଣ କରନେ ସେ ପୂର୍ବ ଇସକୋ ଗଙ୍ଗାଜଳ ଏବଂ ପଞ୍ଚାମୃତ ସେ ଶୁଦ୍ଧ କରକେ, ଲକଡ଼ୀ କେ ଏକ ପଟରେ ପର ନୀଲେ ଯୁ କାଲେ ରଙ୍ଗ କେ କପଡ଼େ ପର ରଖକର ଇସକେ ସମ୍ପୂର୍ଣ, ଧୂପ, ଦୀପ, ଅଗରବତ୍ତୀ ଜଳାକର, ଶନି କେ ୧୦୮ ମନ୍ତ୍ରୋ କା ଜାପ କରକେ ଇସେ ଉର୍ଜାବାନ ବନାକର ମାଥେ ସେ ଲଗାକର ସୀଧେ ହାଥ କୀ ମଧ୍ୟମା ଅଙ୍ଗୁଳୀ ମେ ଧାରଣ କରନା ବାହିଷ ।

### ଶନି କା ମନ୍ତ୍ର - ଓଁ ଶଂ ଶନୈଶ୍ଚରାୟ ନମଃ

ଇସକୋ ଧାରଣ କରନେ କେ ପଶ୍ଚାତ ଯଦି ଶନି ସେ ସମ୍ପୂର୍ଣ୍ଣ ପଦାର୍ଥ ଜେସେ ସରସୋ କା ତେଲ, କାଲା ରତ୍ନ ସବା ମୀଟର କାଲା କପଡ଼େ କା ଦାନ କରୋ ତୋ ଟରକ୍ୱାଇଜ କା ଅଙ୍ଗୁଠୀ ଧାରଣ କରନା ଓର ଭୀ ଅଧିକ ଫଳଦାୟୀ ହୋତା ହେ । ଇସକେ ଅତିରିକ୍ତ ଅଙ୍ଗୁଠୀ ଧାରଣ କରନେ କେ ପଶ୍ଚାତ ଭୀ ପ୍ରତିଦିନ ଶନି କା ୧୦୮ ବାର ସ୍ତ୍ରୀମୀ କେ ପଶ୍ଚାତ ମନ୍ତ୍ର ପାଠ କରୋ । ଶନି ମନ୍ଦିର ମେ ଶନିଦେବ କୀ ମୂର୍ତ୍ତି ପର ସରସୋ କା ତେଲ କା ଅଭିଷେକ କରାୟୋ ତୋ ଯହ୍ନ ଟରକ୍ୱାଇଜ କୀ ଅଙ୍ଗୁଠୀ ଆପକୋ ଲଗାତାର ଶୁଭ ଫଳ ଦେତୀ ରହେଗୀ । ପ୍ରତ୍ୟେକ ଶନିବାର କୋ ଶନି ଚାଲାସା କା ପାଠ ଭୀ ଇସମେ ଅଧିକ ଶୁଭକାରୀ ସାବିତ ହୋତା ହେ ।



ବୃଷ ଲଗ୍ନ ବାଲେ ଜାତକ ଯୁଦ୍ଧି ଚରକ୍ମାଲକ କୀ ଅକ୍ଷୁଠୀ ବିଧି ବିଧାନ କେ ସାଥ ଧାରଣ କରତେ ହୈ ୪୭° ମନ୍ତ୍ର ଜାପ ଦ୍ୱାରା ସିଦ୍ଧ କରତେ ରହତେ ହୈ ତୋ ବେ ଆଜୀବନ ଭାଗ୍ୟଶାଳୀ ବ୍ୟକ୍ତି କେ ରୂପ ମେ ସୁଖୀ, ସମୃଦ୍ଧିଶାଳୀ ୪୭° ଶାନ୍ତିପୁର୍ଣ୍ଣ ଜୀବନ ପ୍ରାପ୍ତ କରତେ ହୈ ।



## ଝରଝରଦୁଝରଝର

Rudraksha is a Sanskrit word. If we split this word into two we get these two words Rudra and Aksha. Rudra means Lord Shiva and Aksha means Aansu(tears) of Lord Shiva. According to Hindu Mythology tears of Shiva fell on earth in the form of Rudraksha tree. The Rudraksha tree belongs to Elaeocarpaceae family and is as huge as the Banyan tree which has seed covered with pulp and outer skin. After drying the skin turns black and grooves appear on the surface running from apex to the bottom, there by demarcating clear areas called 'Mukha or faces'. The Rudraksha are classified on the basis of number of faces, which can range from one to twenty one.

Sometimes Rudraksha are found in twins which are considered to be symbols of Lord Shiva and Parvati (Goddess). They are known as Gauri Shankar Rudraakshas. In the same way if three Rudrakshas are together they are considered the symbol of Shiva, Shakti and Ganesha or Bramha, Vishnu, Mahesh. But these types of Rudrakshas are very rarely available. Scriptures like Rudraksha Jabalopanished, Shiva Purana, Devi Purana and Padma Purana extol the value of Rudraksha seeds.

In general all Gods are fond of Rudrakshas but it is believed that it is most favourite of Lord Shiva. Modern scientific research came out with positive results about Rudraksha. It is found that it stores electromagnetic properties, which influences human physiology. Each type of Rudraksha has its own influence and property. Rudraksha is worn to get beneficial results and is helpful in curing diseases like epilepsy, hypertension, blood pressure, stress, whooping cough, wounds. Wearing of Rudraksha not only pleases Lord Shiva but also brings blessings of Lord Vishnu, Durga, and Ganesh and Navgrahas (nine planets) it reduces the ageing process and brings peace and harmony in life.

In Hindi, Bengali, Sanskrit, Bhojpuri, Gujrati and Panjabi it is known by the name Rudraksha. In Tamil, Kannad and Telgu it is

According to Hindu Mythology Rudraksha of Nepal is best in the world. Goddess of wealth always stays in the house where Rudraksha is worshipped. Rudraksha frees you from all the sins committed knowingly or unknowingly. Rudraksha fulfils your aspirations. It prevents sudden death. It frees you from worries, satiates the wrath of Gods, eliminates diseases and causes auspicious. It gives mental peace & brings peace to home. It is auspicious for business, wealth and prosperity. Controls temper and blood pressure. Wear Rudraksha for reputation, glory, name and fame.

It enhances your will power and memory. It is highly beneficial for high blood pressure, stomach disorder and obstruction from spirits. Rudraksha can be worn by anybody irrespective of age, sex and Rashi (Moon Sign). It frees you from problems and brings gain of progeny. Rudraksha never causes any negative impact; it is beneficial in every condition. Pregnant woman feels secure, protected, and gets rid of any type of fear after wearing it. Rudraksha causes union in the family and enhances mutual love, affection and respect. It enhances attraction of personality. Rudraksha is the favourite ornament of Lord Shiva. One faced Rudraksha has all above-mentioned qualities.

#### Significance of Rudrakshas at a Glance

1 Faced - Sun - Health, success, reputation, self-confidence, spirituality, happiness, sudden financial gains, development of personality, victory over enemies, good for rulers, administrators, kings and immense power.

2 Faced - Moon - Marital happiness, mental peace, contentment, good luck, concentration of mind, spiritual progress, and harmony in the family, business, and good for females.

3 Faced - Mars - Victory over enemies, removal of blood related diseases.

4 Faced - Mercury - Education, knowledge, intelligence, spiritual and discrimination, concentration, expression, communication skills.

5 Faced - Jupiter - Physical, Mental and spiritual strength, mental peace and happiness.

6 Faced - Venus - Love life, sexual power, attraction, strong memory, sharp intellect, accomplishment of tasks and amazing success in business.

7 Faced - Saturn - Removes malefic effects of Saturn, attainment of wealth, glory and victory, success in business.

## Your Horoscope and Rudraksha

Your Sthir Lagna Taurus makes you attractive, magnetic & stable by nature. You always like to complete the task undertaken by you. You are hardworking and have the capacity to work continuously. You are the slave of love but can't be handled forcibly and in that situation you turn obstinate. It becomes almost impossible to get the things done when you turn stubborn. The element of Taurus is earth therefore nobody can be as tolerant as you are. You go on tolerating till the time you can. You love to work in a well-planned manner. You are highly organized and keep everything in order & complete the task undertaken by you. You get attracted towards each beautiful thing easily.

For Taurus lagna Venus is 6th house lord therefore badly placed and afflicted Venus does not give very auspicious results regarding health and debts etc. It creates obstacles on your life path. It is Lagna lord also so after hard work you succeed in accomplishing the task undertaken. Jupiter is the lord of 8th and 11th house because of which you can get sudden betrayal, treachery and losses in matters related to management and finance.

Mars is the lord of 12th and 7th house therefore it is inauspicious for you. The placement of Rashi of Mars in 12th reduces the strength of Mars. 12th lord Mars can reduce your energy level substantially because of loss of energy in surgery, quarrels, and accidents etc.

6th, 8th and 12th house are known as trik bhavas. The lords of these houses and the planets placed there in create obstacles in life. 6th house denotes diseases, debts and troubles created by enemies. On account of it the house occupied by this planet loses its auspiciousness. The native becomes the victim of troubles like diseases, debts and troubles from enemies thereby affecting your physical, mental, social, financial and domestic conditions very badly. Among trik bhavas 8th house is most notorious and inauspicious. It destroys the auspicious results

of the house occupied by it. The maleficence of the planets occupying 8th house increases and eventually the inauspicious results also increase. The 3rd trik bhava is 12th house. It denotes various types of expenses and that is why known as house of expenses. This is house of loss, tax, sleep, bed pleasure, jail, foreign journey and salvation. The lord and the planet placed in 12th house increases the inauspiciousness of this house.

In your horoscope moon placed in 12th house causes troubles like tensions, health troubles during your childhood years. You tolerate negativity and problems, enemies are more in number. It can make you a liar and cause financial losses. This type of placement of moon is considered equally bad for health too.

For getting the auspicious results of all these planets you should wear Rudraksha Kavach comprised of 2, 3, 5, 6 faced Rudrakshas. This Kavach should be worn in white thread on Monday after sanctifying it with sprinkling of Gangajal and chanting of "Om Namah Shivay" Mantra atleast 108 times. After that offer raw milk to lord Shiva and donate as per your strength. This would help you in overcoming the difficult situations of life. There shall be substantial relief in serious problems too. For giving extra strength to all the planets of horoscope you can also wear Shivkripa Rudraksha Mala comprised of 1 to 14 faced Rudrakshas which yields miraculous results.

The above kavacham can be worn throughout life irrespective of the consideration of dasha and gochar. This kavach is essential for overcoming the malefic effects of lagna and the planets placed in lagna.

## ସାଢ଼େସାତି ବିଚାର

ତମ୍ଭୁ ଠାରୁ ଜନ୍ମ କୁଣ୍ଡଳୀରେ ଯଦି ଗୋଚରବଣ ଶନି ଦ୍ଵାଦଶ, ପ୍ରଥମ ଏବଂ ଦ୍ଵିତୀୟ ସ୍ଥାନରେ ଅବସ୍ଥାନ କରିଥାଏ ତେବେ ଏହା କୁ ସାଢ଼େସାତି ଦଶା କୁହାଯାଏ । ଶନି ଚନ୍ଦ୍ରର ଚତୁର୍ଥ ଓ ଅଷ୍ଟମ ଭାଗରେ ଅବସ୍ଥାନ କରିଥିଲେ ହାଲିଆର ପ୍ରଭାବ (ଦଶା) ପଡ଼େ । ଯାହା ଦ୍ଵାରା ଶାରୀରିକ, ମାନସିକ ଇତ୍ୟାଦି କଷ୍ଟ ଭୋଗ କରିବାକୁ ପଡ଼ିଥାଏ । କିନ୍ତୁ ସମୟେ ସମୟେ ଏହାର ଫଳ ଭଲପି ପ୍ରଦାନ କରିବାରେ ସହାୟକ ହୋଇଥାଏ । ସାଢ଼େସାତିର ପ୍ରଭାବ ସାତ ବର୍ଷ ଏବଂ ହାଲିଆର ପ୍ରଭାବ ଅଢ଼େଇ ବର୍ଷ ବଳବତ୍ତର ରହିଥାଏ ।

ସାଧାରଣତ ପ୍ରତ୍ୟେକ ମନୁଷ୍ୟ ଜୀବନରେ ସାଢ଼େସାତି ତିନି ଥର ଆସିଥାଏ । ପ୍ରଥମ ଥର ବାଲ୍ୟ କାଳରେ ଦ୍ଵିତୀୟ ଥର ଯୁବକାବସ୍ଥାରେ ତଥା ତୃତୀୟ ଥର ବୃଦ୍ଧାବସ୍ଥାରେ । ପ୍ରଥମ ସାଢ଼େସାତିର ପ୍ରଭାବ ଶିକ୍ଷା ଏବଂ ମାତା-ପିତାଙ୍କ ଉପରେ ପଡ଼ିଥାଏ । ଦ୍ଵିତୀୟ ସାଢ଼େସାତିର ପ୍ରଭାବ କାର୍ଯ୍ୟକ୍ଷେତ୍ର ତଥା ତୃତୀୟ ସାଢ଼େସାତିର ପ୍ରଭାବ ସ୍ଵାସ୍ଥ୍ୟ ଉପରେ ଅଧିକ ପ୍ରଭାବ ପକାଇଥାଏ ।

ନିମ୍ନଲିଖିତ ତାଲିକାରେ ସାଢ଼େସାତିର ସମୟ ତଥା ହାଲିଆର ଶୁଭା-ଶୁଭ ଫଳ ଇତ୍ୟାଦି କରାଯାଇ ଅଛି ।

### ପ୍ରଥମ ଚକ୍ର:

|                                  |                       |                       |                       |
|----------------------------------|-----------------------|-----------------------|-----------------------|
| ସପ୍ତ ଶନିଙ୍କ ପ୍ରଥମ ଅଢ଼େଇ ବର୍ଷ     | 22/02/2026-03/06/2027 | 20/10/2027-23/02/2028 | -----                 |
| ସପ୍ତ ଶନିଙ୍କ ଦ୍ଵିତୀୟ ଅଢ଼େଇ ବର୍ଷ   | 03/06/2027-20/10/2027 | 23/02/2028-08/08/2029 | 05/10/2029-17/04/2030 |
| ସପ୍ତ ଶନିଙ୍କ ତୃତୀୟ ଅଢ଼େଇ ବର୍ଷ     | 08/08/2029-05/10/2029 | 17/04/2030-31/05/2032 | -----                 |
| ଚତୁର୍ଥ ସ୍ଥାନରେ ଶନିଙ୍କ ଅଢ଼େଇ ବର୍ଷ | 13/07/2034-27/08/2036 | -----                 | -----                 |
| ଅଷ୍ଟମ ସ୍ଥାନରେ ଶନିଙ୍କ ଅଢ଼େଇ ବର୍ଷ  | 11/12/2043-23/06/2044 | 30/08/2044-08/12/2046 | -----                 |

### ଦ୍ଵିତୀୟ ଚକ୍ର:

|                                  |                       |                       |                       |
|----------------------------------|-----------------------|-----------------------|-----------------------|
| ସପ୍ତ ଶନିଙ୍କ ପ୍ରଥମ ଅଢ଼େଇ ବର୍ଷ     | 14/05/2054-02/09/2054 | 05/02/2055-07/04/2057 | -----                 |
| ସପ୍ତ ଶନିଙ୍କ ଦ୍ଵିତୀୟ ଅଢ଼େଇ ବର୍ଷ   | 07/04/2057-27/05/2059 | -----                 | -----                 |
| ସପ୍ତ ଶନିଙ୍କ ତୃତୀୟ ଅଢ଼େଇ ବର୍ଷ     | 27/05/2059-11/07/2061 | 13/02/2062-07/03/2062 | -----                 |
| ଚତୁର୍ଥ ସ୍ଥାନରେ ଶନିଙ୍କ ଅଢ଼େଇ ବର୍ଷ | 24/08/2063-06/02/2064 | 09/05/2064-13/10/2065 | 03/02/2066-03/07/2066 |
| ଅଷ୍ଟମ ସ୍ଥାନରେ ଶନିଙ୍କ ଅଢ଼େଇ ବର୍ଷ  | 05/02/2073-31/03/2073 | 23/10/2073-16/01/2076 | 11/07/2076-11/10/2076 |

### ତୃତୀୟ ଚକ୍ର:

|                                  |                       |                       |                       |
|----------------------------------|-----------------------|-----------------------|-----------------------|
| ସପ୍ତ ଶନିଙ୍କ ପ୍ରଥମ ଅଢ଼େଇ ବର୍ଷ     | 20/03/2084-21/05/2086 | 21/05/2086-08/02/2087 | -----                 |
| ସପ୍ତ ଶନିଙ୍କ ଦ୍ଵିତୀୟ ଅଢ଼େଇ ବର୍ଷ   | 21/05/2086-21/05/2086 | 08/02/2087-18/07/2088 | 31/10/2088-05/04/2089 |
| ସପ୍ତ ଶନିଙ୍କ ତୃତୀୟ ଅଢ଼େଇ ବର୍ଷ     | 18/07/2088-31/10/2088 | 05/04/2089-19/09/2090 | 25/10/2090-21/05/2091 |
| ଚତୁର୍ଥ ସ୍ଥାନରେ ଶନିଙ୍କ ଅଢ଼େଇ ବର୍ଷ | 02/07/2093-18/08/2095 | -----                 | -----                 |
| ଅଷ୍ଟମ ସ୍ଥାନରେ ଶନିଙ୍କ ଅଢ଼େଇ ବର୍ଷ  | 03/12/2102-29/11/2105 | -----                 | -----                 |

### ଶନିର ହୈୟା ଫଳ

#### ହାଲିଆ ର ପ୍ରକାର

|                                  |
|----------------------------------|
| ସପ୍ତ ଶନିଙ୍କ ପ୍ରଥମ ଅଢ଼େଇ ବର୍ଷ     |
| ସପ୍ତ ଶନିଙ୍କ ଦ୍ଵିତୀୟ ଅଢ଼େଇ ବର୍ଷ   |
| ସପ୍ତ ଶନିଙ୍କ ତୃତୀୟ ଅଢ଼େଇ ବର୍ଷ     |
| ଚତୁର୍ଥ ସ୍ଥାନରେ ଶନିଙ୍କ ଅଢ଼େଇ ବର୍ଷ |
| ଅଷ୍ଟମ ସ୍ଥାନରେ ଶନିଙ୍କ ଅଢ଼େଇ ବର୍ଷ  |

#### ଫଳ

|      |
|------|
| ଶୁଭ  |
| ଅଶୁଭ |
| ଶୁଭ  |
| ସମ   |
| ସମ   |

#### କ୍ଷେତ୍ର

|                 |
|-----------------|
| ଧନ ଅର୍ଜନ        |
| ବ୍ୟୟ            |
| ସ୍ଵାସ୍ଥ୍ୟ       |
| ଶକ୍ତି ହାନି      |
| ବିବାହ ରେ ଅରିଷ୍ଟ |

## ସାଢ଼େସାତି ଉପାୟ

ଶନିଙ୍କ ସାଢ଼େସାତିର ଅଶୁଭ ପ୍ରଭାବ ଗୁଡ଼ିକୁ କମ କରିବା ପାଇଁ ଦାନ, ପୂଜା, ବ୍ରତ ଓ ମନ୍ତ୍ର ଆଦି ଉପାୟ କରା ଯାଇ ପାରେ ଏବଂ ଉପରୋକ୍ତ କର୍ମ ପାଇଁ ଶନିବାର ଉତ୍ତମ ଅଟେ । ଏହି ଦିନ କଳା କମ୍ପଳ, ହରଡ଼ ଡାଲି, ଶୋରିଷ, ଚମଡ଼ା ଚପଲ, କଳା କପଡ଼ା, ମୋଟା ପନିପରିବା, ଶୋରିଷ ତଥା ଲୁହା ଦାନ କରିବା ଉଚିତ । ଶନି ପୂଜା ଏବଂ ଶନିବାର ବ୍ରତ ପାଳନ କରିବା ଉଚିତ । ତତ୍ ସଙ୍ଗେ ସଙ୍ଗେ କୌଣସି ବିଜ୍ଞ ବ୍ୟକ୍ତିଙ୍କ ଦ୍ଵାରା ୧୯୦୦୦ ଥର ନିମ୍ନ ମନ୍ତ୍ର କୁ ଜପ କରିବା ଉଚିତ ।

### ଓଁ ପ୍ରାଁ ପ୍ରାଁ ଶ୍ରେୀଂ ସଃ ଶନୈଃଶ୍ଵରାୟ ନମଃ । ।

ଶନିଙ୍କ ସାଢ଼େସାତି ଶାରୀରିକ, ମାନସିକ, ପାରିବାରିକ ଶାନ୍ତି ଏବଂ ସମୃଦ୍ଧି, ଆର୍ଥିକ ସୁବୃଦ୍ଧତା ତଥା କାର୍ଯ୍ୟ କ୍ଷେତ୍ରରେ ଉନ୍ନତି ପାଇଁ ଆପଣଙ୍କୁ ନିମ୍ନଲିଖିତ ମନ୍ତ୍ର କୁ ୧୨୫୦୦୦ ଥର ଜପ କରିବାକୁ ପଡ଼ିବ ।

### ଓଁ ତ୍ଵୟମ୍ବକମ ଯଜ୍ଞମହେ ସୁଗନ୍ଧି ପୁଷ୍ଟିବର୍ଧନମ୍ ।

### ଉର୍ବାରୁକମିବ ବନ୍ଧନାମୃତୋମ୍ନୁଷ୍ଣାୟ ମା ମୃତାତ । ।

ବିକଳ ରୂପେ ନିମ୍ନଲିଖିତ ମନ୍ତ୍ର ପ୍ରତିଦିନ ୧୦୮ ଥର ଜପ କରନ୍ତୁ ।

### ଓଁ ହୋଁ ଜ୍ଞଂ ସ ଓଁ ଭୂର୍ଭୁବ ସ୍ଵ ଓଁ । ।

ଶନିଙ୍କ ସାଢ଼େସାତିର ଶୁଭତ୍ଵ କୁ ବଢ଼ାଇବାକୁ ହେଲେ ଶନିବାର ଦିନ ଆପଣ ୨/୪ ରତିର ନୀଳା ରତ୍ନ ପଞ୍ଚାଧାରୁ (ସୁନା, ରୂପା, ତମ୍ବା, ଲୁହା ଓ ଦସ୍ତା) କିମ୍ବା ଘୋଡ଼ାର ନାଳ ବା ନାବର କାଳରେ ନିର୍ମିତ ମୁଦି ଧାରଣ କରନ୍ତୁ । ଲୁହା ମୁଦି ଆପଣ ଡାହାଣ ହାତର ମଧ୍ୟମା ଆଙ୍ଗୁଳିରେ ଧାରଣ କରନ୍ତୁ ।

ମୁଦି ଶୁକ୍ଳପକ୍ଷ ଶନିବାର ଦିନ ସଂନ୍ଧ୍ୟା ସମୟରେ ସୂର୍ଯ୍ୟାସ୍ତ ପରେ ଧାରଣ କରିବେ । ପୁଷ୍ୟା, ଅନୁରାଧା କିମ୍ବା ଉତ୍ତରା ଭାଦ୍ରପଦ ନକ୍ଷତ୍ର ଆଦି ଏହି କାର୍ଯ୍ୟ ପାଇଁ ପ୍ରଶସ୍ତ ଅଟେ । ଉକ୍ତ ଦିନ ଶନି ଉପବାସ କରିବେ । ମୁଦି ଧାରଣ କରିବା ପୂର୍ବରୁ ମୁଦି କୁ ଶୁଦ୍ଧ କରିବା ପାଇଁ ଏହା କୁ ଗଙ୍ଗା ଜଳରେ ସ୍ନାନ କରାଇବେ । ଧୂପ, ଦ୍ଵାପାଦି ଦ୍ଵାରା ଶନି ଦେବତାଙ୍କୁ ପୂଜା କରିବେ ଏବଂ ନିମ୍ନ ମନ୍ତ୍ର କୁ ୧୦୮ ଥର ଜପ କରିବେ । ତାପରେ ନୀଳା ରତି କୁ ମଧ୍ୟମା ଆଙ୍ଗୁଳିରେ ଧାରଣ କରିବେ ।

### ଓଁ ଶଂ ଶନୈଃଶ୍ଵରାୟ ନମଃ ।

ମୁଦି ଧାରଣ କରିସାରିବା ପରେ ଶନିଙ୍କ ଦାନ ସାମଗ୍ରୀ ଗୁଡ଼ିକୁ ଦାନ କରିଦେବେ । ଏଥିରେ, ଶନି ଦେବ ଖୁସି ହେବେ ଏବଂ ତାଙ୍କର ଅଶୁଭ ପ୍ରଭାବ ଆପଣଙ୍କ ଉପରେ ପଡ଼ିବ ନାହିଁ । ଫଳରେ, ଆପଣ ସୁଖ, ଶାନ୍ତି ତଥା ଜୀବନରେ ସମୃଦ୍ଧି ପାଇ ପାରିବେ ।

ଶ୍ରୀ ହନୁମାନ ଚାଳିଶା ଓ ହନୁମାନ ଅଷ୍ଟକ ସର୍ବଦା ପାଠ କରିବା ଉଚିତ ।

## cD = fPL aPQİDe

ଯଦି ଜାତକ ଜାତିକା କୋଷ୍ଠରେ ମଙ୍ଗଳ ଗୃହ ଧର୍ମ ଘର, ସପ୍ତମ ଘର, ଅକ୍ଷୟ ଘର କିମ୍ବା ଦ୍ଵାଦଶତମ ଘରେ ପ୍ରବଳ ହେଲେ ଏହାକୁ ମାଙ୍ଗଳିକ ଦୋଷ କୁହନ୍ତି । ମଙ୍ଗଳ ଚନ୍ଦ୍ର ସାଙ୍ଗରେ ଯୁକ୍ତ ହୋଇ ପ୍ରବଳ ହୁଏ । ଶାସ୍ତ୍ରାନୁସାରେ ଜାତକ ଓ ଜାତିକାକୁ ମାଙ୍ଗଳିକ ଦୋଷ ମୁକ୍ତ କରାଗଲେ ସୋମନେ ସୁଖରେ ବୈବାହିକ ଜୀବନ ଜାପନ କରିବେ । ଅନ୍ୟଭାବେ ଯଦି ସେମାନେ ଏଇ ଦୋଷମୁକ୍ତ ନ ହୁଅନ୍ତି ତା'ହେଲେ ଅଯଥା ସମସ୍ୟାର ସମ୍ମୁଖୀନ ହେବେ । ସୁତରାଂ ପୁରୁଷ ଓ ମହିଳା ବୈବାହିକ ଜୀବନ ଆରମ୍ଭ କରିବା ପୂର୍ବରୁ ପ୍ରଥମେ ଉଭୟଙ୍କ କୋଷ୍ଠ କୁ ଭଲ ଭାବରେ ବିଚାର କରିବା ଉଚିତ । ମାଙ୍ଗଳିକ ଦୋଷ ଭଲ ଭାବରେ ମୁକ୍ତ କରିବା ପରେ ସେମାନେ ଶାନ୍ତିପୂର୍ଣ୍ଣ ବୈବାହିକ ଜୀବନ ଜାପନ କରିପାରିବେ ।

\*\*\*\*\*

ଆପଣଙ୍କ ରାଶିଚକ୍ରରେ ନବମ ଗୃହରେ ଅବସ୍ଥାନ ଭାଗ୍ୟ ଏବଂ ଧର୍ମର ଉପସ୍ଥାପକ । ଅର୍ଥାତ୍ ଏହାର ପ୍ରଭାବରେ ଆପଣ ଭାଗ୍ୟଠାରୁ କର୍ମରେ ଆଶା ରଖିବେ । ବିଶ୍ଵାସ କରିବେ ଯେ କର୍ମ ବ୍ୟତୀତ କାହାର ଜୀବନ ସଫଳ ହୋଇପାରେନା । ଧର୍ମରେ ମଧ୍ୟ ବିଶ୍ଵାସର ଅଭାବ ରହିବ । ଆପଣ ଧର୍ମୀୟ ଆଚରଣରେ ଏବଂ ତୀର୍ଥଯାତ୍ରାରେ ଅବହେଳା କରିବେ, କିନ୍ତୁ ବୟସକାଳରେ ଧର୍ମ ଏବଂ ଭାଗ୍ୟରେ ମହତ୍ତ୍ଵ ଉପଲବ୍ଧି କରିବେ । ସମାଜରେ ଅତ୍ୟନ୍ତ ସମ୍ମାନୀୟ ବ୍ୟକ୍ତି ହେବେ । ଆପଣ ଉଦ୍ୟମ ଏବଂ କଠୋର ଶ୍ରମଦ୍ଵାରା ଅଧିକାଂଶ ପ୍ରଧାନ କାର୍ଯ୍ୟଗୁଡ଼ିକ ସମ୍ପନ୍ନ କରିବେ ।

ନବମରୁ ଦ୍ଵାଦଶତମ ଗୃହରେ ମଙ୍ଗଳର ଦୃଷ୍ଟି ଇଚ୍ଛିତ କରେ ଯେ ଆପଣ ଉଭୟ ଶୁଭ ଏବଂ ଅଶୁଭ କାର୍ଯ୍ୟରେ ପ୍ରଚୁର ଅର୍ଥବ୍ୟୟ କରିବେ ଏବଂ ସମ୍ଭବତଃ ପ୍ରଚୁର ଲାଭବାନ ହେବେ । ଏହାର ପ୍ରଭାବରେ ଆପଣ ବାଧ୍ୟତା ସମ୍ମୁଖୀନ ମଧ୍ୟ ହେବେ କିନ୍ତୁ ତାହା ରୋକିବାରେ ସମର୍ଥ ହେବେ । ଆପଣଙ୍କର ବୈବାହିକ ଜୀବନ ସୁଖମୟ ହେବ ।

ତୃତୀୟ ଗୃହରେ ମଙ୍ଗଳର ଦୃଷ୍ଟି ଆପଣଙ୍କ କର୍ମ ବୃଦ୍ଧି କରିବ ଏବଂ ସମାଜରେ ଲୋକମାନେ ଆପଣଙ୍କର ପ୍ରଭାବ ଓ ସାହାଯ୍ୟକତାକୁ ସ୍ଵୀକାର କରିବେ । ସମାଜରେ ସମ୍ମାନୀୟ ହେବେ । ଆପଣଙ୍କର ସହୋଦରଗଣ ସମର୍ଥନ କରିବେ । ଚତୁର୍ଥ ଗୃହରେ ମଙ୍ଗଳର ଦୃଷ୍ଟି ଇଚ୍ଛିତ କରେ ଯେ, ଆପଣ ଐଶ୍ଵର୍ଯ୍ୟ ଏବଂ ବିଳାସ ବେସନରେ ରହିବେ । ଏବଂ ଏହାକୁ ଉପଭୋଗ କରିବାକୁ ସକ୍ଷମ ହେବେ କିନ୍ତୁ ମାଆଙ୍କର ସ୍ଵାସ୍ଥ୍ୟ ସାଧାରଣ ରହିବ । ଅର୍ଥାତ୍ ମଙ୍ଗଳର ପ୍ରଭାବରେ ଆପଣଙ୍କର ଭାଗ୍ୟ ଉନ୍ନତ ହେବ । ଆପଣଙ୍କର ବୈବାହିକ ଜୀବନ ଶାନ୍ତିପୂର୍ଣ୍ଣ ରହିବ । ଆପଣଙ୍କ ପରିବାରକୁ ଆପଣ ଶାନ୍ତି ଓ ସୁଖ ଦେବେ ।

## କାଳଗର୍ପ ଯୋଗ

ଅଗ୍ରେ ରାହୁରଧ୍ୟ କେତୁ ସର୍ବେ ମଧ୍ୟଗତା ଗ୍ରହ ।  
ଯୋଗ ଯଃ କାଳସର୍ପୋଷୋ ଶାନ୍ତୁ ତଂ ତୁ ବିନାଶୟ ॥

ଯଦି ସମସ୍ତ(ସାତଟି) ଗ୍ରହ ରାହୁ ଏବଂ କେତୁ ମଧ୍ୟରେ ଛିତ ହୁଏ । ତାହା ହେଲେ କାଳଗର୍ପ ଯୋଗ ବନିଥାଏ । ଅର୍ଥାତ ଏହି ଯୋଗ ର ନିବାସି କିପରି କାଳଗର୍ପ ଯୋଗ ରୁ ବଞ୍ଚିବେ, ତାହାର ଉପାୟ ଆବଶ୍ୟକ । ଯାହା ଦ୍ଵାରା ଜାତକ କୁ ଶୁଭ ଯୋଗର ଫଳ ମିଳିଥାଏ ।

ଦ୍ଵାଦଶ ଘରେ ରାହୁର ଛିତି ଅନୁସାରେ କାଳଗର୍ପ ଯୋଗ ମୁଖ୍ୟତଃ ୧୨ ପ୍ରକାରର ହୋଇ ଥାଏ । ତାହା

୧. ଅନନ୍ତ ୨. କୁଳିକ ୩. ବାସୁକି ୪. ଶଙ୍ଖପାଳ ୫. ପଦ୍ମ ୬. ମହା ପଦ୍ମ ୭. ତକ୍ଷକ ୮. କର୍କୋଟକ ୯. ଶଙ୍ଖଚୂଡ଼ ୧୦. ଘାତକ ୧୧. ବିଷଧର ୧୨. ଶେଷନାଗ

କାଳଗର୍ପ ଯୋଗ ଦୁଇ ପ୍ରକାର ର ହୋଇ ଥାଏ - ଉଦିତ ଏବଂ ଅନୁଦିତ । ଯଦି ରାହୁର ସମୁଖରେ ସମସ୍ତ(ସାତଟି) ଗ୍ରହ ନିବାସି ହେଲେ ଉଦିତ କାଳଗର୍ପ ଯୋଗ ବନିଥାଏ । ଯଦି ରାହୁର ପୃଷ୍ଠରେ ସମସ୍ତ ଗ୍ରହ ନିବାସି ହେଲେ ଅନୁଦିତ କାଳଗର୍ପ ଯୋଗ ବନିଥାଏ ।

ଯଦି ରାହୁ ୦ରୁ କେତୁ ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ସମସ୍ତ ଘରେ କୌଣସି ନା କୌଣସି ଗ୍ରହ ଛିତ ହୁଏ ତାହା ହେଲେ ଏହି ଯୋଗ ପୂର୍ଣ୍ଣ ରୂପେ ଫଳିତ ହୋଇ ଥାଏ । ଯଦି ରାହୁ-କେତୁ ସହିତ ସୂର୍ଯ୍ୟ କିମ୍ବା ଚନ୍ଦ୍ର ଛିତ ଥିଲେ ଏହି ଯୋଗ ଅଧିକ ପ୍ରଭାବଶାଳି ହୋଇ ଥାଏ । ଯଦି ରାହୁ, ସୂର୍ଯ୍ୟ ଏବଂ ଚନ୍ଦ୍ର ତିନି ଗ୍ରହ ଏକା ଯାଥାରେ ଥିଲେ ଗ୍ରହଣ କାଳଗର୍ପ ଯୋଗ ବନିଥାଏ । ଏହାର ଫଳ ୧୦୦୦ ଗୁଣ ଅଧିକ ହୋଇ ଯାଏ । ଏପରି ଜାତକ ପାଇଁ କାଳଗର୍ପ ଯୋଗ ର ଶାନ୍ତି କରେଇବା ଅତି ଆବଶ୍ୟକ ।

ଯଦି ଲଗ୍ନ ଜାତକ ରେ ସମସ୍ତ(ସାତଟି) ଗ୍ରହ ରାହୁ ଏବଂ କେତୁ ମଧ୍ୟରେ ଛିତ ହୁଏ କିନ୍ତୁ ଅଂଶନୁସାରେ ଯଦି କିଛି ଗ୍ରହ ରାହୁ ଏବଂ କେତୁର ସୀମା ମଧ୍ୟରୁ ବାହାରେ ଛିତ ଥିଲେ ଆଂଶିକ କାଳଗର୍ପ ଯୋଗ କୁହା ଯାଇଥାଏ । ଯଦି କୌଣସି ଗୋଟିଏ ଗ୍ରହ ରାହୁ ଏବଂ କେତୁର ସୀମା ମଧ୍ୟରୁ ବାହାରେ ଛିତ ହୁଏ ତାହା ହେଲେ ମଧ୍ୟ ଆଂଶିକ କାଳଗର୍ପ ଯୋଗ ବନିଥାଏ ।

### କାଳଗର୍ପ ଯୋଗର ପ୍ରଭାବ

ଏହି ଯୋଗରେ ଉତ୍ପନ୍ନ ଜାତକ କୁ ମାନସିକ ଅଶାନ୍ତି, ଧନ ପ୍ରାପ୍ତିରେ ବାଧା, ସନ୍ତାନ ଅବରୋଧ, ବୈବାହିକ ଜୀବନରେ ବିବାଦ ହୋଇଥାଏ । ପ୍ରାୟତଃ ଜାତକ କୁ ଖରାପ ସମ୍ପନ୍ନ ଆସିଥାଏ । କିଛି ନା କିଛି ଅଶୁଭ ହେବାର ଆଶଙ୍କା ମନରେ ବନିଥାଏ । ଜାତକ କୁ ନିଜର କ୍ଷମତା ଏବଂ କାର୍ଯ୍ୟ କୁଶଳତା ର ପୂର୍ଣ୍ଣ ଫଳ ପ୍ରାପ୍ତ ହୋଇ ନ ଥାଏ, କାର୍ଯ୍ୟ ବିଳମ୍ବରେ ସଫଳ ହୋଇଥାଏ । ଅତୀତ ଧନ ହାନି ଏବଂ ମାନ ର କ୍ଷତି ଏହି ଯୋଗର ଲକ୍ଷଣ । ବିନା କାରଣରେ ଜାତକ କୁ ଅସାଧ୍ୟ ଜନକ ରୋଗ ଉତ୍ପନ୍ନ ହୋଇଥାଏ । ଏପରି ରୋଗ ପ୍ରତିଦିନ ପିଡ଼ା ଦେଇଥାଏ । ତଥା ଔଷଧ ନେବା ପରେ ଭି ଠିକ୍ ହୋଇ ନ ଥାଏ, କାଳଗର୍ପ ଯୋଗ ର କାରଣ ହୋଇଥାଏ ।

କାଳଗର୍ପ ଯୋଗ ର ନିର୍ଦ୍ଧାରିତ ଉପାୟ ଦ୍ଵାରା ଏହି କଷ୍ଟ ରୁ ମୁକ୍ତି ଏବଂ ସହାୟତା ପ୍ରାପ୍ତ ହୋଇଥାଏ । ଜନ୍ମପତ୍ରିକା ଅନୁସାରେ ଯେବେ ରାହୁ ଏବଂ କେତୁର ମହାଦଶା, ଅକ୍ଷୟଦଶା ଆଦି ଆସେ ସେତେବେଳେ ଏହି ଯୋଗର ଅସର ଦେଖା ଯାଇଥାଏ । ଗୋଟିଏ ରେ ରାହୁ କିମ୍ବା କେତୁର ଜନ୍ମକାଳିନ ରାହୁ, କେତୁ କିମ୍ବା ଚନ୍ଦ୍ରର ଉପରେ ଭ୍ରମଣ ଥିଲେ ମଧ୍ୟ ଏହି ଯୋଗ ପ୍ରଭାବଶାଳି ହୋଇ ଥାଏ । ସେହି ସମୟରେ ବିଶେଷ ଧ୍ୟାନ ଦେଇ ପୂଜା, ଅର୍ଚ୍ଚନା ଆଦି ବିଶ୍ଵାସର ସହିତ କରିଲେ, ଅବଶ୍ୟ ଲାଭ ହୋଇଥାଏ । ଆପଣ ୪୩ ଦିନ ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ କାଳଗର୍ପ ଯୋଗର ଯତ୍ନ ନେଇ ସୋରିସ ତେଲରେ ଦୀପ ଜାଳି ପୂଜା କଲେ ଏହି କଷ୍ଟରୁ ମୁକ୍ତି ଏବଂ ସହାୟତା ପ୍ରାପ୍ତ ହୋଇ ଥାଏ ।

## ଜାତକରେ କାଳଶର୍ପ ଯୋଗର ପ୍ରଭାବ

ଆପଣଙ୍କ ଜନ୍ମପତ୍ରିକାରେ କେବଳ ଯାତକ ନାମକ କାଳଶର୍ପ ଯୋଗ ଅନୁଦିତ ରୂପେ ଅଛି । ଅନୁଦିତ ଯୋଗ ପୂର୍ଣ୍ଣ ରୂପେ କାଳଶର୍ପ ଯୋଗର ପରିଭାଷାରେ ଆସିନଥାଏ, କିନ୍ତୁ ଏହାର କିଛି ଫଳ ଅବସ୍ୟ ମିଳିଥାଏ । ପରିଣାମ ସ୍ୱରୂପ ଜାତକ ଜନ୍ମରୁ ପରିବାର ଠାରୁ ଅଲଗା ରହିଥାଏ । ମାତା-ପିତାଙ୍କ ସ୍ନେହ ଅଧିକ ମିଳିନଥାଏ । ଜାତକର ଅନେକ ଶତ୍ରୁ ଥାନ୍ତି । ସେମାନେ ସମୟ-ସମୟରେ କ୍ଷତି ଦେଇଥାନ୍ତି । ଅଜ୍ଞା-ଆଇ କିମ୍ବା ଜେଜେବାପା-ଜେଜେମାଙ୍କ ବିୟୋଗ ହୋଇଥାଏ । ଏହି ଯୋଗର ପ୍ରଭାବରେ ସନ୍ତାନର ଦେହ କ୍ଷରାପ ହୋଇଥାଏ ଏବଂ ଜାତକ ଚିନ୍ତାରେ ପଡ଼ିଥାଏ ।

ଏହି ଯୋଗର ପ୍ରଭାବରେ ଜାତକ କୁ ବେପାର ଆଦି କ୍ଷେତ୍ରରେ କ୍ଷତି ଉଠେଇବାକୁ ପଡ଼ିଥାଏ । ଡାକିରି, ବେପାର ଆଦି କ୍ଷେତ୍ରରେ ଅଳ୍ପ ବହୁତ ବ୍ୟବସାୟ ସୃଷ୍ଟି ହୋଇଥାଏ, କିନ୍ତୁ ତାହା ଆପେ ଆପେ ଠିକ୍ ହୋଇଥାଏ । ଜାତକ କୁ ଭାଗରେ କାମ କରିବା ଦ୍ୱାରା ଅଳ୍ପ ବହୁତ ସମସ୍ୟା ଆସିଥାଏ ଏବଂ ସରକାରୀ ଅଧିକାରୀଙ୍କ ସହିତ ବେଳେ ବେଳେ ମନମାନି ହୋଇଥାଏ ।

ଏହି ଯୋଗର କାରଣ ଜାତକର ବୈବାହିକ ଜୀବନ ସାମାନ୍ୟ ଥିଲେ ମଧ୍ୟ ବେଳେ ବେଳେ ଅଶାନ୍ତ ଏବଂ କଷ୍ଟମୟ ବନି ଥାଏ । ଘରେ ସୁଖ ଶାନ୍ତିର ଅଳ୍ପ ବହୁତ ଅଭାବ ରହିଥାଏ । ସୁଖ ପ୍ରାପ୍ତି ପାଇଁ ବିଶେଷ ରୂପେ ସଂଘର୍ଷ କରିବାକୁ ପଡ଼ିଥାଏ ଏବଂ ମିତ୍ରଗଣ ମଧ୍ୟ ସେହି ସମୟରେ ଯୋକା ଦେଇଥାନ୍ତି । ପରିଣାମ ସ୍ୱରୂପ ଜାତକ କୁ ଆତ୍ମିକ ରୂପେ କ୍ଷତି ଉଠେଇବାକୁ ପଡ଼ିଥାଏ । ଆୟ କମ୍ ରହି ଥାଏ । ଫଳସ୍ୱରୂପ ଜାତକ କୁ ସମୟ-ସମୟରେ ଆର୍ଥିକ ସଙ୍କଟ ଆସିଥାଏ । କିନ୍ତୁ ଏହି ସବୁ ହେଲାପରେ ଭି ଜାତକର ଜୀବନରେ ଏକ ଭଲ ସମୟ ଭି ଆସିଥାଏ, ସେଥିରେ ଜାତକ କୁ ବିଶେଷ ରୂପେ ପ୍ରସିଦ୍ଧି ମିଳିଥାଏ ।

ଯଦି ଆପଣ କେବେ ଉପରୋକ୍ତ ସମସ୍ୟାର ସମୁଖିନ ହେଲେ ନିମ୍ନଲିଖିତ ଉପାୟ କରନ୍ତୁ, ଅବଶ୍ୟ ଲାଭହେବ ।

୧. କାଳଶର୍ପ ଦୋଷ ନିବାରଣ ଯନ୍ତ୍ର ଘରେ ସ୍ଥାପିତ କରି, ତାହାର ନିୟମିତ ପୂଜା କରିବେ ।
୨. ଭଲ ଦିନ ଦେଖି ତିନି ଥର ନଡ଼ିଆ ଫଳକୁ ନଦିରେ ପ୍ରବାହିତ କରିବେ ।
୩. ଭଲ ଦିନ ଦେଖି ତିନି ଥର କୋଇଲାକୁ ନଦିରେ ପ୍ରବାହିତ କରିବେ ।
୪. ଗରିବ ଲୋକଙ୍କୁ ଭଲ ଦିନ ଦେଖି ମଷୁରି ଡାଲି ତଥା ଦ୍ରବ୍ୟ ଦାନ କରିବେ ।
୫. ହନୁମାନ ଚାଳିସା ୧୦୮ ଥର ପାଠ କରିବେ ।
୬. ସୋଇବା ଘରେ ଲାଲ୍ ରଙ୍ଗର ପରଦା, ଡାଦର ତଥା ଡକିଆ ବ୍ୟବହାର କରିବେ ।
୭. ଇଷ୍ଟ ଦେବତାର ପୂଜା କରିବେ ।
୮. ମାଟିଆ ବସ୍ତ୍ର, ତେଲ, କମ୍ପୂଳ ଏବଂ ସପ୍ତଧାନ୍ୟ ଭଲ ଦିନ ଦେଖି ରାତିରେ ଦାନ କରିବେ ।
୯. କେତୁର ମହାଦଶା ସମୟରେ ତାହାର ଉପାସନା ଅବଶ୍ୟ କରିବେ ।
୧୦. ଦେବଦାରୁ, ସୋରିଷ ତଥା ଲୁହାର ଧାତୁକୁ ଫୁଟାଇ ଗୋଟିଏ ଥର ସ୍ନାନ କରିବେ ।
୧୧. ଦେଢ଼ ମାସ ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ପକ୍ଷିଙ୍କୁ ଜଅ ର ଦାନା ଖାଇବାକୁ ଦେବେ ।
୧୨. ନୀଳ ରୁମାଲ, ନୀଳ ଘଡ଼ି, ନୀଳ କଲମ, ଲୁହାର ଆଖୁଟି ଆଦି ଧାରଣ କରିବେ ।

ବିଶେଷ:

ଧ୍ୟାନ ରଖନ୍ତୁ କାଳଶର୍ପ ଯୋଗ ର ପୂଜା କେବଳ ଶ୍ରୀଖଣ୍ଡ ଚନ୍ଦନ ରେ କରନ୍ତୁ । ସିନ୍ଦୂର, ଲାଲ ସୁତା ଆଦି ର ପ୍ରୟୋଗ କରନ୍ତୁ ନାହିଁ । ତିରୁପତି ବାଲାଜୀ ଙ ନିକଟ ରେ କାଳହସ୍ତୀ ଶିବ ମନ୍ଦିର କୁ ଯାଇ କାଳଶର୍ପ ଯୋଗ ଶାନ୍ତି ର ଉପାୟ ବିଧି-ବିଧାନ ରୂପେ ଥରେ କରନ୍ତୁ ଅଥବା ୧୨ ଜ୍ୟୋତିର୍ଲିଙ୍ଗ ମଧ୍ୟ ରୁ କୌଣସି ଏକ ଜ୍ୟୋତିର୍ଲିଙ୍ଗ କୁ ଯାଇ ପୂଜା କରନ୍ତୁ । ଯେପରି କି ସୌରାଷ୍ଟ୍ର ଗୁଜରାଟ ରେ ସୋମନାଥ ମନ୍ଦିର, ମହାରାଷ୍ଟ୍ର ନାସିକ ରେ ତ୍ରୟମୁକେଶ୍ୱର ମନ୍ଦିର, ଉତ୍କଳ, ଭୀମାଶଙ୍କର, ନାଗେଶ୍ୱର, ରାମେଶ୍ୱର ଆଦି ।







के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।



# ଶ୍ରୀ +

## ଶ୍ରୀକହଢ଼

ଦଶମଭାବ ମେଂ ସୂର୍ଯ୍ୟ ହୋ ତୋ ଜାତକ-ପ୍ରତାପୀ, ବ୍ୟବସାୟ କୁଶଳ, ରାଜମାନ୍ୟ ଲ?-ପ୍ରତିଷ୍ଠ, ରାଜମନ୍ତ୍ରୀ, ଉଦାର, ଶେଷ୍ଠ ସ-ନୁ ଏବଂ ଲୋକମାନ୍ୟ ହୋତା ହେଁ ।

କ୍ରମ ରାଶି ମେଂ ରବି ହୋ ତୋ ଜାତକ ସ୍ଥିରଚିତ୍ତ, ସ୍ଵାର୍ଥୀ, କାର୍ଯ୍ୟକ୍ଷମ, କ୍ରୋଧୀ, ଦୁଃଖୀ, ନିର୍ଧନ, ଅଛା ଜ୍ୟୋତିଷୀ ଏବଂ ମଧ୍ୟ ଅବସ୍ଥା କେ ପକ୍ଷତ୍ ସନ୍ଧ୍ୟାସ ଲେନେ ବାଲା ହୋତା ହେଁ ।

ଆପଣଙ୍କ ଜନ୍ମ ସମୟରେ ସୂର୍ଯ୍ୟ ଦଶମ ଭାବରେ ରହିଥାନ୍ତି । ଅର୍ଥାତ୍ ଆପଣ ପିତାଙ୍କ ପ୍ରିୟ ରହିବେ । ତାଙ୍କର ସ୍ଵାସ୍ଥ୍ୟ ଭଲ ରହିବ ଏବଂ ଆପଣ ମଧ୍ୟ ଦୀର୍ଘ ହେବ । ଧନେଶ୍ଵରରେ ସେ ସର୍ବଦା ସୁସମ୍ପନ୍ନ ରହିବ ଏବଂ ଜୀବନର ଅଧିକାଂଶ ମହତ୍ଵପୂର୍ଣ୍ଣ କ୍ଷେତ୍ରରେ ଆପଣଙ୍କ ଉନ୍ନତି ପାଇଁ ନିଜର ପୁର୍ଣ୍ଣ ଆର୍ଥିକ ତଥା ଅନ୍ୟ ପ୍ରକାରର ସହଯୋଗ ପ୍ରଦାନ କରିବେ । ସାଥେ ସାଥେ ବ୍ୟାପାର ତଥା ଆଜୀବିକା ସମ୍ବନ୍ଧୀୟ କାର୍ଯ୍ୟରେ ମଧ୍ୟ ତାଙ୍କର ପ୍ରେରଣା ଏବଂ ସହଯୋଗରେ ଆପଣ ସଫଳତା ଅର୍ଜିତ କରି ପାରିବେ ।

ଆପଣଙ୍କ ମଧ୍ୟ ତାଙ୍କ ପ୍ରତି ପୁର୍ଣ୍ଣ ଶ୍ରଦ୍ଧା ଏବଂ ସମ୍ମାନର ଭାବନା ରହିବ ଏବଂ ତାଙ୍କର ଆଜ୍ଞାକୁ ପାଳନ କରିବା ପାଇଁ ସର୍ବଦା ତତ୍ପର ରହିବେ । ଆପଣଙ୍କ ପରସ୍ପର ମଧ୍ୟରେ ସମ୍ବନ୍ଧ ମଧୁର ରହିବ ଏବଂ ବେଳେ ବେଳେ ସୈଦ୍ଧାନ୍ତିକ ମତଭେଦ ମଧ୍ୟ ଉତ୍ପନ୍ନ ହେବ । ପରନ୍ତୁ ତାହା ଶୀଘ୍ର ହିଁ ସମାପ୍ତ ହୋଇ ଯିବ । ଏହାର ସାଥେ ସାଥେ ଆପଣ ଜୀବନରେ ତାଙ୍କୁ ଆର୍ଥିକ ତଥା ଅନ୍ୟ ରୂପରେ ପୁର୍ଣ୍ଣ ସହଯୋଗ ପ୍ରଦାନ କରିବେ । ତଥା ସୁଖ ଦୁଃଖରେ ତାଙ୍କୁ ପୁର୍ଣ୍ଣ ସହାୟତା ତଥା ସହଯୋଗ ପ୍ରଦାନ କରିବେ ।

## ଚନ୍ଦ୍ର

ବାରହବେଂ ଭାବ ମେଂ ଚନ୍ଦ୍ରମା ହୋ ତୋ ଜାତକ ମୃଦୁଭାଷୀ, ଚିନ୍ତାଶୀଳ, ଏକାଓପ୍ରିୟ, କ୍ରୋଧୀ, କଫରୋଗୀ, ଚଞ୍ଚଳ, ନେତ୍ରରୋଗୀ ଏବଂ ଅଧିକ ବ୍ୟୟ କରନେ ବାଲା ହୋତା ହେଁ ।

ମେଷ ରାଶି ମେଂ ଚନ୍ଦ୍ରମା ହୋ ତୋ ଜାତକ ସ୍ଥିର ସ-ଭିବାନ୍, ଶୂର, ଦୃଢ଼ ଶରୀରବାଲା, ବନ୍ଧୁହୀନ, କାମୀ, ଉତାବଲା, ଜଳଭୀରୁ, ଯତ୍ରା କରନେ କା ଶୈଳୀନ, ଆତ୍ମାଭିମାନୀ ଏବଂ ସାହସୀ ହୋତା ହେଁ ।

ଆପଣଙ୍କ ଜନ୍ମ ସମୟରେ ଚନ୍ଦ୍ରମା ରହିବେ ତାହା ଭାବରେ ଅଛି । ଅର୍ଥାତ୍ ଆପଣଙ୍କ ମାତାଙ୍କ ସ୍ଵାସ୍ଥ୍ୟ ସାମାନ୍ୟ ଭଲ ରହିବ ତଥା ବେଳେ ବେଳେ କଷ୍ଟର ମଧ୍ୟ ସାମନା କରିବାକୁ ପଡ଼ିବ । କିନ୍ତୁ ଆପଣଙ୍କ ପ୍ରତି ତାଙ୍କ ମନରେ ବାସ୍ତବ୍ୟ ଭାବ ରହିବ ତଥା ଜୀବନରେ ଆପଣଙ୍କୁ ପ୍ରାୟଶ୍ଚୟ ସାଧାରଣ ନିଜର ସହଯୋଗ ପ୍ରଦାନ କରୁଥିବେ । ଆପଣ ତାଙ୍କଠାରୁ ଭଲ ତଥା ପୁନ୍ୟର କାର୍ଯ୍ୟ ପ୍ରତି ପ୍ରବୃତ୍ତ ହେବେ ତଥା ସମୟ ଅନୁସାରେ ଦାନ ଆଦିକୁ ମଧ୍ୟ ତାଙ୍କର କଥା ଅନୁସାରେ ସମ୍ପନ୍ନ କରିବେ ।

ଆପଣଙ୍କ ମନରେ ମଧ୍ୟ ତାଙ୍କ ପ୍ରତି ଆଦରର ଭାବ ରହିବ ଏବଂ ଆପଣ କିଛି ଅବସରକୁ ଛାଡ଼ି ତାଙ୍କର ଆଜ୍ଞାକୁ ପାଳନ କରୁଥିବେ । ଆପଣଙ୍କ ପରସ୍ପର ମଧ୍ୟରେ ସମ୍ବନ୍ଧ ବିଶେଷ ମଧୁର ରହିବ ନାହିଁ କାରଣ ଆପଣଙ୍କ ପାଖରେ କାଫି ମତଭେଦ ରହିବ ତଥାପି ସାମ୍ପାରିକ ସମ୍ବନ୍ଧରେ କୌଣସି ତନାବ ରହିବ ନାହିଁ ଏବଂ ସାମଞ୍ଜସ୍ୟ ପୂର୍ଣ୍ଣ ଆପଣଙ୍କ ପରସ୍ପର ମଧ୍ୟରେ ବ୍ୟବହାର ବାଲୁ ଥିବ । ସାଥେ ସାଥେ ତାଙ୍କୁ କଷ୍ଟର ସମୟରେ ଆପଣ ନିଜ ଚରଣରୁ ପୁର୍ଣ୍ଣ ସହଯୋଗ ତଥା ସହାୟତା ଅବଶ୍ୟକ ପ୍ରଦାନ କରିବେ ।

## ମଙ୍ଗଳ

ନୌବେଂ ଭାବ ମେଂ ମଙ୍ଗଳ ହୋ ତୋ ଜାତକ ଅଭିମାନୀ, କ୍ରୋଧୀ, ନେତା, ଦେଷୀ, ଅକ୍ଷଲାଭ କରନେ ବାଲା, ଯଶସ୍ଵୀ, ଅସକ୍ଷ୍ମ, ଭାତୁବିରୋଧୀ, ଅଧିକାରୀ ଏବଂ ଇର୍ଷ୍ୟାଳୁ ହୋତା ହେଁ ।



ମକର ରାଶି ମେଂ ମଙ୍ଗଳ ହୋ ତୋ ଜାତକ ଖ୍ୟାତିପ୍ରାପ୍ତ, ପରାକ୍ରମୀ, ନେତା ଶ୍ରେୟର୍ଯ୍ୟଶାଳୀ, ସୁଖୀ, ସେନାପତି, ଉଚ୍ଚପୁଲିସ ଅଧିକାରୀ, ପ୍ରଶାସକ, ପ୍ରଚୁର ସନ୍ତାନ, ଉଦାର, ପରିଶ୍ରମୀ ଏବଂ ମହତ୍ତ୍ୱାକାଂକ୍ଷୀ ହୋତା ହେ ।

ଆପଣଙ୍କ ଜନ୍ମ ସମୟରେ ମଙ୍ଗଳ ନବମ ଭାବରେ ସ୍ଥିତ ଅଛି । ଅର୍ଥାତ୍ ଆପଣଙ୍କ ଭାଇ ଭଉଣୀ ଙ୍କ ସ୍ୱାସ୍ଥ୍ୟ ଭଲ ରହିବ କିନ୍ତୁ ବେଳେ ବେଳେ ଶାରୀରିକ ରୂପରେ ବ୍ୟାକୁଳତା ର ଅନୁଭୂତି ମଧ୍ୟ କରିବେ । ଆପଣଙ୍କ ପ୍ରତି ତାଙ୍କର ଅପନତ୍ୱ ରହିବ ଏବଂ ଜୀବନରେ ସୁଖ ଦୁଃଖରେ ଆପଣଙ୍କ ନିତ୍ୟ ସହଯୋଗ କରୁଥିବେ । ଏହାର ସାଥେ ସାଥେ ଆପଣଙ୍କ ଭାଗ୍ୟୋନ୍ନତିରେ ମଧ୍ୟ ସେ ବାସ୍ତବିକ ଆର୍ଥିକ ତଥା ଅନ୍ୟ ପ୍ରକାରର ସହାୟତା ଅବଶ୍ୟ ପ୍ରଦାନ କରିବେ । ଧନ ସମ୍ପତ୍ତିର ତାଙ୍କ ପାଖରେ ଅଭାବ ରହିବ ନାହିଁ ତଥା ଏଥିରେ ସେ ଯୁକ୍ତ ରହିବେ ।

ଆପଣ ମଧ୍ୟ ତାଙ୍କୁ ହୃଦୟରେ ସ୍ନେହ ଏବଂ ସମ୍ମାନ ପ୍ରଦାନ କରିବେ ଏବଂ ସବୁ ଶୁଭ ଏବଂ ମହତ୍ତ୍ୱପୂର୍ଣ୍ଣ କାର୍ଯ୍ୟରେ ତାଙ୍କୁ ନିଜର ସହଯୋଗ ପ୍ରଦାନ କରୁଥିବେ । ଆପଣଙ୍କ ପରସ୍ପର ମଧ୍ୟରେ ସମ୍ବନ୍ଧରେ ମଧୁରତା ରହିବ ପରନ୍ତୁ ବେଳେ ବେଳେ ପରସ୍ପର ମଧ୍ୟରେ ସୈଦ୍ଧାନ୍ତିକ ମତଭେଦର କାରଣ ସେଥିରେ କଟୁତା ମଧ୍ୟ ଆସିବ କିନ୍ତୁ ଏହା ଅସ୍ଥାୟୀ ରହିବ । ଏହାର ସାଥେ ସାଥେ ତାଙ୍କର ଭାଗ୍ୟୋନ୍ନତିରେ ମଧ୍ୟ ଆପଣ ସମୟାନୁସାରେ ଆର୍ଥିକ କିମ୍ବା ଅନ୍ୟ ପ୍ରକାରର ନିଜର ମହତ୍ତ୍ୱପୂର୍ଣ୍ଣ ଭୂମିକା ନିଭେଇବେ ଏବଂ ସୁଖ ଦୁଃଖରେ ତାଙ୍କର ପୂର୍ଣ୍ଣ ସାଥ ଦେବେ ।

### ବୁଧ

ଦଶମଭାବ ମେଂ ବୁଧ ହୋ ତୋ ଜାତକ ସତ୍ୟବାଦୀ, ମନସ୍ତୀ, ବ୍ୟବହାର କୁଶଳ, ଲୋକମାନ୍ୟ, ବିଦ୍ୱାନ, ଲେଖକ, କବି ଜମୀନ୍ଦାର, ମାତୃ-ପିତୃ ଭକ୍ତ, ରାଜମାନ୍ୟ, ନ୍ୟାୟୀ ଏବଂ ଭାଗ୍ୟବାନ୍ ହୋତା ହେ ।

କମ୍ବୁ ରାଶି ମେଂ ବୁଧ ହୋ ତୋ ଜାତକ କୁରୁମ୍ଭୂତାନ, ଦୁଃଖୀ, ଅଲ୍ପଧନୀ, ଝଗଡ଼ାଳୁ, ପ୍ରସିଦ୍ଧ ନିର୍ବଳ ସ୍ୱାସ୍ଥ୍ୟ ଏବଂ ପ୍ରଗତି କରନେ ବାଲା ହୋତା ହେ ।

### ଗୁରୁ

ଦ୍ୱିତୀୟଭାବ ମେଂ ଗୁରୁ ହୋ ତୋ ଜାତକ ମଧୁରଭାଷୀ, ସ-ଖି ଓର ସନ୍ତତିବାନ୍, ସୁନ୍ଦରଶରୀରୀ, ସଦାହାରୀ, ପୁନ୍ୟାତ୍ମା, ସୁକାର୍ଯ୍ୟରତ, ଲୋକମାନ୍ୟ, ରାଜ୍ୟମାନ୍ୟ, ବ୍ୟବସାୟୀ, ଦୀର୍ଘାୟୁ, ଶତ୍ରୁନାଶକ ଏବଂ ଭାଗ୍ୟବାନ୍ ହୋତା ହେ ।

ମିଥୁନ ରାଶି ମେଂ ଗୁରୁ ହୋ ତୋ ଜାତକ ଯୋଗ୍ୟ ବକ୍ତା, ସୁଗଠିତ ଶରୀର, ଲମ୍ବାକଦ, ଉଦାର, ବିଦ୍ୱାନ, କଇ ଭାଷାଆଁ କା ଜାନନେ ବାଲା, ଅନାୟାସ ଧନପ୍ରାପ୍ତ କରନେ ବାଲା, ଲୋକମାନ୍ୟ, ଲେଖକ ଏବଂ ବ୍ୟବହାର କୁଶଳ ହୋତା ହେ ।

### ଶୁକ୍ର

ଦଶମ ଭାବ ମେଂ ଶୁକ୍ର ହୋ ତୋ ଜାତକ ଗୁଣବାନ୍, ଦାୟାଳୁ, ବିଲାସୀ, ଶ୍ରେୟର୍ଯ୍ୟବାନ୍, ଭାଗ୍ୟବାନ୍, ନ୍ୟାୟବାନ୍ ବିଜୟୀ, ଗାନପ୍ତିୟ, ଧାର୍ମିକ ଜ୍ୟୋତିଷୀ ଏବଂ ଲୋଭୀ ହୋତା ହେ ।

କମ୍ବୁ ରାଶି ମେଂ ଶୁକ୍ର ହୋ ତୋ ଜାତକ ଶାନ୍ତିପ୍ରିୟ, ଦୁସରୋ କୋ ସହାୟତା କରନେ ବାଲା, ସଜ୍ଜରିତ୍ର, ସୁନ୍ଦର, ଲୋକପ୍ରିୟ, ଚିନ୍ତାଶୀଳ ଏବଂ ରୋଗ ସେ ସନ୍ତପ୍ତ ହୋତା ହେ ।

### ଶନି

ଗ୍ୟାରହବେ ଭାବ ମେଂ ଶନି ହୋ ତୋ ଜାତକ ବଲବାନ୍ ବିଦ୍ଵାନ, ଦୀର୍ଘାୟୁ, ଶିଳ୍ପୀ, ସୁଖୀ, ଚଞ୍ଚଳ, କୁଟାଧୀ, ଘୋରାଭୟାସୀ, ନୀତିବାନ୍ ପରିଶ୍ରମୀ, ବ୍ୟବସାୟୀ, ପୁତ୍ରହୀନ, କନ୍ୟାପୁଞ୍ଜ ଏବଂ ରୋଗହୀନ ହୋତା ହେ ।

ମୀନ ରାଶି ମେଂ ଶନି ହୋ ତୋ ଜାତକ ଅବିଚାରୀ, ଶିଳ୍ପକାର ହତୋସ୍ଵାହୀ, ଧନୀ, ପ୍ରସିଦ୍ଧ, ସୁଖୀ ଏବଂ ଦୁସରୋ କୀ ସହାୟତା କରନେ ବାଲା ହୋତା ହେ ।

### ରାହୁ

ଦଶମ ଭାବ ମେଂ ରାହୁ ହୋ ତୋ ଜାତକ ମିତବ୍ୟୟୀ, ବାଚାଳ, ସତ୍ତତକ୍ଳେଶୀ ଚନ୍ଦ୍ରମା ସେ ଯୁକ୍ତ ରାହୁ କେ ହୋନେ ପର ରାଜୟୋଗ କାରକ ଅନିୟମିତ କାର୍ଯ୍ୟକର୍ତ୍ତା ଏବଂ ଆଲସୀ ହୋତା ହେ ।

କୁମ୍ଭ ରାଶି ମେଂ ରାହୁ ହୋ ତୋ ଜାତକ ବିଦ୍ଵାନ, ଲେଖକ ମିତଭାଷୀ ଏବଂ ମିତବ୍ୟୟୀ ହୋତା ହେ ।

### କେତୁ

ଚତୁର୍ଥ ଭାବ ମେଂ କେତୁ ହୋ ତୋ ଜାତକ, କାର୍ଯ୍ୟହୀନ, ଚଞ୍ଚଳ, ବାଚାଳ ଏବଂ ନିରୁସ୍ଵାହୀ ହୋତା ହେ ।

ସିଂହ ରାଶି ମେଂ କେତୁ ହୋ ତୋ ଜାତକ ବଦୁଭାଷୀ, ଡରପୋକ, ଅସହିଷ୍ଣୁ ସର୍ପଦଶନ କା ଭୟ ଏବଂ ଅସତ୍ତୋଷୀ ହୋ ତା ହେ ।

## ଶାରୀରିକ ଗଠନ, ବ୍ୟକ୍ତିତ୍ୱ ଏବଂ ପ୍ରକୃତି

ଆପଣଙ୍କ ଜନ୍ମ ବୃଷ ଲଗ୍ନରେ ହୋଇଛି ଅର୍ଥାତ ଆପଣ ଶାରୀରିକ ସ୍ୱରୂପ ସୁନ୍ଦର ଏବଂ ଆକର୍ଷକ ରହିବେ ତଥା ସମସ୍ତ ଲୋକେ ଆପଣଙ୍କ ବ୍ୟକ୍ତିତ୍ୱ ପ୍ରତି ପ୍ରଭାବିତ ରହିବେ । ଆପଣଙ୍କ ପ୍ରକୃତି ଯୈର୍ଯ୍ୟ ଏବଂ ସହିଷ୍ଣୁତା ଭାବରେ ଯୁକ୍ତ ରହିବ ତଥା କଥାରେ ମଧ୍ୟ ମଧୁରତାର ଭାବ ବିଦ୍ୟମାନ ରହିବ । ତଥା ଆପଣ ସମସ୍ତ ଶୁଭ ଏବଂ ସାମ୍ପାରିକ ମହତ୍ୱ କାର୍ଯ୍ୟ କୁ ସମ୍ପନ୍ନ କରିବାରେ ତପ୍ତ ରହିବେ । ଏହା ଦ୍ୱାରା ଆପଣ ଶ୍ରେଷ୍ଠ ଜନଙ୍କ ପ୍ରିୟ, ବିଦ୍ୱାନ ତଥା ଧନଐଶ୍ୱର୍ଯ୍ୟ ଯୁକ୍ତ ହୋଇ ଆନନ୍ଦ ପୂର୍ବକ ନିଜ ସମୟ ବ୍ୟତୀତ କରିବେ ।

ଆପଣଙ୍କ ଶାରୀରିକ ସ୍ୱାସ୍ଥ୍ୟ ସାମାନ୍ୟତଃ ଉତ୍ତମ ହିଁ ରହିବ । କିନ୍ତୁ ଗୋଟେ ଥର ଅସୁସ୍ଥ ହେଲେ ପୁନଃ ସୁସ୍ଥ ବିଲମ୍ବରେ ହେବ । ଆପଣଙ୍କ ସ୍ୱଭାବ ଜିଦ୍ ପ୍ରକୃତିର ମଧ୍ୟ ରହିବ ତଥା ଆପଣ ଅନ୍ୟ ଲୋକଙ୍କ ବିଚାର ଠାରୁ ନିଜ ବିଚାରକୁ ଠିକ୍ ମାନିବେ କିମ୍ବା କୌଣସି ବସ୍ତୁ ପାଇଁ ଅନାବଶ୍ୟକ ହୃଦ୍ କରିବେ । ଏହା ଦ୍ୱାରା ଅନ୍ୟ ଲୋକଙ୍କ ପ୍ରତି ଆପଣଙ୍କର ଛବି ପ୍ରଭାବିତ ହେବ । ସାଥେ ସାଥେ ଆପଣ ଆରାମ କରିବାକୁ ଅତ୍ୟଧିକ ପ୍ରସନ୍ନତା ପ୍ରଦାନ କରନ୍ତେ । କିନ୍ତୁ ଆପଣଙ୍କ ବ୍ୟକ୍ତିତ୍ୱର ଏକ ପ୍ରମୁଖ ଗୁଣ ଏହା କି ଯଦି ଆପଣ କୌଣସି କାର୍ଯ୍ୟ କୁ କରିବାରେ ତପ୍ତ ହୁଅନ୍ତି ତାହା ହେଲେ ପରିଶ୍ରମ ପୂର୍ବକ ତାକୁ କରିବାରେ ସଫଳତା ରହିବେ । କିନ୍ତୁ ଯଦି କୌଣସି କାର୍ଯ୍ୟ ନହେଲେ ମଧ୍ୟ ତାହାର ବିଚାରରେ ବହୁତ ସମୟ ବ୍ୟତୀତ କରିବେ ଏଥିରେ ଆପଣଙ୍କୁ ଅନେକ ଥର ହାନି ମଧ୍ୟ ହୋଇପାରେ । ଅର୍ଥାତ ଯଦ୍ୱ ପୂର୍ବକ ଏପରି ପ୍ରକୃତିର ପରିତ୍ୟାଗ କରିବା ଦରକାର । ଶତ୍ରୁ ପକ୍ଷ ମଧ୍ୟ ସମୟ ସମୟରେ ଆପଣଙ୍କ ପାଇଁ ସମସ୍ୟା ଉତ୍ପନ୍ନ କରନ୍ତି କିନ୍ତୁ ଆପଣ କୌଣସି ଚିନ୍ତା ନକରି ନିଜ କର୍ତ୍ତବ୍ୟ ମାର୍ଗ ଉପରେ ଅଗ୍ରସର ରହିବେ ।

କଳା ଏବଂ ସୁନ୍ଦରତାକୁ ଆପଣ ପାରଖୀ ହେବେ ତଥା କବିତା କରିବାରେ ମଧ୍ୟ ଶୋକ ରହିବ କିନ୍ତୁ ଏପରି ଅବସର ଅନୁସାରେ ହିଁ ହେବ । ସାଥେ ସାଥେ ଧନ ସମ୍ବନ୍ଧ ପ୍ରତି ମଧ୍ୟ ଆପଣଙ୍କ ରୁଚି ରହିବ । ସାମ୍ପାରିକ ଏବଂ ଭୌତିକ ସୁଖ ସଂସାଧନ ପ୍ରତି ଆପଣଙ୍କ ମନରେ ତୀବ୍ର ଆଶା ରହିବ ତଥା ତାକୁ ପ୍ରାପ୍ତ କରିବା ପାଇଁ ନିତ୍ୟ ଯତ୍ନ ଏବଂ ପରିଶ୍ରମଶୀଳ ରହିବେ । ଏକ ବିଦୁଷୀ ରୂପରେ ମଧ୍ୟ ଆପଣଙ୍କ ସାମାଜିକ ପ୍ରତିଷ୍ଠା ରହିବ ତଥା ଅବସରାନୁକୂଳେ ଆପଣ ରାଜନୀତିରେ ମଧ୍ୟ ସକ୍ରିୟ ହେବେ କିନ୍ତୁ ମହତ୍ୱପୂର୍ଣ୍ଣ ନେତୃତ୍ୱ ଅଳ୍ପ ହିଁ ପ୍ରାପ୍ତ ହେବ । କିନ୍ତୁ ସକ୍ରିୟ ରୂପରେ ଆପଣ ସଜଟ ପୂର୍ବକ ଆପଣ କାର୍ଯ୍ୟ କୁ ସମ୍ପନ୍ନ କରୁଥିବେ ।

ସ୍ୱଭାବିକ ଶାନ୍ତି ଏବଂ ସହନଶୀଳତାର କାରଣ ସମସ୍ତ ଲୋକେ ଆପଣଙ୍କ ପ୍ରତି ପ୍ରଭାବିତ ରହିବେ ତଥା ଆପଣଙ୍କୁ ନିଜର ମିତ୍ର ବନେଇବା ପାଇଁ ଇଚ୍ଛୁକ ରହିବେ । ସାଥେ ସାଥେ ସ୍ୱପରିବାର, ମିତ୍ର ଏବଂ ବନ୍ଧୁବର୍ଗର କଲ୍ୟାଣ ପାଇଁ ସବୁ ବେଳେ ତପ୍ତ ରହିବେ ତ ଥା ପରିଶ୍ରମ ପୂର୍ବକ ଭୌତିକ ସୁଖ ସଂସାଧନ ତଥା ଧନ ଅର୍ଜିତ କରି ପ୍ରସନ୍ନତା ପୂର୍ବକ ନିଜର ସମୟ ବ୍ୟତୀତ କରିବେ ।

ଗୁଣାଗୁଣୀଃ ସ୍ୟାଦ୍ ଦ୍ରବିଣେନ ପୁଣ୍ୟୋ ଭକ୍ତୋ ଗୁରୁଣାଂ ହି ରଣ ପ୍ରିୟଃ ।

ଧୀରଃ ଶୂରଃ ପ୍ରିୟବାକ୍ ପ୍ରଶାନ୍ତଃ ସ୍ୟାଦୁରୁଷୋ ଯସ୍ୟ ବୃଷେ ବିଲଗ୍ନେ । ।

। । ଜାତକାଭରଣମ୍ । ।

ଅର୍ଥାତ ବୃଷ ଲଗ୍ନର ଜାତକ ବିଦ୍ୱାନ, ଧନରେ ପୁର୍ଣ୍ଣ, ଗୁରୁଜନଙ୍କ ଆଦର କରିବା ବାଳୀ, ଯୈର୍ଯ୍ୟବାନ, ବାହାଦୂର, ପ୍ରିୟବକ୍ତା ତଥା ଶାନ୍ତ ହୃଦୟରେ ଯୁକ୍ତ ରହିବେ ।

## ଧନ, ପରିବାର, ଆଖି ଏବଂ ବାଣୀ

ଆପଣଙ୍କ ଜନ୍ମ ସମୟରେ ଦ୍ଵିତୀୟ ଭାବରେ ମିଥୁନ ରାଶି ଉଦ୍ଵିଗ୍ନ ହୋଇଥିଲା ଯାହାର ସ୍ଵାମୀ ବୁଧ ଅଟେ । ଅର୍ଥାତ୍ ଏହାର ପ୍ରଭାବରେ ଆପଣଙ୍କ ପ୍ରକୃତି ଧନ ସଙ୍କ୍ରମ୍ଭ କରିବାରେ ରହିବ ତଥା ବର୍ତ୍ତମାନ ଏବଂ ଭବିଷ୍ୟ ପ୍ରତି ସବୁ ବେଳେ ଚିନ୍ତିତ ରହିବେ ଫଳରେ ଧନ ସଙ୍କ୍ରମ୍ଭ ସାମାନ୍ୟତଃ ଆପଣଙ୍କ ପାଖରେ ରହିବ ଯାହା ଦ୍ଵାରା ଆର୍ଥିକ ଛୁଟି ସଜ୍ଜିତ ରହିବ । ସାଥେ ସାଥେ ଆପଣ ଜାଗା ଆଦି ଉପରେ ପୁଞ୍ଜା ନିବେଶ କରିବେ ଯାହା ଦ୍ଵାରା ପ୍ରଚୁର ମାତ୍ରାରେ ଲାଭ ଅର୍ଜିତ ହେବ । ଆପଣଙ୍କ ପାରିବାରିକ ସୁଖ ଶାନ୍ତି ମଧ୍ୟ ଉତ୍ତମ ରହିବ ତଥା ଆନନ୍ଦ ପୂର୍ବକ ପାରିବାରିକ ଜନଙ୍କ ସହିତ ନିଜର ସମୟ ବ୍ୟତୀତ କରିବେ । ଏହାର ସାଥେ ସାଥେ ତାଙ୍କର ଖୁସି ପାଇଁ ସବୁ ବେଳେ ପ୍ରୟତ୍ନଶୀଳ ରହିବେ ତଥା ପାରିବାରିକ ଜନ ମଧ୍ୟ ଆପଣଙ୍କୁ ପୁଣି ସହଯୋଗ ତଥା ସହାୟତା ପ୍ରଦାନ କରିବା ପାଇଁ ଚପୁର ରହିବେ ।

ସାମାନ୍ୟତଃ ଆପଣଙ୍କୁ ସମସ୍ତ ସ୍ଵାଦ ପ୍ରିୟ ଲାଗିବ କିନ୍ତୁ ମିଷ୍ଟାନ ପ୍ରତି ଆପଣଙ୍କ ବିଶେଷ ରୁଚି ରହିବ । କାରଣ ଏହି ଭାବ ବାଣୀର ପ୍ରତିନିଧିତ୍ଵ କରିବ ତଥା ବୁଧ ଏହାର ସ୍ଵାମୀ ଅଟେ । ଅର୍ଥାତ୍ ଆପଣଙ୍କ ବାଣୀ ମୃଦୁ ତଥା ପ୍ରଭାବଶାଳୀ ରହିବ ତଥା ଅନ୍ୟ ଲୋକଙ୍କୁ ନିଜ ମୃଦୁବାଣୀରେ ପ୍ରଭାବିତ କରିବାରେ ସମର୍ଥ ରହିବେ । ସାଥେ ସାଥେ ଆପଣ ବିଚାରକୁ ମଧ୍ୟ କୁଶଳତା ପୂର୍ବକ ଅଭିବ୍ୟକ୍ତ କରିବେ ଯଦି ଆପଣ ଭାବିବେ କି ଏହି ବିଚାର ଠିକ୍ ନାହିଁ ତାହା ହେଲେ ଆପଣ ତାକୁ ଶୀଘ୍ର ପରିବର୍ତ୍ତନ କରିବାରେ କୌଶଳି ବିଲମ୍ବ କରିବେ ନାହିଁ । ଅତିଥୀ ସତ୍ଵକାରର ଭାବନା ମଧ୍ୟ ଆପଣଙ୍କ ମନରେ ରହିବ । ଏହା ଛଡ଼ା ପୁରୁଷ ବର୍ଗଙ୍କ ଠାରୁ ଆପଣଙ୍କୁ ପ୍ରଚୁର ମାତ୍ରାରେ ଲାଭ ହେବ ତଥା ବାହାନ ଏବଂ ବହୁମୁଲ୍ୟ ଧାତୁ କିମ୍ବା ରତ୍ନର ମଧ୍ୟ ଉପଲବ୍ଧି ହେବ । ସାଥେ ସାଥେ ଧାର୍ମିକ କିମ୍ବା ନିଜ ଲୋକଙ୍କ ସହ ଆପଣ ସାମାନ୍ୟତଃ ମିତ୍ରତା କରିବା ପସନ୍ଦ କରିବେ ।

## ମାତା, ବାହନ, ଭୌତିକ ଐଶ୍ୱର୍ଯ୍ୟ, ସ-ଉଁ ଏବଂ ଶିକ୍ଷା

ଆପଣଙ୍କ ଜନ୍ମ ସମୟରେ ଚତୁର୍ଥ ଭାବରେ ସିଂହ ରାଶି ଉଦିତ ହୋଇ ଥିଲା ଯାହାର ସ୍ୱାମୀ ସୂର୍ଯ୍ୟ ଅଟେ । ଅର୍ଥାତ୍ ଏହାର ପ୍ରଭାବରେ ଆପଣଙ୍କ ମାତା ଏକ ଆଦର୍ଶ ତଥା ମହତ୍ୱାକାଂକ୍ଷୀ ମହିଳା ହେବେ ତଥା ପରିବାରର ଉତ୍ତମ ବ୍ୟବସ୍ଥା କରିବାରେ ସଫଳ ରହିବେ ତଥା ପରିବାରର କୌଣସି ସଦସ୍ୟ କୁ ତାଙ୍କର କୌଣସି ଆପତ୍ତି ରହିବ ନାହିଁ । ସେ ଏକ ସଫଳ ସାମାଜିକ କାର୍ଯ୍ୟକର୍ତ୍ତା ମଧ୍ୟ ହେବେ ତଥା ସମସ୍ତ ଲୋକେ ତାଙ୍କ ପ୍ରତି ପ୍ରଭାବିତ ରହିବେ ତଥା ତାଙ୍କୁ ବାଞ୍ଛିତ ସମ୍ମାନ ଏବଂ ଆଦର ପ୍ରଦାନ କରିବେ । ପାରିବାରିକ ସୁଖ ଶାନ୍ତି ଏବଂ ସମୃଦ୍ଧି ପାଇଁ ସେ ନିତ୍ୟ ପ୍ରୟତ୍ନଶୀଳ ରହିବେ ତଥା ନିଜ ଇଚ୍ଛାର ଅପେକ୍ଷା କରି ପରିବାର ପ୍ରତି ପୁଣି ଉତ୍ତରଦାୟୀ ରହିବେ ଯାହା ଦ୍ୱାରା ପରିବାରର ସାମାଜିକ ତଥା ଆର୍ଥିକ ଛିତିରେ ସୁଦୃଢ଼ତା ରହିବ ।

ଆପଣ ଶହରର କୌଣସି ବିଖ୍ୟାତ ସ୍ଥାନରେ ଆବାସ ନେଇ ରହିବେ ତଥା ଘର ମଧ୍ୟ ସୁନ୍ଦର ଏବଂ ଆକର୍ଷକ ରହିବ । ସାଥେ ସାଥେ ଘର ସଙ୍ଗ ଏବଂ ସାଜ ସଜ୍ଜା ପ୍ରତି ପୁଣି ସତର୍କ ରହିବେ ଯାହା ଦ୍ୱାରା ଘରର ସୁନ୍ଦରତାରେ ପୁଣି ବୃଦ୍ଧି ହେବ । ଆଧୁନିକ ସୁଖ ସଂସ୍ଥାପନ ତଥା ମନୋରଞ୍ଜନ ଉପକରଣ ମଧ୍ୟ ଘରେ ଯୁକ୍ତ ରହିବ । ଯଦି କୌଣସି ବସ୍ତୁ ଯଥା ସ୍ଥାନରେ ନଥାଏ ତାହା ହେଲେ ଏପରି ସମୟରେ ଆପଣଙ୍କୁ କ୍ରୋଧ ଆସିବ ତଥା ନିଜେ ହିଁ ତାକୁ ଯଥୋଚିତ ସ୍ଥାନରେ ରଖିବେ । ଆପଣଙ୍କୁ ସମୟାନୁସାରେ ବାହାନ ସମୃଦ୍ଧି ସୁଖ ପ୍ରାପ୍ତ ହେଉଥିବ ତଥା ସ୍ତର ବୃଦ୍ଧିର ସାଥେ ସାଥେ ବାହାନ ଉତ୍ତମତାରେ ମଧ୍ୟ ବୃଦ୍ଧି ହେବ । ପ୍ରଶାସନିକ ଆଦିରେ ଆପଣଙ୍କୁ ବାହାନ ସୁବିଧା ପ୍ରାପ୍ତ ହୋଇପାରେ । ସାଥେ ସାଥେ ପିତୃ ସମ୍ପର୍କରେ ମଧ୍ୟ ଆପଣ ଯୁକ୍ତ ରହିବେ ଏବଂ ପରିଶ୍ରମ ପୁର୍କ ଉଚ୍ଚଶିକ୍ଷା ଅର୍ଜିତ କରିବାରେ ସମର୍ଥ ରହିବେ । ଏହା ଛଡ଼ା ଆପଣଙ୍କ ସ୍ୱଭାବରେ ବେଳେ ବେଳେ ଉଗ୍ରତାର ଭାବ ବିଦ୍ୟମାନ ରହିବ ତଥା କନ୍ୟା ସନ୍ତାନ ଅଧିକ ରହିବ । ତଥାପି ଆପଣଙ୍କ ସାମାନ୍ୟ ଜୀବନ ସୁଖ ଏବଂ ପ୍ରସନ୍ନତା ପୁର୍କ ବ୍ୟତୀତ ହେବ ।

## ବୁଦ୍ଧି, ସନ୍ତାନ ଏବଂ ପ୍ରଣୟ ସଂବନ୍ଧ

ଆପଣଙ୍କ ଜନ୍ମ ସମୟରେ ପଞ୍ଚମ ଭାବରେ କନ୍ୟା ରାଶି ଭବିତ ହୋଇ ଥିଲା ଯାହାର ସ୍ୱାମୀ ବୁଧ ଅଟେ । ଅର୍ଥାତ୍ ଏହାର ପ୍ରଭାବରେ ଆପଣ ଏକ ବୁଦ୍ଧିମତୀ ମହିଳା ଅଟନ୍ତି ତଥା ବୈଦିକ ସାହିତ୍ୟର ଜ୍ଞାନାର୍ଜନରେ ଯତ୍ନଶୀଳ ରହିବେ । ସାଥେ ସାଥେ ଜ୍ୟୋତିଷ ଆଦିରେ ଆପଣଙ୍କୁ ଜ୍ଞାନ ରହିବ ତଥା ଏହା ପ୍ରତି ଶ୍ରଦ୍ଧାର ଭାବନା ରହିବ । ଆପଣ ନିଜ ସାମ୍ପାରିକ ମହତ୍ତ୍ୱର ଶୁଭ ଏବଂ ମହତ୍ତ୍ୱପୂର୍ଣ୍ଣ କାର୍ଯ୍ୟ କୁ ଶୀଘ୍ରତା ସହ ସମ୍ପନ୍ନ କରିବେ । ସାଥେ ସାଥେ ଏହି ରାଶିର ପ୍ରଭାବରେ ଆପଣ ବିଜ୍ଞାନ, ଗଣିତ, ଲେଖନ ସମ୍ବନ୍ଧିତ ବିଷୟରେ ରୁଚିଶୀଳ ରହିବେ । ଖାନ ପାନ ସମ୍ବନ୍ଧିତ ବିଷୟରେ ମଧ୍ୟ ଆପଣଙ୍କୁ ଭବିତ ଜ୍ଞାନ ରହିବ ତଥା ସୁଖୀ ଦାମ୍ପତ୍ୟ ଜୀବନ ବ୍ୟତୀତ କରିବା ପାଇଁ ଆପଣ ଜୀବନ ସାଥୀ ଖୋଜିବା ସମୟରେ ଅତ୍ୟଧିକ ବୁଦ୍ଧିମତାର ପରିଚ୍ଛନ୍ନ ଦେବେ । ବାର୍ତ୍ତାଳାପରେ ଆପଣ ଦକ୍ଷ ରହିବେ ତଥା ଅନ୍ୟ ଲୋକଙ୍କୁ ନିଜ କଥାରେ ପ୍ରସନ୍ନ ରଖିବେ । ସାଥେ ସାଥେ ଲୋକେ ଆପଣଙ୍କ ପ୍ରତି ପ୍ରଭାବିତ ତଥା ସନ୍ତୁଷ୍ଟ ରହିବେ ।

ଆପଣଙ୍କ ସନ୍ତାନ ସଙ୍ଗୀ ସାମିତ ରହିବ । ତଥା ତାଙ୍କର ସ୍ୱାସ୍ଥ୍ୟ ଏବଂ ଶିକ୍ଷା ଦିକ୍ଷା ପ୍ରତି ପୂର୍ଣ୍ଣ ସଜାଗ ରହିବେ ତଥା ଏହି କାର୍ଯ୍ୟ ଉପରେ ସ୍ୱପରିଶ୍ରମର ସାଥେ ସାଥେ ପ୍ରଭୁର ମାତ୍ରାରେ ବ୍ୟୟ ମଧ୍ୟ କରିବେ । ସାଥେ ସାଥେ ସେ ମଧ୍ୟ ବୃଦ୍ଧାବସ୍ଥାରେ ଆପଣଙ୍କ ପୁରା ସେବା କରିବେ ତଥା ଆପଣଙ୍କୁ କୌଣସି କଷ୍ଟ ହେବାକୁ ଦେବେ ନାହିଁ । ଆପଣ ପୁରୁଣା ରୀତି ନୀତି କୁ ମାନ୍ୟତା ଦେବେ କିନ୍ତୁ ଆଧୁନିକତା କୁ ମଧ୍ୟ ଅପେକ୍ଷା କରିବେ ନାହିଁ ତଥା ଆଧୁନିକ ଏବଂ ପୁରାତନର ସାମଞ୍ଜସ୍ୟ କରି ସନ୍ତୁଷ୍ଟ ରହିବେ । ଏହାର ସାଥେ ସାଥେ ବର୍ତ୍ତମାନ ଜାହା କିଛି ଭୀ ସୁଖ ସୁବିଧା ପ୍ରାପ୍ତ ହୋଇଛି ସେ ସବୁ ପୂର୍ବ ଜନ୍ମର ପୁଣ୍ୟର ଫଳ ଅଟେ ଯାହା ଦ୍ୱାରା ଆପଣ ସାମାନ୍ୟତଃ ପ୍ରସନ୍ନ ତଥା ସନ୍ତୁଷ୍ଟ ରହିବେ । ଏହା ଛଡ଼ା ଆପଣଙ୍କ କନ୍ୟା ସନ୍ତାନ ଅଧିକ ଏବଂ ପୁତ୍ର ସନ୍ତାନ ଅଳ୍ପ ମାତ୍ରାରେ ହେବ ତଥା ଜୀବନରେ ସମସ୍ତ ସୁଖର ଉପଭୋଗ କରି ପ୍ରସନ୍ନତା ପୂର୍ବକ ନିଜର ସମୟ ବ୍ୟତୀତ କରିବେ ।

## ଦ-ଈ, ବିବାହ ଏବଂ ସହଚର

ଆପଣଙ୍କ ଜନ୍ମ ସମୟରେ ସମସ୍ତ ଭାବରେ ବୃଷ୍ଟିକ ରାଶି ଉଦିତ ହୋଇ ଥିଲା ଯାହାର ସ୍ତ୍ରୀ ମଙ୍ଗଳ ଅଟେ । ଅର୍ଥାତ୍ ଏହାର ପ୍ରଭାବରେ ଆପଣଙ୍କ ଦାମ୍ପତ୍ୟ ଜୀବନ ମଧୁର ଏବଂ ଶାନ୍ତି ପୂର୍ଣ୍ଣ ରହିବ ତଥା ଜୀବନରେ ସୁଖ ତଥା ଉନ୍ନତି ପ୍ରାପ୍ତ କରିବାରେ ସମର୍ଥ ରହିବେ । ଏହି ରାଶିର ପ୍ରଭାବରେ ଆପଣଙ୍କ ଜୀବନ ସାଥୀଙ୍କ ସ୍ୱଭାବ ସ୍ନେହଶୀଳ ତଥା ପ୍ରବୃତ୍ତି ଶାନ୍ତ ରହିବ ଏବଂ ପରିବାରରେ ସୁଖ ଶାନ୍ତି ତଥା ସମୃଦ୍ଧି ବନା ରହିବ । ସାଥେ ସାଥେ ଇଚ୍ଛିତ ଭୌତିକ ସୁଖର ଉପଭୋଗ କରି ନିଜର ସମୟ ବ୍ୟତୀତ କରିବେ ।

ଆପଣଙ୍କ ପତି ଉନ୍ନତ୍ତ ବିଦାରର ବ୍ୟକ୍ତି ଅଟନ୍ତି ତଥା ଛୋଟ ମୋଟ କଥାକୁ ସେ ଧ୍ୟାନରେ ରଖିବେ ନାହିଁ । ସାଥେ ସାଥେ ପାରିବାରିକ ଶାନ୍ତି ତଥା ପ୍ରସନ୍ନତା ପାଇଁ ସବୁ ବେଳେ ଚପ୍ପର ରହିବେ । ଘର ପରିବାର ପ୍ରତି ଆପଣଙ୍କ ପୂର୍ଣ୍ଣ ଧ୍ୟାନ ରହିବ ତଥା ପତି ଏବଂ ଛୁଆଙ୍କ ପୂର୍ଣ୍ଣ ଧ୍ୟାନ ରଖିବେ ତଥା ଯତ୍ନ ପୂର୍ବକ ତାଙ୍କୁ ପୂର୍ଣ୍ଣ ଆଧୁନିକ ସୁଖ ସୁବିଧା ପ୍ରଦାନ କରିବେ । ଆପଣ ପତିଙ୍କ ବିଶେଷ ଧ୍ୟାନ ରଖିବେ ଅର୍ଥାତ୍ ଆପଣଙ୍କ ପରସ୍ପର ମଧ୍ୟରେ ସମ୍ପୂର୍ଣ୍ଣ ଅତ୍ୟନ୍ତ ହିଁ ମଧୁର ରହିବ । ଆପଣ ପତି ଙ୍କୁ ଉଦ୍ଦିତ ଖାନ ପାନ ତଥା ପିନ୍ଧିବା ଆଦି ପାଇଁ ପ୍ରେରିତ କରିବେ ଯାହା ଦ୍ୱାରା ତାଙ୍କର ବ୍ୟକ୍ତିତ୍ୱ ଆକର୍ଷକ ଲାଗିବ । କର୍କଟ, ମକର, କନ୍ୟା, ମୀନ କିମ୍ବା ବୃଷ୍ଟିକ ଲଗ୍ନର ଜାତକ ଆପଣଙ୍କ ପାଇଁ ଉପଯୁକ୍ତ ରହିବେ ଅର୍ଥାତ୍ ଯଦି ଆପଣ ଏଥିରୁ ବିବାହ କରିବେ ତାହା ହେଲେ ଆପଣଙ୍କ ଦାମ୍ପତ୍ୟ ଜୀବନ ସୁଖୀ ରହିବ । ସାଥେ ସାଥେ ବ୍ୟାପାରରେ ସାଥୀ ମଧ୍ୟ ଏହି ଲୋକଙ୍କୁ କରିବା ଦରକାର । ଆଜୀବିକା କିମ୍ବା ବ୍ୟାପାର ଆଦି କାର୍ଯ୍ୟରେ ଆପଣ କିମ୍ବା ଆପଣଙ୍କ ପତି ଭୌତିକ ବିଳାସମୟ ଉପକରଣ, ବିତ ସମ୍ପତ୍ତି କାର୍ଯ୍ୟ, ଭୂମି ସମ୍ପତ୍ତି, ସଙ୍ଗତ ତଥା ବସ୍ତ୍ର ବ୍ୟବସାୟରେ ରହିବ କିମ୍ବା ଏପରି ବିଭାଗରେ ନିଯୁକ୍ତ ହୋଇପାରେ । ଜ୍ୟୋତିଷ ଏବଂ ତନ୍ତ୍ର ମନ୍ତ୍ର ଆଦିରେ ମଧ୍ୟ ଆପଣଙ୍କ ଶୁଭା ରହିବ । ଏହା ଛଡ଼ା ଆପଣଙ୍କ ପତି ଶିକ୍ଷିତ ବ୍ୟକ୍ତି ଅଟନ୍ତି ତଥା ଅନେକ ପ୍ରକାର କଳାର ଜ୍ଞାନ ତାଙ୍କୁ ରହିବ ସାଥେ ସାଥେ ସେ ବିଶ୍ୱାସନୀୟ ରହିବେ । ଅର୍ଥାତ୍ ଆପଣଙ୍କ ଦାମ୍ପତ୍ୟ ଜୀବନ ସୁଖୀ ରହିବ ।

## ପିତା, ବ୍ୟବସାୟ ଏବଂ ସାମାଜିକ ସ୍ତର

ଆପଣଙ୍କ ଜନ୍ମ ସମୟରେ ଦଶମ ଭାବରେ କୁମ୍ଭ ରାଶି ଉଦିତ ହୋଇ ଥିଲା ଯାହାର ସ୍ୱାମୀ ଶନି ଅଟେ । ଅର୍ଥାତ ଏହାର ପ୍ରଭାବରେ ଆପଣଙ୍କ ପିତା ଏକ ବୁଦ୍ଧିମାନ ପୁରୁଷ ହେବେ ତଥା ତାଙ୍କର ସ୍ତ୍ରୀ ଶକ୍ତି ମଧ୍ୟ ଉତ୍ତମ ରହିବ । ତାଙ୍କର ଠୋସ ଚର୍ଚ୍ଚ ପାଇଁ ସମସ୍ତ ସାମାଜିକ ଜନ ତାଙ୍କ ପ୍ରତି ପ୍ରଭାବିତ ରହିବେ ତଥା ତାଙ୍କୁ ଯଥୋଚିତ ମାନ ସମ୍ମାନ ପ୍ରଦାନ କରିବେ । ସାଥେ ସାଥେ ସେ ଏକ ସ୍ୱଚ୍ଛବାଦୀ ତଥା ନିସ୍ୱାର୍ଥୀ ପ୍ରକୃତିର ବ୍ୟକ୍ତି ଅଟନ୍ତି । ନୈତିକ ରୂପେ ତାଙ୍କୁ ଯେଉଁ କାର୍ଯ୍ୟ ଭଲ ଲାଗିବ ତାକୁ ହିଁ ସମ୍ପନ୍ନ କରିବେ ।

ବ୍ୟବସାୟ କିମ୍ବା ଆଜୀବିକା ପାଇଁ ଆପଣ କୌଣସି ବିଶ୍ୟାତ କମ୍ପାନୀ କିମ୍ବା ଉଦ୍ୟମରେ କାର୍ଯ୍ୟରତ ହେବେ । ସାଥେ ସାଥେ ଖଣିଜ ପଦାର୍ଥ ଆୟତ୍ତରେ ମଧ୍ୟ ଆପଣଙ୍କ ରୁଚି ରହିବ । ଏହା ଛଡ଼ା ଭବନ ନିର୍ମାଣ, ମେକାନିକାଲ, ଇଞ୍ଜାନିୟରିଙ୍ଗ, ତାମ୍ବା କିମ୍ବା ଷିଲ୍ ସମ୍ବନ୍ଧି ବ୍ୟାପାର କିମ୍ବା କାର୍ଯ୍ୟ କ୍ଷେତ୍ରରେ ମଧ୍ୟ ଆପଣଙ୍କ ସମ୍ବନ୍ଧ ରହିବ । ଆଧୁନିକ, ଭୌତିକ ଉପକରଣ ସମ୍ବନ୍ଧିତ ବ୍ୟାପାରରେ ମଧ୍ୟ ଆପଣଙ୍କ ରୁଚି ରହିବ ତଥା ଏଥିରେ ପ୍ରଚୁର ମାତ୍ରାରେ ଲାଭ ଏବଂ ଉନ୍ନତି ପ୍ରାପ୍ତ ହେବ । ଆପଣ ପୁଞ୍ଜୀ ନିବେଶରେ ମଧ୍ୟ ଲାଭ ଅର୍ଜିତ କରିବେ । ଲଟେରୀ କିମ୍ବା ଡୁଆ ଆଦିରେ ବୁଧ ଦଶାରେ ଆପଣ ଲାଭାର୍ଜିତ କରିପାରନ୍ତି ।

ଆପଣ ଅବସରନୁକୂଳେ ରାଜନୀତିରେ ମଧ୍ୟ ପ୍ରବେଶ କରିବେ ତଥା ଏହି କ୍ଷେତ୍ରରେ ଆପଣଙ୍କୁ ନ୍ୟୁନାଧିକ ସଫଳତା ଅର୍ଜିତ ହୋଇପାରେ । ସାଥେ ସାଥେ ସରକାର ଠାରୁ ମଧ୍ୟ ସମୟ ସମୟରେ ଇଚ୍ଛିତ ଲାଭ ଏବଂ ସହଯୋଗ ଅର୍ଜିତ କରିବେ । ଏହା ଛଡ଼ା ଆପଣ ଏକ କାର୍ଯ୍ୟ ଶୀଳ, ଚଢ଼ଚଢ଼ ମହିଳା ହେବେ ତଥା ଧର୍ମ ଉପରେ ଶ୍ରଦ୍ଧା ଅଳ୍ପ ମାତ୍ରାରେ ହିଁ କରିବେ । ସାଥେ ସାଥେ ବେଳେ ବେଳେ ଶତ୍ରୁଙ୍କ ମଧ୍ୟ ପ୍ରବଳତା ରହିବ ।

## ପଲ୍ଲୀଦେଶ - 2026

ଏହି ବର୍ଷ ବୃହସ୍ପତି ଆପଣଙ୍କର ଜନ୍ମପତ୍ରିକାର ଚତୁର୍ଥ ଘରେ ଅବସ୍ଥାନ କରିବା ଯୋଗୁ ଏହି ବର୍ଷ ଆପଣଙ୍କର ଶୁଭ, ଆପଣ ଭଲ ସ୍ୱାସ୍ଥ୍ୟ ଏବଂ ମାନସିକ ଶାନ୍ତି ଅନୁଭବ କରିବେ । ଦଶା ଆପଣଙ୍କର ପକ୍ଷେ ଲାଭଦାୟକ, କିନ୍ତୁ ଅନ୍ୟ ଅବସ୍ଥାରେ ବିରୋଧ ଥିବାରୁ କିଛିକାଶ ପଲ୍ଲୀପ୍ରଦାନ କରିବେ । ଯେଉଁମାନେ ସୁକର୍ମୀ ତାଙ୍କର ନିଜ ଇଚ୍ଛାରେ ଲାଭ, ନିଜ ବ୍ୟବସାୟ ପ୍ରଭୃତି କର୍ମରେ ସଫଳତା ଲାଭ କରିବେ । ଆପଣଙ୍କର ସହକର୍ମୀ ଆପଣଙ୍କର ପ୍ରଶଂସା ଏବଂ ଆଦର କରିବେ । ଆପଣଙ୍କର ବିଭିନ୍ନ ଉପାୟରେ ଆୟ ବା ଧନବୃଦ୍ଧି ହେବ ଏବଂ ଆପଣଙ୍କର ଆର୍ଥିକ ଅବସ୍ଥା ମଜବୁତ ରହିବ । ଆପଣ ଜମି, ସମ୍ପତ୍ତି ଏବଂ ଯାନବାହନ କ୍ରୟ କରିପାରିବେ । ଆପଣଙ୍କର ପାରିବାରିକ ଜୀବନରେ ଶାନ୍ତି ଏବଂ ପରସ୍ପର ସଦସ୍ୟ ମଧ୍ୟରେ ବୁଝାବଣାର ସାହାଯ୍ୟ ରହିବ । ଆପଣଙ୍କର ଦୀର୍ଘ ଆକାଂକ୍ଷିତ ସ୍ୱପ୍ନ ପଲ୍ଲୀପ୍ରଦ ହେବ । ମା ଠାରୁ ଆପଣ ଲାଭବାନ ହେବେ ।

ଏହି ବର୍ଷ ଶନି ଦ୍ୱାଦଶ ଘରେ ଅବସ୍ଥାନ କରିବା ଯୋଗୁ ଆପଣଙ୍କର ପକ୍ଷେ ଶୁଭ ହୋଇ ନ ପାରେ । ଏହାର ଫଳରେ ବିଦେଶ ଭ୍ରମଣ ହେବ । ଆପଣ ବିରାଟ ଯୋଜନା କରି ପାରନ୍ତି କିନ୍ତୁ ଏହି ସମୟରେ ଆପଣ ସଂଘର୍ଷରତ ରହିବେ । ଆପଣଙ୍କର ଅନ୍ୟର ସହିତ ସାମାନ୍ୟ ବାଦ ବିବାଦ ହୋଇ ପାରେ । ଆପଣ ଛୋଟମୋଟ ରୋଗରେ ଆକ୍ରାନ୍ତ ହୋଇ ପାରନ୍ତି । ଆପଣଙ୍କର ସ୍ତ୍ରୀ ଓ ବନ୍ଧୁ ବାନ୍ଧବ ମାନେ ବିଶେଷ କରି ସାହାଯ୍ୟ କରିବେ ନାହିଁ । ଆପଣ ଅତିରିକ୍ତ ଅର୍ଥ ବ୍ୟୟକୁ ସଂଯତ କରି ରହିବେ । ଆର୍ଥିକ ସମସ୍ୟାର ସମ୍ମୁଖୀନ ହୋଇପାରେ । ଏହାକୁ ଦମନ କରିବା ଲାଗି ଶନିର ସାଢ଼େସାତି ଦଶର ପୂଜା ଓ ଉପବାସ କରିବାକୁ ପଡ଼ିବ ।

ଏହି ବର୍ଷ ରାହୁ ଏକାଦଶ ଘରେ ଏବଂ କେତୁ ପଞ୍ଚମ ଘରେ ଅବସ୍ଥାନ କରିବା ଯୋଗୁ ଆପଣଙ୍କର ପକ୍ଷେ ଏହି ସମୟ ଶୁଭ କିନ୍ତୁ ଆପଣଙ୍କର ସନ୍ତାନ ଯୋଗୁ ଚିନ୍ତିତ ରହିବେ । କର୍ମଯୋଗି ବ୍ୟକ୍ତି ମାନେ ତାଙ୍କର କର୍ମ କ୍ଷେତ୍ରରେ ଆକାଂକ୍ଷିତ ସଫଳ ପାଇବେ । ଉନ୍ନତ ଯୋଗ ଅଛି । ଆପଣଙ୍କର ଅବସ୍ଥାର ଉଚ୍ଚତର ଉନ୍ନତି ଘଟିବ , ଏହା ଯୋଗୁ ଚତୁଃପାର୍ଶ୍ୱ ଲୋକଙ୍କ ସହିତ ପଞ୍ଚାବ ପଡ଼ିବ । ଆପଣଙ୍କର ଆୟ ବୃଦ୍ଧି ହେବ । ସୁତରାଂ ଆପଣଙ୍କର ଆର୍ଥିକ ଅବସ୍ଥା ମଜବୁତ ହେବ କିନ୍ତୁ ଆପଣ ଚିନ୍ତିତ ଏବଂ ସଙ୍କ୍ରୋଧିତ ହେବେ ।

କେତୁ କୀ ମହାଦଶା ମେ ଗୁରୁ କା ଅନ୍ତର ୨୨/୦୨/୨୦୨୬ କୋ ସମାପ୍ତ ହୋଗା । ଉସକେ ବାଦ ଶନି କା ଅନ୍ତର ପ୍ରାରମ୍ଭ ହୋଗା । ଗୁରୁ ଦ୍ୱିତୀୟ ଭାବ ମେ ମିଥୁନ ରାଶି ମେ ଛିତ ହେଁ ଜବକି ଶନି ଏକାଦଶ ଭାବ ମେ ମୀନ ରାଶି ମେ ଛିତ ହେଁ ।

ଏହି ସମୟ ଆପଣଙ୍କ ପାଇଁ ବିଶେଷ ଭଲ ରହିବ ନାହିଁ । ଏହି ସମୟରେ ଲାଭ ଏବଂ ଉନ୍ନତି ର ମାର୍ଗ ଅବରୁଦ୍ଧ ରହିବ । ତଥା ସୁ ଅବସର ର ନ୍ୟୁନତା ରହିବ । ପାରିବାରିକ ସୁଖ ଶାନ୍ତି ମଧ୍ୟ ଭଲ ରହିବ ନାହିଁ । ତଥା ସଦସ୍ୟ ଙ୍କ ପରସ୍ପର ମଧ୍ୟ ରେ ମନ ମୁଗାବ ରହିବ ଏବଂ ଆପଣଙ୍କୁ ମଧ୍ୟ ତାଙ୍କ ଠାରୁ ବିଶେଷ ସହଯୋଗ ମିଳିବ ନାହିଁ । ବ୍ୟାପାର ପାଇଁ ସମୟ ପ୍ରତିକୂଳ ରହିବ । ତଥା ହାନି ର ସମ୍ଭାବନା ରହିବ । ଡାକିରୀ ରେ ପଦ ଉନ୍ନତି ସମ୍ଭାବିତ ବିଳମ୍ବ ହେବ । ତଥା ଅଧିକାରୀ ବର୍ଗ ଙ୍କ ସହ ସମ୍ବନ୍ଧ ରେ ତନାବ ରହିବ । ଆର୍ଥିକ ଛିତି ମଧ୍ୟ ଅସ୍ଥିର ରହିବ । ତଥା ଲାଭ ମାର୍ଗ ଅବରୁଦ୍ଧ ରହିବ । ଯାହା ଦ୍ୱାରା ବେଳେ ବେଳେ ଆର୍ଥିକ ଅସୁବିଧା ର ସାମନା କରିବା କୁ ପଡ଼ିବ । ଏହା କୁ ଛାଡ଼ି ସାମାଜିକ ମାନ ସମ୍ମାନ ରେ ମଧ୍ୟ ନ୍ୟୁନତା ରହିବ । ଅର୍ଥାତ ଏପରି ସମୟ କୁ ଧର୍ଯ୍ୟ ପୂର୍ବକ ବ୍ୟତୀତ କରିବା ଦରକାର ।

ଏହି ସମୟ ଆପଣଙ୍କ ପାଇଁ ଭଲ ରହିବ ନାହିଁ । ଏହି ସମୟରେ ଆପଣଙ୍କ ଆକାଂକ୍ଷା ତଥା ଇଚ୍ଛା ଅପୂର୍ଣ୍ଣ ରହିବ ଏବଂ ବ୍ୟାପାର ରେ ମଧ୍ୟ ସମସ୍ୟ ତଥା ବ୍ୟବଧାନ ର ସାମନା କରିବା କୁ ପଡ଼ିବ । ସାଥେ ସାଥେ ପ୍ରଭାବଶାଳୀ ଲୋକ ଙ୍କ ସହ ଆପଣଙ୍କ ସମ୍ପର୍କ ସ୍ଥାପିତ ହେବ ନାହିଁ । ଆର୍ଥିକ ଦୃଷ୍ଟି ରେ ଛିତି ରେ ଅସ୍ଥିରତା ରହିବ । ତଥା ଆୟ ସ୍ରୋତ ରେ ଅଭାବ ର କାରଣ ଆପଣଙ୍କୁ ବେଳେ ବେଳେ ଆର୍ଥିକ ଅସୁବିଧା ର ସାମନା କରିବା କୁ ପଡ଼ିବ । ଦୂର ସମୀପ ର ତୀର୍ଥ ଯାତ୍ରା ଦ୍ୱାରା ମଧ୍ୟ କୌଣସି ଲାଭ ହେବ ନାହିଁ ତଥା ମାନସିକ ତନାବ ରହିବ । ସାଥେ ସାଥେ ଧର୍ମ ଏବଂ ଦର୍ଶନ ର ପ୍ରତି ଆପଣଙ୍କ ଅରୁଚି ରହିବ । ତଥା ତୀର୍ଥ ଯାତ୍ରା କୁ ମଧ୍ୟ ଅପେକ୍ଷା କରିବେ । ପାରିବାରିକ ବାତାବରଣ ରେ ଅସହଯୋଗ ଏବଂ ବେ ମନସ୍ୟ ର ଭାବ ରହିବ । କିନ୍ତୁ ଶତ୍ରୁ ବର୍ଗ ଙ୍କ ଠାରୁ ଆପଣ ନିଃଶ୍ଚିତ ରହିବେ ।



## ପଲ୍ଲୀଦେଶ - 2027

ବୃହସ୍ପତି ପଞ୍ଚମ ସ୍ଥାନ ଅତିକ୍ରମ କରିବା ପଳରେ ଏବଂ ଅନ୍ୟାନ୍ୟ ଗ୍ରହଙ୍କ ସୁପ୍ରଭାବ ପଳରେ ଏହି ସମୟଟି ଆପଣଙ୍କ ପକ୍ଷରେ ଅତ୍ୟନ୍ତ ଶୁଭ । କିନ୍ତୁ ଦଶାଧାର ଅଶୁଭ ପ୍ରଭାବ ପଳରେ ଆପଣ କୌଣସି କୌଣସି କ୍ଷେତ୍ରରେ ନେତୃତ୍ୱାତ୍ମକ ପଳ ପାଇବାର ସମ୍ଭାବନା ପ୍ରାୟଶ୍ଚ ଅଛି । କର୍ମଜୀବୀ ମହିଳା ମାନଙ୍କର କର୍ମକ୍ଷେତ୍ରରେ ଏବଂ ବ୍ୟବସାୟ କ୍ଷେତ୍ରରେ ଉନ୍ନତିର ସମ୍ଭାବନା ଅଛି । ଆପଣ ପ୍ରଭାବଶାଳୀ ରାଜନୀତିବିଦଙ୍କ ସଂସ୍ପର୍ଶରେ ଆସି ଉପକାର ହେବେ ଏବଂ ଆର୍ଥିକ ଅବସ୍ଥାର ଉନ୍ନତି ହେବ । ଆପଣ ଅଧ୍ୟୟନ ପ୍ରତି ଅନୁରକ୍ତ ହେବେ । ଏହି ବର୍ଷ ଆପଣଙ୍କର ପୁତ୍ର ସନ୍ତାନ ଲାଭର ସମ୍ଭାବନା ଅଛି ।

ଶନି ଆପଣଙ୍କ ରାଶି ଅତିକ୍ରମ କରିବା ପଳରେ ଏହି ବର୍ଷଟି ଆପଣ ଶାରୀରିକ ଦିଗରୁ ସୁସ୍ଥ ରହିଲେ ମଧ୍ୟ ମାନସିକ ଅସନ୍ତୋଷରେ ଗତି କରିବେ । ବ୍ୟବସାୟ କ୍ଷେତ୍ରରେ ଅତିରିକ୍ତ ପରିଶ୍ରମ ଦ୍ୱାରା ହିଁ ଆପଣ ସାଫଲ୍ୟ ଲାଭ କରିବେ । କର୍ମକ୍ଷେତ୍ରରେ ମଧ୍ୟ ପଦୋନ୍ନତିର ବିଳମ୍ବ ହୋଇପାରେ । ଆପଣଙ୍କ ସ୍ୱାମୀଙ୍କର ଦୈନିକ ସୁସ୍ଥତା ଅସ୍ଥୁର ରହିଲେ ମଧ୍ୟ ଆପଣଙ୍କ ମଧ୍ୟରେ ସୁସମ୍ପର୍କ ଗଢ଼ିରହିବ । ଆପଣଙ୍କର ଗୃହ ପରିବେଶ ଶାନ୍ତିପୂର୍ଣ୍ଣ ରହିବ କିନ୍ତୁ ଆପଣଙ୍କର ଅର୍ଥ ସଙ୍କଟ ଦେଖାଦେବ । ଶନିଙ୍କ ଅଶୁଭ ପ୍ରଭାବରୁ ରକ୍ଷା ପାଇବା ପାଇଁ ଆପଣଙ୍କୁ ଶନିଙ୍କର ଆରାଧନା କରିବାକୁ ପଡ଼ିବ । ଆପଣ ଶନିବାର ଦିନ ମଧ୍ୟ ଆଜ୍ଞାରେ ନୀଳା ପରିଧାନ କଲେ ଶାରୀରିକ ଓ ମାନସିକ ଦିଗରୁ ଶାନ୍ତି ପାଇବେ ।

ଚନ୍ଦ୍ର ବର୍ଷ ଆପଣଙ୍କ ଜାତକରେ ରାହୁ ଓ କେତୁ ଯଥା କ୍ରମେ ଦଶମ ଓ ଚତୁର୍ଥ ଘରେ ପ୍ରବେଶ କରୁଥିବାରୁ ଆପଣଙ୍କ ପାଇଁ ଏହି ବର୍ଷ ସମ୍ପର୍କତା ଏବଂ ଐଶ୍ୱର୍ଯ୍ୟଶାଳୀ ବର୍ଷରୂପେ ପରିଗଣିତ ହେବ । ଆପଣଙ୍କର ସ୍ୱାସ୍ଥ୍ୟ ଠିକ ରହିବ କିନ୍ତୁ ପିତା-ମାତା କିମ୍ବା ଶାଶୁ-ଶଶୁରଙ୍କର ଶରୀର ଖରାପ ହୋଇପାରେ ଏବଂ ଏଥିରେ ଆପଣ ଦୁଃଖିତ ହେବେ ।

କର୍ମରତ ମହିଳା ମାନେ ସେମାନଙ୍କ କର୍ମ କ୍ଷେତ୍ରରେ ଆଶାତୀତ ପଳ ପାଇପାରିବେ । ହଠାତ ଡାକିରି କିମ୍ବା ରାଜନୀତି କ୍ଷେତ୍ରରେ ଉଚ୍ଚ ପାହ୍ୟାକୁ ପଦୋନ୍ନତି ହେବାର ସମ୍ଭାବନା ରହିଛି । ସମାଜରେ ଆପଣଙ୍କର ଯଶ ଓ ସମ୍ମାନ ବଢ଼ିବ । ଆପଣଙ୍କର ଆର୍ଥିକ ଅବସ୍ଥା ମଜବୁତ ପଳରେ ଆପଣ ଯେକୌଣସି ରୋଜଗାର କରିବା ପାଇଁ ସକ୍ଷମ ହୋଇପାରିବେ ।

ଇସ ବର୍ଷ ଶୁକ୍ର କା ମହାଦଶା ପ୍ରାରମ୍ଭ ହୋଇ ରହୁଛି । ଇସସେ ବିଦିତ ହୋଇଛି ଯେ ଇସ ସମୟ ଆପଣଙ୍କ ଜୀବନ ଶୌଲୀ ତଥା କାର୍ଯ୍ୟ କ୍ଷେତ୍ର ମେଂ ପରିବର୍ତ୍ତନ ହୋଇଛି । ଇସ ବର୍ଷ କା ପ୍ରାରମ୍ଭ କେତୁ କା ମହାଦଶା ମେଂ ଶନି କେ ଅନ୍ତର ଅନ୍ତର ସେ ହୋଇ ରହିଛି ଓ ଉ ବର୍ଷ କା ସମାପ୍ତି ଶୁକ୍ର କା ମହାଦଶା ମେଂ ଶୁକ୍ର କେ ପ୍ରଥମ ଅନ୍ତର ସେ ହୋଇଛି । ଆପଣଙ୍କ ଜନ୍ମକୁଣ୍ଡଳୀ ମେଂ ମହାଦଶା କା ସ୍ୱାମୀ ଦଶମ ଭାବ ମେଂ କୁମ୍ଭ ରାଶି ମେଂ ସ୍ଥିତ ହେବେ ।

ଏହି ସମୟ ଆପଣଙ୍କ ପାଇଁ ଅନୁକୂଳ ରହିବ ନାହିଁ । ଏହି ସମୟ ରେ ଆପଣଙ୍କ କୌଣସି ମଧ୍ୟ ଯୋଜନା ପୂର୍ଣ୍ଣ ହେବ ନାହିଁ । ତଥା ବ୍ୟାପାର ରେ ମଧ୍ୟ ସମସ୍ୟା ତଥା ବ୍ୟବଧାନ ର ସାମନା କରିବା କୁ ପଡ଼ିବ । ସାଥେ ସାଥେ କୌଣସି ନବୀନ ଯୋଜନା କିମ୍ବା କାର୍ଯ୍ୟ ପ୍ରାରମ୍ଭ ହେବ ନାହିଁ । ଯଦି ଡାକିରୀ ରେ ଥାନ୍ତି ତାହା ହେଲେ କାର୍ଯ୍ୟ ସ୍ତର ରେ ତଥା ପଦ ଉନ୍ନତି ରେ ବ୍ୟବଧାନ ଆସିବ । ସାଥେ ସାଥେ ଅଧିକାରୀ ବର୍ଗ ଙ୍କ ସହ ସମ୍ପର୍କ ରେ ତନାବ ରହିବ । ଆର୍ଥିକ ସ୍ଥିତି ରେ ମଧ୍ୟ ଅସ୍ଥିରତା ରହିବ ତଥା ଆୟ ସ୍ରୋତ ରେ ଅଭାବ ର କାରଣ ଆପଣଙ୍କୁ ସମୟ ସମୟ ରେ ଆର୍ଥିକ ଅସୁବିଧା ର ସାମନା କରିବା କୁ ପଡ଼ିବ । ଏହା କୁ ଛାଡ଼ି ପରିବାର ରେ ବିବାହ ଅଥବା ଛୁଆ ଙ୍କ ଜନ୍ମ ଦ୍ୱାରା ସଦସ୍ୟ ଙ୍କ ସଂଖ୍ୟା ରେ ବୃଦ୍ଧି ହୋଇ ପାରେ । ଅର୍ଥାତ ଧର୍ଯ୍ୟ ପୂର୍ବକ ସମୟ ର ବ୍ୟତୀତ କରନ୍ତୁ ।

ଏହି ସମୟ ଆପଣଙ୍କ ପାଇଁ ଭଲ ରହିବ ନାହିଁ । ଏହି ସମୟ ରେ ଆପଣଙ୍କ ପାଖରେ ସକ୍ରିୟତା ର ଭାବ ର ଅଭାବ ରହିବ । ତଥା ତର ତର ରେ କାର୍ଯ୍ୟ କୁ ସମ୍ପନ୍ନ କରିବେ । ଯାହା ଦ୍ୱାରା ଆପଣଙ୍କୁ ବାଞ୍ଛିତ ପରିଣାମ ର ପ୍ରାପ୍ତି ହେବ ନାହିଁ । ବ୍ୟାପାର ପାଇଁ ମଧ୍ୟ ସମୟ ଅନୁକୂଳ ରହିବ ନାହିଁ । ତଥା ଅନାବଶ୍ୟକ ସମସ୍ୟା ର ସାମନା କରିବା କୁ ପଡ଼ିବ । ଯଦି ଡାକିରୀ ରେ ଥାନ୍ତି ତାହା ହେଲେ ପଦ ଉନ୍ନତି ସମ୍ପନ୍ନି ବିଳମ୍ବ ଏବଂ ବ୍ୟବଧାନ ହେବ । ତଥା ଅଧିକାରୀ ବର୍ଗ ଙ୍କ ସହ ସମ୍ପର୍କ ରେ ତନାବ ର କାରଣ ମଧ୍ୟ ସମସ୍ୟା ର ସାମନା କରିବା କୁ ପଡ଼ିବ । ଆର୍ଥିକ ଦୃଷ୍ଟି ରେ ମଧ୍ୟ ସମୟ ଭଲ ରହିବ ନାହିଁ । ତଥା ଆୟ ସ୍ରୋତ ରେ ଅଭାବ ର କାରଣ ଆପଣଙ୍କୁ

ଆର୍ଥିକ ଅସୁବିଧା ର ସାମନା କରିବା କୁ ପଡ଼ିବ । ପରିବାର ରେ ସଦସ୍ୟ ଜ୍ଞ ମଧ୍ୟ ବିଶେଷ ସହଯୋଗ ମିଳିବ ନାହିଁ । ତଥା ପରସ୍ପର ମଧ୍ୟ ରେ ମତଭେଦ ର କାରଣ ପାରିବାରିକ ଅଶାନ୍ତି ରହିବ । କିନ୍ତୁ ମାନ ପ୍ରତିଷ୍ଠା ବଳୀ ରହିବ । ଅର୍ଥାତ ଧର୍ଯ୍ୟ ପୂର୍ବକ ନିଜର ସମସ୍ତ ବ୍ୟତୀତ କରନ୍ତୁ ।



## ଫଳାଦେଶ - 2028

ବୃହସ୍ପତି ପଞ୍ଚମ ସ୍ଥାନ ଅତିକ୍ରମ କରିବା ଫଳରେ ଏବଂ ଅନ୍ୟାନ୍ୟ ଗ୍ରହଙ୍କ ସୁପ୍ରଭାବ ଫଳରେ ଏହି ସମୟଟି ଆପଣଙ୍କ ପକ୍ଷରେ ଅତ୍ୟନ୍ତ ଶୁଭ । କିନ୍ତୁ ଦଶାଧାର ଅଶୁଭ ପ୍ରଭାବ ଫଳରେ ଆପଣ କୌଣସି କୌଣସି କ୍ଷେତ୍ରରେ ନେତୃତ୍ୱାତ୍ମକ ଫଳ ପାଇବାର ସମ୍ଭାବନା ପ୍ରାୟଶ୍ଚ ଅଛି । କର୍ମଜୀବୀ ମହିଳା ମାନଙ୍କର କର୍ମକ୍ଷେତ୍ରରେ ଏବଂ ବ୍ୟବସାୟ କ୍ଷେତ୍ରରେ ଉନ୍ନତିର ସମ୍ଭାବନା ଅଛି । ଆପଣ ପ୍ରଭାବଶାଳୀ ରାଜନୀତିବିଦଙ୍କ ସଂସ୍ପର୍ଶରେ ଆସି ଉପକାର ହେବେ ଏବଂ ଆର୍ଥିକ ଅବସ୍ଥାର ଉନ୍ନତି ହେବ । ଆପଣ ଅଧ୍ୟୟନ ପ୍ରତି ଅନୁରକ୍ତ ହେବେ । ଏହି ବର୍ଷ ଆପଣଙ୍କର ପୁତ୍ର ସନ୍ତାନ ଲାଭର ସମ୍ଭାବନା ଅଛି ।

ଶନି ଆପଣଙ୍କ ରାଶି ଅତିକ୍ରମ କରିବା ଫଳରେ ଏହି ବର୍ଷଟି ଆପଣ ଶାରୀରିକ ଦିଗରୁ ସୁସ୍ଥ ରହିଲେ ମଧ୍ୟ ମାନସିକ ଅସନ୍ତୋଷରେ ଗତି କରିବେ । ବ୍ୟବସାୟ କ୍ଷେତ୍ରରେ ଅତିରିକ୍ତ ପରିଶ୍ରମ ଦ୍ୱାରା ହିଁ ଆପଣ ସାଫଲ୍ୟ ଲାଭ କରିବେ । କର୍ମକ୍ଷେତ୍ରରେ ମଧ୍ୟ ପଦୋନ୍ନତିର ବିଳମ୍ବ ହୋଇପାରେ । ଆପଣଙ୍କ ସ୍ୱାମୀଙ୍କର ଦୈନିକ ସୁସ୍ଥତା ଅସ୍ଥୁନ ରହିଲେ ମଧ୍ୟ ଆପଣଙ୍କ ମଧ୍ୟରେ ସୁସମ୍ପର୍କ ଗଢ଼ିଉଠିବ । ଆପଣଙ୍କର ଗୃହ ପରିବେଶ ଶାନ୍ତିପୂର୍ଣ୍ଣ ରହିବ କିନ୍ତୁ ଆପଣଙ୍କର ଅର୍ଥ ସଙ୍କଟ ଦେଖାଦେବ । ଶନିଙ୍କ ଅଶୁଭ ପ୍ରଭାବରୁ ରକ୍ଷା ପାଇବା ପାଇଁ ଆପଣଙ୍କୁ ଶନିଙ୍କର ଆରାଧନା କରିବାକୁ ପଡ଼ିବ । ଆପଣ ଶନିବାର ଦିନ ମଧ୍ୟ ଆଜ୍ଞାନରେ ନୀଳା ପରିଧାନ କଲେ ଶାରୀରିକ ଓ ମାନସିକ ଦିଗରୁ ଶାନ୍ତି ପାଇବେ ।

ଆପଣଙ୍କ ଜାତକର ନବମ ସ୍ଥାନରେ ରାହୁର ଅବସ୍ଥାନ ଓ ତୃତୀୟ ଘରେ କେତୁର ଅବସ୍ଥାନ ସୁଚିତ କରାଏ ଯେ ଆପଣ ଏହି ବର୍ଷ ମିଶ୍ର ଫଳ ପାଇବେ । ଆପଣ ଧର୍ମରେ ପ୍ରବଳ ବିଶ୍ୱାସ ରଖିବେ । କାର୍ଯ୍ୟ କ୍ଷେତ୍ରରେ ବହୁବିଧ କ୍ଷେତ୍ରରୁ ବାଧା ଉପୁଜିପାରେ । ଏହି ବର୍ଷ ଭାଗ୍ୟ ଆପଣଙ୍କ ସପକ୍ଷରେ ଯାଉ ନାହିଁ ତେଣୁ ଆପଣଙ୍କର ସଜାଗତା ଓ ନିଷ୍ଠା ଆପଣଙ୍କର ପ୍ରୀତି ସାଥୀ ହେବେ ଏଥିରେ ସନ୍ଦେହ ନାହିଁ । ଶାରୀରିକ ସ୍ୱାସ୍ଥ୍ୟ ମଧ୍ୟମ ଧରଣର ହେବ । ପାରିବାରିକ ସମସ୍ୟାକୁ ନେଇ ଆପଣ ବ୍ୟସ୍ତ ହେବେ । କେତୁର ପ୍ରଭାବ ହେତୁ ଆପଣଙ୍କର ସାଙ୍ଗ ସାଥୀ, ପ୍ରୀୟଜନ ଓ ପ୍ରତିବେଶୀ ମାନେ ଆପଣଙ୍କୁ ଖାତିର କରିବେ । ବରାବର ବିଭିନ୍ନ ଦିଗରୁ ଆୟ ହେବ । ଫଳରେ ଆର୍ଥିକ ଅବସ୍ଥା ମଜବୁତ ହେବ । ସଫଳତା ଆସି ଆପଣଙ୍କର ପାଦ ସ୍ପର୍ଶ କରିବ ।

ମହାଦଶା ଏବଂ ଅର୍ଦ୍ଧଦଶା ସ୍ୱାମୀ ଦଶମ ଭାବ ମେଂ କୁମ୍ଭ ରାଶି ମେଂ ଛିଡ଼ ହେଁ ।

## ଫଳାଦେଶ - 2029

ବୃହସ୍ପତିର ଷଷ୍ଠ ଗୃହରେ ଉପସ୍ଥିତି ସାଧାରଣତ ଶୁଭ ଫଳଦାୟକ ହେବ । ଶାରୀରିକ ଓ ମାନସିକ ଶାନ୍ତି ମିଳିବ । ଅନ୍ୟାନ୍ୟ ଗ୍ରହ ଦଶାଗୁଡ଼ିକ ମଧ୍ୟ ଆପଣଙ୍କୁ ଶୁଭଫଳ ପ୍ରଦାନ କରିବାରୋ ସାହାଯ୍ୟ କରିବେ । ଆପଣଙ୍କୁ ଶାରୀରିକ ଓ ମାନସିକ ଶାନ୍ତି ମିଳିବ ।

ଗୁରୁଭୃପୁଣ୍ୟ କାର୍ଯ୍ୟ ଗୁଡ଼ିକ ଆଗ୍ରହର ସହିତ ସମ୍ପୂର୍ଣ୍ଣ କରିପାରିବେ । ଅର୍ଥବ୍ୟୟ ହେବ । ବହୁବିଧ କ୍ଷେତ୍ରରୁ ଆୟ ମିଳିବ ଯାହାକି ଆପଣଙ୍କୁ ମାନସିକ ଦୁଃଖରୁ ମୁକ୍ତି କରାଇବ ।

ଶନି ଆପଣଙ୍କ ରାଶି ଅତିକ୍ରମ କରିବା ଫଳରେ ଏହି ବର୍ଷଟି ଆପଣ ଶାରୀରିକ ଦିଗରୁ ସୁସ୍ଥ ରହିଲେ ମଧ୍ୟ ମାନସିକ ଅସନ୍ତୋଷରେ ଗତି କରିବେ । ବ୍ୟବସାୟ କ୍ଷେତ୍ରରେ ଅତିରିକ୍ତ ପରିଶ୍ରମ ଦ୍ଵାରା ହିଁ ଆପଣ ସାଫଲ୍ୟ ଲାଭ କରିବେ । କର୍ମକ୍ଷେତ୍ରରେ ମଧ୍ୟ ପଦୋନ୍ନତିର ବିଳମ୍ବ ହୋଇପାରେ । ଆପଣଙ୍କ ସ୍ଵାମୀଙ୍କର ଦୈହିକ ସୁସ୍ଥତା ଅସ୍ଵାସ୍ଥ ରହିଲେ ମଧ୍ୟ ଆପଣଙ୍କ ମଧ୍ୟରେ ସୁସମ୍ପର୍କ ଗଢ଼ିଉଠିବ । ଆପଣଙ୍କର ଗୃହ ପରିବେଶ ଶାନ୍ତିପୁର୍ଣ୍ଣ ରହିବ କିନ୍ତୁ ଆପଣଙ୍କର ଅର୍ଥ ସଙ୍କଟ ଦେଖାଦେବ । ଶନିଙ୍କ ଅଶୁଭ ପ୍ରଭାବରୁ ରକ୍ଷା ପାଇବା ପାଇଁ ଆପଣଙ୍କୁ ଶନିଙ୍କର ଆରାଧନା କରିବାକୁ ପଡ଼ିବ । ଆପଣ ଶନିବାର ଦିନ ମଧ୍ୟ ଆଜ୍ଞାରେ ନୀଳା ପରିଧାନ କଲେ ଶାରୀରିକ ଓ ମାନସିକ ଦିଗରୁ ଶାନ୍ତି ପାଇବେ ।

ଆପଣଙ୍କ ଜାତକର ନବମ ସ୍ଥାନରେ ରାହୁର ଅବସ୍ଥାନ ଓ ତୃତୀୟ ଘରେ କେତୁର ଅବସ୍ଥାନ ସୂଚିତ କରାଏ ଯେ ଆପଣ ଏହି ବର୍ଷ ମିଶ୍ର ଫଳ ପାଇବେ । ଆପଣ ଧର୍ମରେ ପ୍ରବଳ ବିଶ୍ଵାସ ରଖିବେ । କାର୍ଯ୍ୟ କ୍ଷେତ୍ରରେ ବହୁବିଧ କ୍ଷେତ୍ରରୁ ବାଧା ଉପୁଜିପାରେ । ଏହି ବର୍ଷ ଭାଗ୍ୟ ଆପଣଙ୍କ ସପକ୍ଷରେ ଯାଉ ନାହିଁ ତେଣୁ ଆପଣଙ୍କର ସଚ୍ଚୋଟତା ଓ ନିଷ୍ଠା ଆପଣଙ୍କର ପ୍ରୀୟ ସାଥୀ ହେବେ ଏଥିରେ ସନ୍ଦେହ ନାହିଁ । ଶାରୀରିକ ସ୍ଵାସ୍ଥ୍ୟ ମଧ୍ୟମ ଧରଣର ହେବ । ପାରିବାରିକ ସମସ୍ୟାକୁ ନେଇ ଆପଣ ବ୍ୟଥିତ ହେବେ । କେତୁର ପ୍ରଭାବ ହେତୁ ଆପଣଙ୍କର ସାଙ୍ଗ ସାଥୀ, ପ୍ରୀୟଜନ ଓ ପ୍ରତିବେଶୀ ମାନେ ଆପଣଙ୍କୁ ଖାତିର କରିବେ । ବରାବର ବିଭିନ୍ନ ଦିଗରୁ ଆୟ ହେବ । ଫଳରେ ଆର୍ଥିକ ଅବସ୍ଥା ମଜବୁତ ହେବ । ସଫଳତା ଆସି ଆପଣଙ୍କର ପାଦ ଘର୍ଷଣ କରିବ ।

ମହାଦଶା ଏବଂ ଅର୍ଦ୍ଧଦଶା ସ୍ଵାମୀ ଦଶମ ଭାବ ମେଂ କୁମ୍ଭ ରାଶି ମେଂ ସ୍ଥିତ ହେଂ ।

## ଫଳାଦେଶ - 2030

ଜାତକରେ ବୃହସ୍ପତିର ସପ୍ତମ ଘରେ ପ୍ରବେଶ ଆପଣଙ୍କ ପାଇଁ ଫଳପ୍ରସୁ ଏବଂ ସୌଭାଗ୍ୟଶାଳୀ ବର୍ଷ ରୂପେ ପରିଗଣିତ ହେବ ।

କାର୍ଯ୍ୟରତ ମହିଳାମାନଙ୍କ ପାଇଁ ଏ ବର୍ଷ ଉତ୍ତମ ବର୍ଷ ହେବ । ବିବାହିତ ମହିଳାମାନେ ପ୍ରଚୁର ଆନନ୍ଦ ଉପଭୋଗ କରିପାରିବେ । ସ୍ତ୍ରୀମାନଙ୍କ ଠାରୁ ସ୍ନେହ, ସହାନୁଭୂତି ଓ ଆର୍ଥିକ ସାହାଯ୍ୟ ପାଇଁ ବେଶି ଖୁସି ଅନୁଭବ କରିବେ । ପରିଶେଷରେ ଆପଣ ଖୁସି ଓ ଶାନ୍ତିରେ ଜୀବନ ବିତାଇବେ ।

ସମାଜରେ ଆପଣଙ୍କ ଭାବମୂର୍ତ୍ତି ସମ୍ମାନୀୟ ହେବ । ପ୍ରତିବେଶୀ ମାନେ ଆପଣଙ୍କୁ ଭକ୍ତି ଓ ପ୍ରେମ କରିବେ । ଜ୍ୟେତିଷ ଶା ସ୍ତରେ ମନ ବଳାଇବେ । ଜୀବନରେ କଦାଚିତ ଅର୍ଥାଭାବ ଘଟିବ ନାହିଁ ।

ଶନ ଦ୍ଵିତୀୟ ସ୍ଥାନ ଅତିକ୍ରମ କରିବା ଫଳରେ ଆପଣଙ୍କର ସାଂସାରିକ ଜୀବନ ସୁଖମୟ ହେବ ଏବଂ ପରିବାରର ସଦସ୍ୟମାନଙ୍କ ସହିତ ସୁସମ୍ପର୍କ ବଜାୟ ରହିବ । ବ୍ୟବସାୟିକ କ୍ଷେତ୍ରରେ ଆଶାନ୍ୱରୁପ ସାମ୍ୟ ପାଇବେ ଏବଂ ଅତ୍ୟନ୍ତ ଲାଭବାନ ହେବେ । ଆପଣଙ୍କ ଆର୍ଥିକ ଅବସ୍ଥାନ ଉନ୍ନତି ହେବ । ଶେଷ ଦୁଇ ବା ଅଡ଼ଲେ ବର୍ଷ ଶନିଙ୍କର ଅଶୁଭ ପ୍ରଭାବ ଫଳରେ ଆପଣ ସମସ୍ୟାରେ ପଡ଼ିପାରନ୍ତି । ଏହି ମନ୍ଦ ପ୍ରଭାବରୁ ମୁକ୍ତି ପାଇବା ପାଇଁ ଆପଣଙ୍କୁ ଶନିଙ୍କର ଆରାଧନା କରିବାକୁ ହେବ ।

ଚଳିତ ବର୍ଷ ଆପଣଙ୍କ ଜାତକରେ ରାହୁ ଅକ୍ଷୟ ଏବଂ କେତୁ ଦ୍ଵିତୀୟ ଘରେ ଅବସ୍ଥାନ କରୁଥିବା ଫଳରେ ମାନସିକ ଉତ୍ତେଜନା ଲାଗି ରହିବ ଏବଂ ତା ସତ୍ତ୍ୱେ ଆପଣ ସୁସ୍ଥ ରହିବେ । ପରିବାର ମଧ୍ୟରେ ମନବଳ ଲାଗି ରହିବ ଏବଂ ପାରସ୍ପରିକ ସ୍ନେହ ଓ ସହଯୋଗିତା ଏକ ଅନ୍ୟଙ୍କ ଠାରୁ ଆଶା ନକରିବା ବରଂ ଭଲ ହେବ ।

ବହୁବିଧ କ୍ଷେତ୍ରରୁ ଅର୍ଥ ଆସି ଆପଣଙ୍କ ପାଣ୍ଠିରେ ଜମା ହେବ ଫଳରେ ଆପଣଙ୍କ ଆର୍ଥିକ ଅବସ୍ଥାରେ ଉନ୍ନତି ଦେଖାଦେବ । ଏହି ସମୟରେ ଲଟେରି ଦ୍ଵାରା ଆକସ୍ମିକ ଧନ ପ୍ରାପ୍ତି ହେବ । ଆପଣ ଯଦି କର୍ମରତ ତେବେ କଠିନ ପରିଶ୍ରମ ଦ୍ଵାରା ସଫଳତା ହାସଲ କରିପାରିବେ । ଅଧିକ ସୁଫଳତା ପାଇବା ପାଇଁ ଆପଣ ରାହୁ ଓ କେତୁଙ୍କୁ ମନ୍ତ୍ର ସହିତ ପୂଜା କରନ୍ତୁ । ରିତିମତ ଦାନ ଓ ଧର୍ମ କରନ୍ତୁ ।

ମହାଦଶା ଏବଂ ଅର୍ଦ୍ଧଦଶା ସ୍ତ୍ରୀମାନଙ୍କ ଦ୍ଵାରା ମୋ କୁମ୍ଭ ରାଶି ମୋ ଛିତ ହେବ ।

# ଦଶା ବିଶ୍ଳେଷଣ

ମହାଦଶା :- କେତୁ  
( 22/02/2026 - 26/02/2028 )

କେତୁ ଜ୍ୟେଷ୍ଠ ମହାଦଶା ୨୨/୦୨/୨୦୨୬ ରେ ଆରମ୍ଭ ହେବ ଏବଂ ୨୬/୦୨/୨୦୨୮ ରେ ସମାପ୍ତ ହେବ । ଏହାର ଅବଧି ୭ ବର୍ଷ ଅଟେ । ଆପଣଙ୍କ ଜନ୍ମ କୁଣ୍ଡଳୀ ରେ କେତୁ ଚତୁର୍ଥ ଭାବ ରେ ଛିଡା ଅଛି । କେତୁ ଜ୍ୟେଷ୍ଠ ଦଶମ ଭାବ ଉପରେ ଅଛି । ଏହାର ପୂର୍ବ ରୁ ଆପଣଙ୍କ ରୂପ ର ଦଶା ଚାଲୁ ଥିଲା ଯାହାର ଅବଧି ୧୭ ବର୍ଷ ଅଟେ । ବୁଧ ର କାରଣ ଆପଣଙ୍କ ତୀର୍ଥ ଯାତ୍ରା, ବ୍ୟୟ, ଅବାହୁତ ପରିବର୍ତ୍ତନ, ଏବଂ ନିଜ ସମ୍ପତ୍ତି ଉପରେ ପ୍ରଭାବ ପାଇବ । କେତୁ ଜ୍ୟେଷ୍ଠମାନ ଦଶା ରେ ଆପଣଙ୍କୁ ଖ୍ୟାତି, ପ୍ରଗତି ତଥା ଜମା ବାଡ଼ି ରେ ବୃଦ୍ଧି ହେବ ।

ସ୍ୱାସ୍ଥ୍ୟ : ଏହି ଦଶା କାଳ ରେ ଆପଣଙ୍କ ସ୍ୱାସ୍ଥ୍ୟ ଭଲ ରହିବ । ଆପଣ ଆଶାବାଦୀ ହେବେ ଏବଂ ନିଜ କୁ ସମ୍ପୂର୍ଣ୍ଣବାନ ତଥା ସକ୍ରିୟ ଅନୁଭବ କରିବେ । ରକ୍ତ ପରିବର୍ତ୍ତନ ର କାରଣ ଆପଣଙ୍କୁ ପିତ୍ତ ଦୋଷ, ଭ୍ରୂଣ, ବିଷାଣୁ ଜନ୍ମ ସଂକ୍ରାମକ ରୋଗ, ଛାତୀ ର ସମ୍ପର୍କିତ ରୋଗ, ମୁତ୍ରାଶୟ ର ସମସ୍ୟା, ବୃକ୍କ ଶୋଥ ର ରୋଗ ଆଦି ହୋଇ ପାରେ । କିଛି ସତର୍କତା ଦ୍ୱାରା ଏଥି ରୁ ବହୁତ ରୋଗ ଠାରୁ ମୁକ୍ତି ପାଇବେ ।

ଅର୍ଥ ଏବଂ ବ୍ୟବସାୟ : ଆପଣଙ୍କ ଆର୍ଥିକ ସ୍ଥିତି ଭଲ ହେବ । ଆପଣଙ୍କୁ ମାତା ପିତା ଙ୍କ ଠାରୁ ଲାଭ ହୋଇ ପାରେ । ବ୍ୟବସାୟ ବ୍ୟାପାର ରେ ଭଲ ଆୟ ହେବ, ବିଭିନ୍ନ ପ୍ରୋଜେକ୍ଟ ରେ ଲାଭ ହେବ ଏବଂ ଆପଣ ନିଜର ଲକ୍ଷ୍ୟ ପ୍ରାପ୍ତ କରିବା ରେ ସଫଳ ହେବେ । ଜୀବିକା ଙ୍କ ପାଇଁ ବିପି, କମପ୍ୟୁଟର, ପ୍ରୋପ୍ୟୋଗିକା, ସମ୍ପର୍କ କାର୍ଯ୍ୟ, ପ୍ରବନ୍ଧନ, ଗ୍ରାଫିକ କଳା, ଲଲିତ କଳା, ବିମାନ ବିଜ୍ଞାନ, ଶିକ୍ଷଣ, ପରିଷ୍କୃତ କଳା ଆଦି ର ଚୟନ କରି ପାରନ୍ତି । ସହ, ଚମଡ଼ା, ରବର, ପ୍ଲାଷ୍ଟିକ, ମବେଶୀ, ଅନାଜ, ଫଳ, ସୁନା, ରୂପା, କଳା କୃତି ଆଦି ର ବ୍ୟାପାର ଲାଭ ଦାୟକ ହେବ । ଚାକିରୀ ପେଶା ର ଲୋକ ଙ୍କୁ ଲାଭ, ଆୟ ରେ ବୃଦ୍ଧି, ସମ୍ମାନ ଏବଂ ଲକ୍ଷ୍ୟ ର ପ୍ରାପ୍ତି ହେବ ତଥା ମନୋ କାମନା ପୂରା ହେବ । ବ୍ୟାପାର ବ୍ୟବସାୟ ରେ ଜଡ଼ିତ ଲୋକ ଙ୍କୁ ସାଥୀ ଙ୍କ ଠାରୁ ଲାଭ, କାର୍ଯ୍ୟ ବ୍ୟବସାୟ ରେ ସମ୍ପର୍କିତ ଯାତ୍ରା ଏବଂ ବ୍ୟାପାର ରେ ବୃଦ୍ଧି ହେବ । ଏହି ଦଶା ଆର୍ଥିକ ଏବଂ ବ୍ୟବସାୟିକ ଉନ୍ନତି ପାଇଁ ଉତ୍ତମ ଅଟେ ।

ବାହାନ, ଯାତ୍ରା, ଜମା ବାଡ଼ି : ଶୁକ୍ର ଙ୍କ ଅନ୍ତର ଦଶା କାଳ ରେ ଆପଣଙ୍କୁ ଜୀବନ ର ସୁଖ ମିଳିବ । ଆପଣ ନୂଆ ଗାଡ଼ୀ କିଣି ପାରନ୍ତି । ସମ୍ପତ୍ତି ର ମାମଲା ରେ ଏବଂ ଜମା ବାଡ଼ି ରେ ବୃଦ୍ଧି ହେବ । ବୁଧ ଙ୍କ ଅନ୍ତର ଦଶା ରେ ଆପଣଙ୍କ ଛୋଟ ବଡ଼ ଯାତ୍ରା ହେବ ।

ଶିକ୍ଷା : ଆପଣଙ୍କ ଶିକ୍ଷା ଉତ୍ତମ ହେବ । ଉଚ୍ଚ ଶିକ୍ଷା ପାଇଁ ଆପଣ ବିଦ୍ୟାଳୟ ବଦଳେଇ ପାରନ୍ତି । ଆପଣ ପରୀକ୍ଷା ଏବଂ ପ୍ରତିଯୋଗିତା ରେ ଭଲ କରିବେ । ଔଷଧ, କମପ୍ୟୁଟର ବିଜ୍ଞାନ, ପରିଷ୍କୃତ କଳା, ବିପି, ବ୍ୟାପାର ପ୍ରବନ୍ଧନ, ବେଲିଙ୍ଗ, ହୋଟଲ ପ୍ରବନ୍ଧନ ଆଦି ରେ ଆପଣଙ୍କ ରୁଚି ହେବ । ଆପଣ ସଂଗୃହଣ ଏବଂ ଚତୁର ହେବେ ଏବଂ ନିଜ ଶିକ୍ଷା ରେ ଭଲ କରିବେ ।

ପାରିବାରିକ ଜୀବନ : ପରିବାର ରେ ସଦସ୍ୟ ଙ୍କ ସହ ଆପଣଙ୍କ ସମ୍ପର୍କ ମଧୁର ରହିବ । ଆପଣଙ୍କ ଛୁଆ ଙ୍କୁ ଆପଣଙ୍କ ସହାୟତା ଏବଂ ମାର୍ଗ ଦର୍ଶନ ର ଆବଶ୍ୟକତା ହେବ । ଆପଣଙ୍କ ଜୀବନ ସାଥୀ ଙ୍କୁ ଯଶ ଏବଂ ଖ୍ୟାତି ପ୍ରାପ୍ତ ହେବ ଏବଂ ଜୀବନ ବୃଦ୍ଧି ରେ ପ୍ରଗତି ହେବ । ଆପଣଙ୍କ ପତ୍ନୀ ଙ୍କ ସହ ଆପଣଙ୍କ ସମ୍ପର୍କ ଉତ୍ତମ ରହିବ । ଆପଣଙ୍କ ମାତା ଙ୍କୁ ଯଶ ଏବଂ ଖ୍ୟାତି ର ପ୍ରାପ୍ତି ଏବଂ ଉନ୍ନତି ହେବ । ଆପଣଙ୍କ ତାଙ୍କ ସହିତ କିଛି ମତାନ୍ତର ହୋଇ ପାରେ । ଆପଣଙ୍କ ପିତା ଙ୍କ ଜୀବନ ରେ ପରିବର୍ତ୍ତନ ଏବଂ କିଛି ସ୍ୱାସ୍ଥ୍ୟ ସମସ୍ୟା ସମସ୍ୟା ହେବ । ଆପଣଙ୍କ ଛୋଟ ଭାଇ ଭଉଣୀ ଙ୍କୁ ଲାଭ ମିଳିବ ଏବଂ ଉନ୍ନତି ହେବ କିନ୍ତୁ ବଡ଼ ଙ୍କୁ ବିରୋଧ ଙ୍କ ଠାରୁ ବିଜୟ, ଶଶୁର ଘର ଠାରୁ ସହାୟତା ଏବଂ ପ୍ରତିସ୍ପର୍ଧା ରେ ସଫଳତା ମିଳିବ ।

ଅନ୍ତର ଦଶା : କେତୁ ଜ୍ୟେଷ୍ଠ ମହାଦଶା ରେ କେତୁ ର ଅନ୍ତର ଦଶା କାଳ ରେ ଆପଣଙ୍କୁ ଗୃହ ସୁଖ, ଉତ୍ତମ ଶିକ୍ଷା, ଯଶ



ଆପଣଙ୍କ ଛୋଟ ଯାତ୍ରା ହେବ, ସ୍ୱାସ୍ଥ୍ୟ ଉତ୍ତମ ରହିବ ଏବଂ ନିଜ ସମ୍ପତ୍ତି ଓ ଠାରୁ ସହାୟତା ମିଳିବ କିନ୍ତୁ ଚନ୍ଦ୍ର ଓ ଦଶା ରେ ଲାଭ ଏବଂ ପାରିବାରିକ ଆନନ୍ଦ ମିଳିବ । ମଙ୍ଗଳ ଓ ଅକ୍ତର ଦଶା କାଳ ରେ ସ୍ୱାସ୍ଥ୍ୟ ର ଖରାପ ହେବା, ବିରୋଧ ଏବଂ ସମ୍ପତ୍ତି ଲାଭ ର ସମ୍ଭାବନା ଅଛି । ରାହୁ ଓ କାରଣ କିଛି ସମସ୍ୟା ହୋଇ ପାରେ । ଗୁରୁ ଓ ଅକ୍ତର ଦଶା କାଳ ରେ ଆପଣଙ୍କ ବିବାହ ହେବ, ଜୀବିକା ରେ ପ୍ରଗତି ଏବଂ ସାଥୀ ଓ ଠାରୁ ଲାଭ ମିଳିବ କିନ୍ତୁ ଶନି ଓ ଅକ୍ତର ଦଶା ରେ କିଛି ପରିବର୍ତ୍ତନ, ପିତା ଓ ଠାରୁ ଲାଭ, ତୀର୍ଥ ଯାତ୍ରା ଏବଂ ଆଧ୍ୟାତ୍ମ ରେ ରୁଚି ହେବ । ବୁଧ ଓ ଅକ୍ତର ଦଶା ରେ ଯଶ, ଖ୍ୟାତି, ଉତ୍ତମ ସ୍ୱାସ୍ଥ୍ୟ ଏବଂ ସମୃଦ୍ଧି ର ପ୍ରାପ୍ତି ହେବ ।



**ଅନ୍ତର୍ଦ୍ଦଶା :- କେତୁ - ଶନି  
( 22/02/2026 - 01/03/2027 )**

ଆପଣଙ୍କ ପାଇଁ କେତୁ ଙ୍ ମହାଦଶା ୨୨/୦୨/୨୦୨୬ ରେ ପ୍ରାରମ୍ଭ ହୋଇ ଥିଲା । ଏହି ମହାଦଶା ରେ ସପ୍ତମ ଅକ୍ତର ଦଶା ଶନି ଙ୍ ହେବ । ଯାହାର ଅବଧି ୧ ବର୍ଷ ୯ ଦିନ ହେବ । ଏହି ଅକ୍ତର ଦଶା ୨୨/୦୨/୨୦୨୬ ରେ ପ୍ରାରମ୍ଭ ହୋଇ ୦୧/୦୩/୨୦୨୭ ରେ ସମାପ୍ତ ହେବ । ଅକ୍ତର ଦଶା ସ୍ଵାମୀ ଶନି ଭାଗ୍ୟ ଏବଂ ସେବା ର କାରକ ଅଟେ ।

ଶନି ଆପଣଙ୍କ ଜନ୍ମ ପତ୍ରିକା ରେ ଏକାଦଶ ଭାବ ରେ ଛିଡ଼ ଅଛି । ଏକାଦଶ ଭାବ ମିତ୍ର ଶଶ, ସମାଜ, ଅଭିଳାଷି, ଇଚ୍ଛା ଏବଂ ତାହାର ପୁରଣ, ଉଦ୍ୟମ ରେ ସଫଳତା, ଧନ ଲାଭ, ବଡ଼ ଭାଇ, ଭାଗ୍ୟ ଉଦୟ ର ପ୍ରତିକ ଅଟେ । ଶନି ଶକ୍ତିଶାଳୀ ଗ୍ରହ ଅଟେ । ଏହା କୁ ଅଶୁଭ ମାନା ଯାଇ ଥାଏ, କିନ୍ତୁ ଏହି ଗ୍ରହ ଜାତକ ର ଧର୍ମ ପରୀକ୍ଷା ନେଇ ଥାଏ । ଏହି ଗ୍ରହ ଶୁଭ ଫଳ ଦେବା ରେ ବିଳମ୍ବ କରି ଥାଏ, କିନ୍ତୁ ଫଳ ଅବଶ୍ୟ ମିଳି ଥାଏ । ଏକାଦଶ ଭାବ ରେ ଛିଡ଼ ହୋଇ ଶନି ଆପଣଙ୍କ ଜନ୍ମ ପତ୍ରିକା ର ୧, ୫, ୮ ଭାବ ଉପରେ ବୃଷ୍ଟି ପକେଇ ଥାଏ ଏବଂ ତାଙ୍କର କାରକତ୍ଵ କୁ ପ୍ରଭାବିତ କରି ଥାଏ ।

ଏହି ସମୟ ରେ ଆପଣଙ୍କୁ ବ୍ୟାପାର ରେ ଲାଭ ହେବ, ଅତ୍ୟନ୍ତ ଧନ ଅର୍ଜନ ହୋଇ ପାରେ, ଅତ୍ୟନ୍ତ ସମ୍ପତି ପ୍ରାପ୍ତ ହୋଇ ପାରେ । ଆପଣ ଧନୀ ବନିବେ, ନିଜର ଜମା ହୋଇ ପାରେ, ବାହାନ ସୁଖ ରହିବ । ଆପଣଙ୍କ ପ୍ରଭାବଶାଳୀ ମିତ୍ର ହେବେ ଯାହା ଲାଭକାରୀ ସିଦ୍ଧ ହେବ । ଆୟ ଭଲ ହେବ । ସବୁ କାମ ବନିବ, ଆତ୍ମ ବିଶ୍ଵାସ ବଢ଼ିବ, ଉନ୍ନତ ଏବଂ ପ୍ରସିଦ୍ଧି ର ସଙ୍କେତ ଅଛି । ଜୀବନ ରେ ସୁଖ ରହିବ । ତନ୍ତ୍ର ମନ୍ତ୍ର ପ୍ରତି ଇଚ୍ଛା ହୋଇ ପାରେ ।

ଆପଣଙ୍କ ଜୀବନ ସାଥୀ ଭାଗ୍ୟଶାଳୀ ରହିବେ; ତାଙ୍କୁ ନିବେଶ ଠାରୁ ଲାଭ ହେବ । ଆପଣଙ୍କ ପିତା ଉତ୍ସାହୀ ରହିବେ । ମାତା ଙ୍ ଜୀବନ ରେ କିଛି ପରିବର୍ତ୍ତନ ଆସି ପାରେ । ଆପଣଙ୍କ ଭାଇ ଭଉଣୀ ଙ୍ ପାଇଁ ସଫଳତା, ସମୃଦ୍ଧି, ଆତ୍ମ ବିଶ୍ଵାସ ରେ ବୃଦ୍ଧି ର ସଙ୍କେତ ଅଛି ।

ଆପଣଙ୍କ ସନ୍ତାନ ଙ୍ ସାମୁହିକ ଗତିବିଧି ଠାରୁ ଲାଭ ହେବ । ଯଦି ସେ କାର୍ଯ୍ୟ ରେ ଥାନ୍ତି ତାହା ହେଲେ ବ୍ୟାପାର ରେ ଲାଭ ହେବ, ସାଥୀ ଲାଭକାରୀ ରହିବେ ।

ଆପଣଙ୍କ ସ୍ଵାସ୍ଥ୍ୟ ଉତ୍ତମ ରହିବ । ଶୁଭତ୍ଵ ର ବୃଦ୍ଧି ପାଇଁ ଶନି ମନ୍ତ୍ର ର ଜପ କରନ୍ତୁ ।  
ଓଁ ଶଂ ଶନୈଚ୍ଚରାୟ ନମଃ

**ଅନ୍ତର୍ଦ୍ଦଶା :- କେତୁ - ବୁଧ  
( 01/03/2027 - 26/02/2028 )**

ଆପଣଙ୍କ ପାଇଁ କେତୁ ଙ୍ ମହାଦଶା ୨୨/୦୨/୨୦୨୬ ରେ ପ୍ରାରମ୍ଭ ହୋଇ ଥିଲା । ଏହି ମହାଦଶା ରେ ବୁଧ ଙ୍ ଅକ୍ତର ଦଶା ର ଅବଧି ୧୧ ମାସ ୨୭ ଦିନ ହେବ । ଯାହା ଆପଣଙ୍କ ପାଇଁ ୦୧/୦୩/୨୦୨୭ ରେ ପ୍ରାରମ୍ଭ ହୋଇ ୨୬/୦୨/୨୦୨୮ ରେ ସମାପ୍ତ ହେବ । ଅକ୍ତର ଦଶା ସ୍ଵାମୀ ବୁଧ ବାଣୀ, ବୁଦ୍ଧି, ଲେଖକ ଏବଂ ଚର୍ଚ୍ଚା ଶକ୍ତି ର କାରକ ଅଟେ ।

ବୁଧ ଆପଣଙ୍କ ଜନ୍ମ ପତ୍ରିକା ରେ ଦଶମ ଭାବ ରେ ଛିଡ଼ ଅଛି । ଦଶମ ଭାବ ସମ୍ମାନ, ଜନତା, ରାଜନୀତି, ସଫଳତା, ପଦ ଏବଂ ସୁଖ, ଦୁନିଆଦାରୀ, ଉନ୍ନତି, ନିୟୁକ୍ତି, ଧାର୍ମିକ କାର୍ଯ୍ୟ, ସରକାର ଙ୍ ଠାରୁ ସମ୍ମାନ ଏବଂ ଜସ୍ଵ ର ପ୍ରତିକ ଅଟେ । ଦଶମ ଭାବ ରେ ଛିଡ଼ ହୋଇ ବୁଧ ଆପଣଙ୍କ ଜନ୍ମ ପତ୍ରିକା ର ଚତୁର୍ଥ ଭାବ ଉପରେ ବୃଷ୍ଟି ପକେଇ ଥାଏ ଏବଂ ଚତୁର୍ଥ ଭାବ ର କାରକତ୍ଵ କୁ ପ୍ରଭାବିତ କରି ଥାଏ ।

ଏହି ସମୟ ରେ ଆପଣ ପ୍ରସିଦ୍ଧ ହେବେ । କାର୍ଯ୍ୟ କ୍ଷେତ୍ର ରେ ସଫଳତା ମିଳିବ । ବିଜ୍ଞାନ, ସଞ୍ଚାର ମାଧ୍ୟମ ଏବଂ ବ୍ୟାପାର ରେ ସଫଳ ରହିବେ ।



ମହାଦଶା :- ଶୁକ୍ର  
( 26/02/2028 - 26/02/2048 )

ଶୁକ୍ର ଙ୍ ମହାଦଶା ର ଅବଧି ୨୦ ବର୍ଷ ଅଟେ । ଆପଣଙ୍କ ଜନ୍ମ କୁଣ୍ଡଳୀ ରେ ଏହା ୨୬/୦୨/୨୦୨୮ ରେ ଆରମ୍ଭ ହେବ ଏବଂ ୨୬/୦୨/୨୦୪୮ ରେ ସମାପ୍ତ ହେବ । ଆପଣଙ୍କ ଜନ୍ମ କୁଣ୍ଡଳୀ ରେ ଶୁକ୍ର ଦଶମ ଭାବ ରେ ସ୍ଥିତ ଅଛି । ଏହା ଏକ ଶୁଭ ଗ୍ରହ ଅଟେ ଏବଂ ଭଲ ସ୍ୱାଦ, ସଙ୍ଗୀତ, ନାଟକ, ଇନ୍ଦ୍ରିୟ ସୁଖ ର ପ୍ରତୀକ ଅଟେ । ଯାହାର ସାମାନ୍ୟ ରୂପ ରେ ଦୁଇ ଟି ରାଶି ଥାଏ - ବୃଷ ଏବଂ ତୁଳା । ଏହାର ମୂଳ ତ୍ରିକୋଣ ରାଶି ତୁଳା ଅଟେ । ଏହା ମାନ ରାଶି ରେ ଉଚ୍ଚ ତଥା କନ୍ୟା ରାଶି ରେ ନିମ୍ନ ର ହୋଇ ଥାଏ । ଏହା ବିବାହ ର କାରକ ମଧ୍ୟ ଅଟେ । ଆପଣଙ୍କ ଜନ୍ମ କୁଣ୍ଡଳୀ ରେ ଦଶମ ଭାବ ରେ ସ୍ଥିତ ଶୁକ୍ର ଙ୍ ଚତୁର୍ଥ ଭାବ ଉପରେ ଦୃଷ୍ଟି ଅଛି ଏବଂ ଏହି ଭାବ ଉପରେ ଚାଙ୍ଗର ଶୁଭ ପ୍ରଭାବ ପଡ଼ି ଥାଏ । ଭାବ ଯେଉଁ ଥିରେ ଏହା ସ୍ଥିତ ଅଛି ଅର୍ଥାତ୍ ଦଶମ ଭାବ ସମ୍ମାନ, ପ୍ରତିଷ୍ଠା, ନାମ ଏବଂ ଯଶ, ସଫଳତା ଏବଂ ପ୍ରତିଷ୍ଠା, ଖ୍ୟାତି, ଲକ୍ଷ୍ୟ, ଅଧିକାର, କର୍ତ୍ତବ୍ୟ, ପଦ ଉନ୍ନତି, ଆଧୁନିକତା, ଉଚ୍ଚ ପଦ ତଥା ରାଜକୀୟ ସମ୍ମାନ ଏବଂ ଜ୍ୟେ ର ପ୍ରତୀକ ଅଟେ ।

ସ୍ୱାସ୍ଥ୍ୟ : ମହାଦଶା ସ୍ୱାମୀ ଶୁକ୍ର ଦଶମ ଭାବ ରେ ସ୍ଥିତ ଅଛି ଯେଉଁ ଠାରେ ଆପଣଙ୍କ ଜନ୍ମ କୁଣ୍ଡଳୀ ର ଚତୁର୍ଥ ଭାବ, ଯାହା ପରିବାର ର ଭାବ ଏବଂ ସୁଖ ସ୍ଥାନ କୁ ଏକ କେନ୍ଦ୍ର ରୁ ଅନ୍ୟ କେନ୍ଦ୍ର ଉପରେ ଦୃଷ୍ଟି ଅଛି । ଏହାର ଫଳ ସ୍ୱରୂପ ଆପଣଙ୍କ ଏହି ଦଶା କାଳ ରେ କୌଣସି ସ୍ୱାସ୍ଥ୍ୟ ସମସ୍ୟା ହେବ ନାହିଁ ଏବଂ ଆପଣ ସବୁ ପ୍ରକାର ର ପାରିବାରିକ ଆନନ୍ଦ ଉଠେଇବେ ।

ଅର୍ଥ ଏବଂ ସମ୍ପତ୍ତି : ଶୁକ୍ର ଜୀବନ ଶୈଳି ତଥା ବ୍ୟବସାୟ ର ଦଶମ ଭାବ ରେ ସ୍ଥିତ ଅଛି, ଯାହା ଆପଣଙ୍କୁ ଏହି ଦଶା କାଳ ରେ ଚଳ ତଥା ଅଚଳ ସମ୍ପତ୍ତି ଅର୍ଜିତ କରିବା ର ଅନେକ ଅବସର ପ୍ରଦାନ କରିବ । ଆପଣ ନିଜର ବ୍ୟବସାୟିକ କ୍ଷେତ୍ର ରେ ଭଲ ସ୍ଥିତି ର କାରଣ ସମ୍ମାନ ପ୍ରାପ୍ତ କରିବେ ତଥା ଶୁକ୍ର ଙ୍ ଚତୁର୍ଥ ଭାବ ଉପରେ ଦୃଷ୍ଟି ହେବା ର କାରଣ ଆପଣଙ୍କୁ ନୂଆ ଘର ତଥା ବାହାନ ପ୍ରାପ୍ତ ହେବା ର ସମ୍ଭାବନା ଅଛି ।

ବ୍ୟବସାୟ : ଆପଣ ଯେ କୌଣସି ମଧ୍ୟ ବ୍ୟବସାୟ କରିବେ ସେଥିରେ ସଫଳ ହେବେ । ଆପଣଙ୍କୁ ଆଦର ଏବଂ ପ୍ରତିଷ୍ଠା ମିଳିବ । ଆପଣ ସୁଖୀ ଏବଂ ଚତୁର ହେବେ ଏବଂ ଆପଣଙ୍କୁ ବ୍ୟବସାୟ ର ସିଲ ସିଲ ରେ ତୀର୍ଥ ଯାତ୍ରା ରେ ଲାଭ ହେବ । ଆପଣଙ୍କ ଭାଇ ଭଉଣୀ ଆପଣଙ୍କ ସହାୟତା କରିବେ ।

ପାରିବାରିକ ଜୀବନ : ନିଜର ବ୍ୟବସାୟ ତଥା ବାକିରୀ ପ୍ରତି ସମର୍ପିତ ହେବା ର କାରଣ ଆପଣ ନିଜର ଜୀବନ ସାଥୀ ଙ୍ ଅଜଣା ରେ ଚିରସ୍ଥର କରିବେ ଯାହା ଦ୍ୱାରା ଆପଣଙ୍କ ପରିବାର ରେ ବାଧା ଉତ୍ପନ୍ନ ହୋଇ ପାରେ ଏବଂ ଘର ର ଜୀବନ ନଷ୍ଟ

ହୋଇ ପାରେ ।



ଅନ୍ତର୍ଦ୍ଧଶ :- ଶୁକ୍ର - ଶୁକ୍ର  
( 26/02/2028 - 27/06/2031 )

ଶୁକ୍ର ମହାଦଶା ର ଅବଧି ୨୦ ବର୍ଷ ଅଟେ । ଆପଣଙ୍କ ପାଇଁ ଏହି ମହାଦଶା ୨୬/୦୨/୨୦୨୮ ରେ ପ୍ରାରମ୍ଭ ହୋଇ ୨୬/୦୨/୨୦୪୮ ରେ ସମାପ୍ତ ହେବ । ଏହି ମହାଦଶା ରେ ଶୁକ୍ର ଙ୍କ ଅନ୍ତର ଦଶା ୩ ବର୍ଷ ୪ ମାସ ର ହେବ । ଆପଣଙ୍କ ପାଇଁ ଏହି ଅନ୍ତର ଦଶା ୨୬/୦୨/୨୦୨୮ ରେ ପ୍ରାରମ୍ଭ ହୋଇ ୨୭/୦୬/୨୦୩୧ ରେ ସମାପ୍ତ ହେବ ।

ଶୁକ୍ର ଆପଣଙ୍କ ଜନ୍ମ ପତ୍ରିକା ରେ ଦଶମ ଭାବ ରେ ସ୍ଥିତ ଅଛି । ଦଶମ ଭାବ ସମ୍ମାନ, ଜନତା, ରାଜନୀତି, ସଫଳତା, ପଦ ଏବଂ ସୁଖ, ଦୁନିଆଦାରା, ଉନ୍ନତି, ନିଯୁକ୍ତି, ଧାର୍ମିକ କାର୍ଯ୍ୟ, ସରକାର ଙ୍କ ଠାରୁ ସମ୍ମାନ ଏବଂ ଜ୍ୟେ ର ପ୍ରତିକ ଅଟେ । ଶୁକ୍ର ଶୁଭ ଗ୍ରହ ଅଟେ । ଦଶମ ଭାବ ରେ ସ୍ଥିତ ହୋଇ ଶୁକ୍ର ଆପଣଙ୍କ ଜନ୍ମ ପତ୍ରିକା ର ଚତୁର୍ଥ ଭାବ ଉପରେ ଦୃଷ୍ଟି ପକେଇ ଥାଏ ଏବଂ ଚତୁର୍ଥ ଭାବ ର କାରକତ୍ୱ କୁ ପ୍ରଭାବିତ କରି ଥାଏ ।

ଏହି ସମୟ ରେ ଆପଣଙ୍କ ସମାଜ ରେ ଉଚ୍ଚ ସ୍ଥାନ ହେବ ଏବଂ ପ୍ରଭାବ ବଢ଼ିବ, ପ୍ରସିଦ୍ଧି ମିଳିବ । ଅନେକ ମହିଳା ଆପଣଙ୍କ ଅଧୀନ ରେ କାର୍ଯ୍ୟ କରି ପାରନ୍ତି କିମ୍ବା ଆପଣ ମହିଳା ଙ୍କ ସମ୍ବନ୍ଧିତ ବ୍ୟବସାୟ ଯେପରି ସୌନ୍ଦର୍ଯ୍ୟ-ପ୍ରସାଧନ, ବି୍ୟବୀ ଆଦି ସମ୍ବନ୍ଧିତ ହୋଇ ପାରେ । କୌଣସି ଦେବୀ ଶକ୍ତି ମଧ୍ୟ ପ୍ରାପ୍ତ କରି ପାରନ୍ତି ଯାହାର ବ୍ୟବହାର ଆପଣ ସାବଧାନ ପୂର୍ବକ କରିବେ ।

ଶୁଭତ୍ୱ ର ବୃଦ୍ଧି ଏବଂ କଷ୍ଟ ଠାରୁ ବଞ୍ଚିବା ପାଇଁ ନିମ୍ନ ଉପାୟ କରନ୍ତୁ :

୧. ପିମ୍ପୁଡ଼ି କୁ ଚିନି ଏବଂ ଅଟା ଖାଇବା କୁ ଦିଅନ୍ତୁ ।
୨. କନ୍ୟା ଙ୍କୁ ଖୀର ଖୁଆନ୍ତୁ ।
୩. ଭୋଜନ ରୁ ପ୍ରଥମ ରୁଟି କାଢ଼ି ଗାଈ କୁ ଖାଇବା କୁ ଦିଅନ୍ତୁ ।
୪. ଲକ୍ଷ୍ମୀ ଙ୍କୁ ଉପାସନା କରନ୍ତୁ ।